पीत नहीं की प्रभुवर से

संघ प्रवर्तिनी साध्वी मंजुलाश्री जी

आचार्य श्री रूपचन्द्रजी महाराज

प्रीत नहीं की प्रभुवर से

रचयिता
आचार्य श्री रूपचन्द्रजी महाराज
संघ-प्रवर्तिनी साध्वीश्री मंजुलाश्री जी महाराज

प्रकाशन सहयोग-

- श्रीमान अमर नाथ शकुंतला बहिन गुप्ता के सुपुत्र स्वर्गीय रमेश कुमार सिंगला एवं पौत्र स्वर्गीय वरूण गुप्ता पुत्र श्री विजय कुमार गुप्ता की पुण्य स्मृति में।
- श्री सुधीर चन्द्र जी, रेणु बहिन जैन, मयूर विहार, नई दिल्ली।
- श्री राम निवास जी, हेमंत कुमार जैन, रोहिणी, नई दिल्ली।

प्रीत नहीं की प्रभुवर से

रचयिता : आचार्य श्री रूपचन्द्रजी महाराज
संघ-प्रवर्तिनी साध्वीश्री मंजुलाश्री जी महाराज

प्रकाशक : मानव मंदिर प्रकाशन

चतुर्थ संस्करण : फरवरी, 2009

मूल्य : 99 रूपये मात्र

मुद्रक : राज ग्राफिक्स, 198/37 रमेश मार्किट गढ़ी, नई दिल्ली,
फोन : 9891627155

Preet Nahi Ki Prabhuwar Se by :
Acharya Shri Roopchandraji Maharaj
Sangh Pravartini Shadhwi Shri Manjula Shri Ji Maharaj

प्रस्तुति

आत्मा और परमात्मा से अपने मन को जोड़ने के अनेक अभ्यास/साधन हमारे ऋषि-मुनियों ने हमे बताए हैं। उन सब उपायों में सरलतम साधन है भजन। जिनका मन स्वाध्याय, ध्यान और जप-पाठ में एकाग्र नहीं हो पाता है, भजन-गान में वह अत्यंत सरलता से प्रभु-भक्ति में तल्लीन हो जाता है। इतना ही नहीं, जो तत्व-ज्ञान अनेक ग्रंथों केपारायण से भी नहीं मिल पाता है, वह भजन के दो पदों से हृदयंगम हो जाता है। जो प्रेरणा हजार प्रवचनों से मन को नहीं मोड़ पाती है, वह भजन के दो बोल से मन को संसार से मोड़ देती है। जो सद्भावना और प्रेम-भाईचारा हजार उपदेशों से समाज के दिलों में नहीं जाग पाता है, वह भजन की दो पंक्तियों से पूरे समाज के टूटे दिलों को जोड़ देता है। संक्षेप में कहें तो भजन हमें आत्मा और परमात्मा से जोड़ता है, देश और समाज से जोड़ता है, गहरे ज्ञान और प्रेम-सद्भावना से जोड़ता है और अपने-आप से जोड़ता है।

कुछ ऐसे ही मर्मस्पर्शी और तत्व-स्पर्शी भजनों का संग्रह है 'प्रीत नहीं की प्रभुवर से' पुस्तक में। इन गीतों और भजनों के रचयिता है पूज्य आचार्यश्री रूपचन्द्र जी तथा पूज्या प्रवर्तिनी साध्वीश्री मंजुलाश्री जी महाराज। इन भजनों में प्रभु-भक्ति भी है, जीवन-प्रेरणा भी है, तत्व-दर्शन भी है, सांप्रदायिक सद्भावना भी है और मानवीय मूल्यों की स्थापना के लिए उद्बोधन भी। उदाहरण स्वरूप कैसी हो परमात्मा के प्रति हमारी भक्ति-

हो अचल श्रद्धा-समर्पण, मन-वचन हर कर्म-अर्पण
प्रभु चरण की शरण ले हम भक्ति की गंगा बहाएं।

(पृष्ठ : 1)

श्रद्धा-समर्पण किस परमात्मा के प्रति हो, सैकड़ों देवी-देवता हैं, हर समाज या समुदाय के अपने प्रभु और भगवान हैं, इस स्थिति में हम किसकी आराधना करें, इस के उत्तर में कहा गया-

नाम कोई हो भले या कोई भी आकार हो
ज्योति-चरणों में हमारा नमन सौ-सौ बार हो

(पृष्ठ : 2)

हम भक्ति और आराधना करते समय लगभग नाम और रूप में उलझ जाते हैं। यहाँ यह समझना जरूरी है नाम अलग-अलग होते हुए भी प्रभुता में कोई भेद नहीं है। स्वरूपतः वह परमात्मा अनाम और अरूप है। नाम और रूप-भेद से उसका अभेद-स्वरूप बाधित नहीं होता। इस तथ्य को स्पष्ट करते हुए भजन में कहा गया-

ये नाम न्यारे-न्यारे, भगवान एक ही है,
सब भेद-भाव झूठे, इन्सान एक ही है।
यह धर्म है हमारा, यह धर्म है तुम्हारा,
यह मजहबी लड़ाई, ईमान एक ही है।

(पृष्ठ : 120)

आदमी मानसिक शांति और आशीर्वाद पाने के लिए संतपुरूषों के पास जाता है। इसमें कोई संदेह नहीं धर्म ही शांति का मार्ग है-संति तेसिं पइट्ठाणं-महापुरूषों द्वारा उपदिष्ट धर्म का प्रतिष्ठान शांति ही है। किंतु सचाई यह हैं आदमी के हाथ में धर्म कम आता है, पंथ और संप्रदाय ज्यादा आ जाते है। धर्म रोशनी है, पंथ माटी के दीये हैं। दीपक, मोमबत्ती, बल्ब, मशाल आदि साधन रोशनी को धारण करने के लिए होते हैं। इन साधनों के आकारों में भेद हो सकता है, किंतु रोशनी में नहीं। कहा गया-

रोशनी का कोई भी मजहब नहीं,
मजहबों का इसलिए मतलब नहीं।
पांव फैलाए अंधेरे ने तभी
आग दीपक में रही जब-जब नहीं।

(पृष्ठ : 30)

अवतारों और महामानवों की जन्म-जयंतियाँ, होली-दीवाली आदि अनेक पर्व हम अक्सर मनाते रहते हैं। किंतु असली त्योहार वह होता है जो हमारे दिलों में प्रेम और मैत्री की धारा को प्रवाहित कर दे। यही प्रेरणा दे रहा है यह भजन-

बहादे धार मैत्री की वही त्योहार होता है
फटे दिल जोड़ने वाला मनुज अवतार होता है।

(पृष्ठ : 123)

आज मैत्री के मधुर स्वर गुनगुनाने दो
गुनगुनाने दो हमें अब गीत गाने दो

(पृष्ठ : 122)

हमारा जीवन एक वीणा की तरह है, उसमें से मधुर संगीत प्रकट होना ही चाहिए। किंतु वह तभी संभव है जब इस वीणा के तार न ढीले हों और न ज्यादा खींचे हुए हों। संतुलन और समता की मनो-भूमि पर ही वह मधुर संगीत प्रकट हो सकता है।

जीवन एक वीणा है इस पर गाना सीखो
यह मीठा झरना है अमृत पाना सीखो।
इस वीणा के तारों को ढीला मत छोड़ो
ना खींच-खींच ज्यादा इन तारों को तोड़ो
संगीत मधुर इनमें तुम प्रकटाना सीखो।

(पृष्ठ : 64)

अपने भीतर के संगीत को प्रकट करना, अन्तर्मन की सुगन्ध को प्रकट करना और भीतर बहते हुए आनन्द के झरनों को उद्घाटित करना ही साधना का लक्ष्य होता है। अगर ऐसा नहीं होता है तो संत का चोला धारण करने का प्रयोजन ही निष्फल हो जाता है। बाना नहीं, साधना है मन की वृत्तियों का बदलना-

बाना नहीं, जीवन को बदलना है साधना
धुँऐ-सा जीवन मौत है, जलना है साधना।
मूंड मुंडाना बहुत सरल, मन का मुंडन आसान नहीं
व्यर्थ बभूत लगाना तन पर यदि भीतर का ज्ञान नहीं
जग की पीड़ा में मोम-सा पिघलना है साधना।

(पृष्ठ : 132)

मन की भटकन तो मिटी नहीं, ध्यानी बनने से क्या होगा
यदि ज्ञान-मार्ग पर चले नहीं, ज्ञानी बनने से क्या होगा।

(पृष्ठ : 89)

इस प्रकार इन भजनों मे एक और जहाँ भक्ति और ज्ञान की विवेचना है, वहाँ दूसरी और क्रान्ति और उद्बोधन भी है। सर्वत्र एक ही प्रेरणा है कि इस अनमोल जीवन

का मंथन करके सार-तत्व को प्राप्त किया जाए। अगर ऐसा नहीं हुआ तो मृत्यु अपने नियत समय पर इस मिट्टी में मिलाने में नहीं चूकने वाली है-

माटी री आ काया आखिर माटी में मिल ज्यावै है
क्यांरो गरब करै रे मनवा क्यां पर तू इतरावै है

(पृष्ठ : 107)

कोई आज जा रहा है कल कोई जानेवाला
हम हैं सभी मुसाफिर, दुनियाँ है धर्मशाला

(पृष्ठ : 121)

संक्षेप में हम इतना ही कहना चाहेंगे इस संग्रह का हर भजन जीवन को नई दिशा देने वाला है। जहाँ आज अधिकांश भजन की किताबों में रटे-रटाए शब्द और रटे-रटाए भाव मिलते हैं, वहाँ ये भजन नए भाव, नई शब्द-रचना और नए मुहावरों में नई प्रेरणा देने वाले हैं। पूज्य गुरूदेव आचार्य श्री रूपचन्द्र जी तथा पूज्या प्रवर्तिनी साध्वी श्री मंजुलाश्री जी के मधुर कंठों से गाते समय इन भजनों की मर्मस्पर्शी प्रेरणा जन-जन के हृदयों को भीतर तक झकझोर देती है। यही कारण है कि न केवल भारत में अपितु अमेरिका, कनाडा, इंग्लैण्ड आदि देशों में भी इन भजनों की पुस्तकें तथा कैसेट्स/सीडीज की मांग बराबर आती रहती है। 'प्रीत नहीं की प्रभुवर से' पुस्तक का यह चतुर्थ संस्करण परिवर्तित तथा परिवर्धित रूप से पाठकों के हाथों में सौपंते हुए हम आनंदित हैं। लम्बे समय से जन-समुदाय की मांग इस प्रकाशन से पूर्ण होगी, ऐसा हमारा विश्वास है। इसके प्रकाशन में लाला अमरनाथ जी विजयकुमार जी गुप्ता बरेली (अहमदगढ़ वाले) श्री सुधीर चन्द्र जी जैन, रेणुबहिन जैन, मयूर विहार तथा श्री राम निवास जी, हेमन्त कुमार जैन, रोहिणी के उदार सहयोग के लिए हम आभारी है।

मानव मंदिर मिशन ट्रष्ट
जैन आश्रम, नई दिल्ली।

अनुक्रम

1. परम पावन वीर प्रभु को...
2. नाम कोई हो भले या कोई भी आकार हो
3. ओम जय जय पार्श्व प्रभो
4. जय हे जय हे जय महावीर
5. पंच पद की वंदना हम विनय श्रद्धा से करें
6. सच्चे दिल से पावन मन से...
7. महामंत्र नवकार का जो ध्यान धरे
8. गुरू का ले लो आशीर्वाद
9. मन ही हो मंदिर, मन ही हो पूजा
10. ये संत पुरूष पावन गंगा...
11. तेरा मन दर्पण बन जाए...
12. तेरे ही चरणों से जुड़ जाए मेरा तार
13. तूने मन को ही न रंगाया
14. कर्मों की लीला को कोई भी क्या जाने
15. मन सुमर सुमर महावीर वीर
16. लक्ष्य है ऊंचा हमारा हम विजय के गीत
17. कि अब इंसान जागेगा
18. जीवन की पगडण्डी कांटो से गुजरती है
19. संकल्प एक ही हो, इंसान हम बनेंगे
20. जिंदगी की अब नई शुरूआत हो
21. करें महावीर को वंदन

22. प्रभु पार्श्वनाथ का ध्यान करें
23. तेरे ही पावन चरणों में भगवान् हमारा ध्यान रहे
24. ओम जय तीर्थंकर भगवान
25. जय पर्युषण जय पर्युषण
26. नाम लो भगवान का भगवान बनने को
27. प्यारा नाम प्रभु का प्यारा
28. खुद को देखो, खुद से देखो, होगा खुद का ज्ञान
29. कितने कितने जनम गवांए, कितने संकट झेले
30. रोशनी का कोई भी मजहब नहीं
31. प्रेम हमारी साधना है, प्रेम हमारा पंथ है
32. धर्म के इस चमन में हम प्रेम के पौधे लगाएं
33. जयवीर प्रभु की वाणी
34. जीवन का लेखा जोखा करता है कोई कोई
35. ओ मेरे चंचल मनवा नाम सुमर ले
36. अयि परमात्मन शुद्ध चिदात्मन्...
37. राग द्वेष के काटे बंधन, उन चरणों में हो वंदन
38. चरणों में आया, वीर तेरे चरणों में आया
39. जिसको अपने शील धर्म का भान होता है
40. मन्दिर में तो बहुत गये...
41. चार दिनों की मधुर चांदनी, चार दिनों का मेला
42. यह जीवन बहता जाता है
43. आओ आओ देव मेरे मन मंदिर में आज
44. भगवान बिना तेरे कोई न सहारा है
45. तन है न केवल माटी का ढेला
46. जिस दिल में है भगवान वह नर तर जाएगा
47. जिंदगी वो जिंदगी जिसमें प्रभु की बंदगी
48. वीर भजले रे महावीर भजले
49. हमें मिल गई है मंजिल, अब और कुछ न पाना
50. जय-जय पारस जिनवर जी
51. माया के मेले में भूला प्रभु तेरी नगरिया
52. मन ही तारे, मन ही मारे...
53. मन को साधें हम...
54. जीवन की महिमा को जाने
55. मत बिसरा, नाम प्रभु का तू मत बिसरा
56. ओ सयाने त्याग पथ पर
57. राम का नाम जगत से न्यारा
58. वीर प्रभु नस नस में बस जाए
59. जो प्यार तुझे जग माया से...
60. ओ भगवान हमको साधना का सार बतलाएं
61. सच्चा प्यार भरा जिस दिल में
62. जग में सद्गुरू ही एक सहारा...
63. घट में हैं बैठे प्रभु अविनाशी
64. जीवन एक वीणा है इस पर गाना सीखो
65. जिसको बनाना था उसे ना बनाया
66. जो माया का बंधन तोड़े
67. अनहोना कभी न होता है...
68. उड़ जाएं हंस अकेला
69. होठों पर है सुधा, मगर पीना नहीं आया
70. मेरी रसना के लिए तू है, तेरा ही नाम है
71. दिल के दरिया में उतर कर देख लो
72. एक बनें और नेक बनें, प्रेम का दीप जलाएं
73. सफर में क्यों रूक गए, चलते चलो-चलो

74. जो प्यासा लौटे सरवर से
75. अपने घर में आना होगा
76. अपने से अपनी जिसको पहचान है
77. कटते हैं पाप सकल, मंगल का...
78. है हमारी एक मंजिल, एक ही अभियान है...
79. जो सताते दूसरों को, वे सताएं जायेंगे
80. सत का पथ मत छोड़ो भाई
81. संतो की शिक्षा को मानो...
82. तारा है सारा जमाना वीर हमको भी तारो
83. सोचो न बुरा भाई, अंत में दुःखदायी
84. प्रेम गंगा में डुबकी लगाते रहें
85. ओस बूंद सा जीवन तेरा, क्यों इतना इतराए
86. झूठी माया है जगत की, झूठी माया है
87. जीवन तेरा बीता जाए...
88. जग सुपने की माया
89. मन की भटकन तो मिटी नहीं...
90. अब तो जागो रे
91. मेरे मधुवन में मधुर मधुर...
92. झूठे जग की झूठी रचना झूठी है यह काया
93. दिन-रात भले कर ले कमाई...
94. करले प्राणी मात्र से प्यार...
95. जागो जागो निद्रा त्यागो उठो वीर संतान
96. हम बढे साधना के पथ पर
97. उतारूं पल पल आरती प्रभो
98. गम की घड़ियों में क्यों तू घबराएं
99. सब धर्मों का संदेश यही...
100. पुण्य से मानव चोला पाया
101. दिल को साफ करो
102. हीरों-पन्नों का मिलना है आसान
103. यह तन है अनमोल तेरा यह तन है अनमोल
104. पुण्य के संयोग से गुरू-चरण मिलते हैं
105. मेरे जैसे अज्ञानी का कैसे होगा उद्धार प्रभो
106. सारा स्वारथिया संसार मतलब...
107. माटी री आ काया आखिर...
108. पधारो प्यारा प्रभु जी, म्हारै आंगणै
109. आतमा स्यूं आतमा उजाल
110. जनम सारो वातां में बीत गयो
111. मनड़ा कहणो म्हारों मान...
112. जनम जनम रा पाप, श्राबकां धोयल्योकनी
113. जागो जागो जागणै रो, अवसर आयो जागो रे
114. तप री पावन गंगा में, नहालै म्हारा मनड़ा
115. परम पुरूष महावीर रो, आज हुयो निरवाण
116. महापर्व संवत्सरी का दिन आया
117. सब का उपकार किया तुमने...

पूज्या प्रवर्तिनी साध्वी मंजुलाश्री जी के भजन

119. करूणा के अवतार दया के सागर श्री महावीर
120. ये नाम न्यारे न्यारे, भगवान एक ही है
121. कोई आज जा रहा है, कल कोई जाने वाला
122. आज मैंत्री के मधुर स्वर गुन गुनाने दो
123. बहादे धार मैत्री की, वही त्यौहार होता है

124. हर चीज यहां नकली, धोखे में मत आना
125. प्रभु कर दो बेड़ा पार, तुम्हारे भक्त पुकार रहे
126. मौत सर मंडरा रही है किन्तु मन मरता नहीं
127. जिंदगी का महल मनवा, देख ढह रहा
128. धर्म को खतरा, नकलची धर्म वीरों से
129. धर्म वीरों! धर्म को बदनाम करना छोड़ दो अब
130. धर्म की बातें सरल है, पर निभाना ही कठिन है
131. पराया दर्द जो समझे उसे इन्सान कहते हैं
132. वाना नहीं जीवन को बदलना है साधना
133. बाना भी बड़ा जरूरी, बाने की ही पूजा होती
134. जीवन चमकाने वाली विपदाओं को गले लगाओ
135. माटी है न्यारी न्यारी पर जान एक ही है
136. अपने भीतर भगवान खड़े मंदिर...
137. हो गई है भोर अब क्यों सो रहे
138. जो चाहो इंसानो! इस दुनियां में ऊंचा नाम
139. है क्या भरोसा जिंदगी का, क्यों कहो इठला रहे
140. मुंह पर है प्रभु का नाम, हाथों में छूरी है
141. सब धर्मों का समता ही सार है
142. शपथ लेना तो सरल...
143. तन्मय होकर सुनलो अपनी आत्मा का आह्वान
144. किस पर करते नाज बंधुओ! नश्वर काया है
145. हम अपनी मस्ती में पागल जलने वाले जला करें
146. जो न कर सकते भलाई तो बुराई क्यों करें
147. मझधार में है किश्ती पगले संभल के चलना
148. कांटों से गुजरी हैं जीवन की राहें
149. हमें मिल गई है मंजिल अब और कुछ न पाना
150. करते किसका अभिमान अयि दुनियां वालो
151. पल-पल मौत बुलाती है कब किससे शर्माती है
152. जन्म मरण का पग-पग पर संताप है
153. अब मन का दीप जलाओ
154. ये धर्म के ठेकेदार ही, खोते धर्म की शान हैं
155. भजन भगवान का करते जगत रूठे तो रूठन दो
156. चली जो जा रही सांसे नहीं वे लौटकर आए
157. अब आत्म जागरण का मंगल मुहूर्त आया
158. बहे जो धार मैत्री की विश्व परिवार बन जाए
159. हम सब राही बन उत्साही
160. प्यास भड़के नीर से तो नीर पीकर क्या करेंगे
161. फल की आशा छोड करें हम काम सभी निष्काम
162. सुख दुख में क्या फर्क हमें मस्ती...
163. संतों के खुल्ले द्वार वारी जाऊं संतन की
164. जागरण की पुण्य बेला आत्म ऊर्जा को जगाएं
165. जग की अस्थिरता पहचान...
166. कैसे हो कल्याण मन तो काला है जी काला है
167. एक देश के दो बंदे उनमें यह वैर कैसा
168. माला फेर ले रे भाई राम नाम की
169. संत का दरबार लोक में सबसे न्यारा है
170. संत का सम्मान ही सम्मान है
171. संतों का काम शरणागत जन को पंथ दिखाना
172. मनका मिटाकर संताप, जीवन का आनंद ले लें
173. सत्य ही भगवान है, भगवान को वंदन हमारा
174. है सत्य हमारे साथ प्रभो...

175. जमाना है दिखावट का कि लोगों में दिखावट है
176. जो भलाई कर सकें कर जाइये
177. हम सभी एक हों, जागृत विवेक हो
178. क्या पैसा ही परमात्मा, पैसा ही प्राण है
179. जो बनाना था तुम्हें उसको बनाया क्या?
180. धर्म द्वीप है, धर्म प्राण है, धर्म शरण आधार
181. संभलो अब भी अवसर है...
182. हो सबका संकल्प महान्
183. यह भोला सा इंसान ही ईश्वर की पहचान है
184. मनवा! दुनियां कोरा सपना यहां...
185. दुनियां से आगे कहां चारों तरफ फैला जहां
186. सांच को आंच कब आए विजय...
187. अब चीख रही है मानवता
188. आज सबको है एक शिकायत...
189. बालक का कोई दोष नहीं जब...
190. जीवन में कुछ काम करो अपने...
191. सारे शास्त्रों का सार, मंगल मंत्रो का द्वार
192. आजाद हिंदुस्तान की तस्वीर को निहारें
193. आज देश में हैं दहेज की बहुत करारी मार
194. नारियों के जागरण का समय है अब आ गया
195. जो चाहो इन्सानों, इस जीवन में सुख सम्मान
196. वीर को वंदन करें, महावीर को वंदन करे हम
197. उतारें आरती सब, आज श्री महावीर की घर-घर
198. महावीर प्रभुवर का जन्मोत्सव हम आज मनाएं
199. आए श्री महावीर विश्व को सहलाने
200. है महामंत्र नवकार, इसका ध्यान धरो
201. सूत्या सूत्या के करो, माथे ऊभो थारै काल
202. मौत रे मुंढागे कींरो, जोर कहो चालै हो...
203. म्हाने चिंतामणि रत्न सा गुरू मिलग्या साक्षात्
204. ओ चमत्कार दिन च्यार दुनिया मेलो है
205. सारा घुलमिल ज्यावोजी
206. जागो जागो जागो, आयो उजलो प्रभात है
207. लोकोत्तम शरणा च्यार, ध्यावो जिन धर्म ने
208. भलां पधारया इण धरती पर...
209. बंधुओ! हम मिलजुल सारे आज दीवाली मनाएं
210. स्वामी जी आओ एकर देख्यलो थे संघ ने
211. दुनियां में कृष्ण कंसो की...
212. मरूधर म्हारो देश, म्हांने प्यारो लागै जी
213. दीवाली का दिन आया है
214. जय जय जग वत्सल जग बांधव महावीर भगवान
215. यह जैन धर्म दुनिया में सबसे निराला है
216. हमें लग रहा तुम्हारा जीवन प्रयोगशाला
217. शरणागत को तारो, भव से नौका पार उतारो
218. मन मंदिर का दीप जलाने सद्गुरू...
219. दयानीधि आज जग का इस...
220. आज मिलजुल कर हमें उत्सव मनाना चाहिए
221. तुम दयालु, दीन हम, तुम देव हम पुजारी
222. देव मेरे हैं कहां, मैं ढूंढ ढूंढ हारी
223. जन्मदिन पर पूज्यवर है संघ की शुभ कामनाएं
224. गुरूवर नवरचना दिखलाई, सब कुछ नए नजारे
225. ऋषिराज आपके जन्मोत्सव पर खुशी मनाएं हम

226. धरती महक उठी, अंबर ने नाद किया
227. प्रभो आपके शुभागमन से आश्रम है गुलजार
228. स्वागत गीतिकाएं
229. पूज्य गुरूदेव आए हैं आज खुशियां मनाएं हम
230. संघ समंदर की ये लहरें, प्रभु के पांव पखार रहीं
231. घर आए भगवान, अब खुशियाँ मनाओ
232. आओ पधारो योगीराज हम स्वागत में हाजिर
233. गुरू चरणों में आए हैं, दर्शन कर हर्षाएं हैं
234. जीवन तरी के त्राण हो, जन-जन के प्राण हो
235. पावन पल ये बहुत ही भले हैं प्रभु दर्शन...
236. गुरूवर आए खुशियां लाए
237. आज अयोध्या में श्री राम
238. आओ पधारो गुरूदेव बेहद खुशियां छाई
239. सौ-सौ स्वागत, लो अभ्यागत...
240. उतारें आरती नवदीप
241. जब तुमने आकर दस्तक दी
242. आपका स्वागत है ऋषिराज
243. आज आपके शुभागमन से सारा...
244. गुरूवर आशीर्वाद दो, शरण में आए हैं
245. मानव मंदिर मिशन सभी का इसका...
246. मनाओ-मनाओ मनाओ खुशियां
247. जन्म-उत्सव पर

परम पावन वीर प्रभु को, आत्म-मंदिर में बिठाएं
वंदना के इन स्वरों में, एक स्वर अपना मिलाएं।।

हो अचल श्रद्धा समर्पण, मनवचन हर कर्म अर्पण
प्रभु चरण की शरण ले हम, भक्ति की गंगा बहाएं। (1)

तोड़ दें अज्ञान घेरा, कौन तेरा कौन मेरा
उस अलख की झलक पाने, ज्ञान का दीपक जलाएं। (2)

बीज जैसा तरू फलेगा, कर्म जैसा फल मिलेगा
नेक ऊंचे आचरण से, हम धरा पर स्वर्ग लाएं। (3)

देव बनकर देव पूजा, हो न दिल में और दूजा
''रूप'' अपने देवता की, राह में पलकें बिछाएं। (4)

तर्ज-जो व्यथाएं प्रेरणा दें...

नाम कोई हो भले या, कोई भी आकार हो
ज्योति चरणों में हमारा, नमन सौ सौ बार हो।।

ऋषभ हो महावीर हो, महादेव हो या राम हो
बुद्ध पारसनाथ हो, रहमान या घनश्याम हो
सिद्ध हो अरिहंत पैगम्बर, खुदा अवतार हो। (1)

मुक्त हो जो राग से, मद-मोह से, अभिमान से
द्वेष-ईर्ष्या, वैर-नफरत, मान या अपमान से
चित्त जिनका शुद्ध निर्मल, विगत-विषय-विकार हो। (2)

ज्ञान दर्शन चरण की, आराधना में लीन जो
त्यागमय वैराग्यमय प्रभु, भक्ति में तल्लीन जो
लोक के उन संत-पुरूषों, का सदा सत्कार हो। (3)

हम पुजारी ज्योति के, वह ज्योति सबमें एक है
एक की आराधना के, पंथ ''रूप'' अनेक हैं
प्रेम का दरिया बहे नित, सत्य का आधार हो। (4)

तर्ज-हरिगीतिका

ओम जय जय, पार्श्व प्रभो
पार लगाओ नैया, आया शरण विभो।।

वीतराग समदर्शी, तुम अन्तर्यामी
बनूं तुम्हारे पथ का, मैं भी अनुगामी। (1)

कितने कितने पतित जनों को, तुमने हैं तारा
नाग युगल की तोड़ी, कर्मों की कारा। (2)

तुम ही मात-पिता हो, मित्र सखा भाई
नाम तुम्हारा भगवन्, भव भव सुखदायी। (3)

महिमा अपरम्पार तुम्हारी, पार कौन पाए
संकट मोचन दर्शन, बलिहारी जाएं। (4)

जनम-जनम के प्यासे, आये हैं द्वारे
''रूप'' हमारे बंधन, कट जाए सारे। (5)

तर्ज-ओम जय जगदीश हरे...

जय हे जय हे जय महावीर
हे अनंत करूणा के सागर, मेटो भव भव पीर।।

नयनों से नेहामृत बरसे, मुख दर्शन से जन मन हरसे
समता अनुकंपा की अनुपम, ज्योतिर्मय तस्वीर। (1)

तेरी वाणी जनकल्याणी, वीतरागता की सहनाणी
तोड़ गिराई मत पंथों की, जटिल कुटिल जंजीर। (2)

यह आत्मा है ज्ञाता द्रष्टा, अपने कर्मों की खुद स्रष्टा
हम हैं मालिक अपने घर के, गढ़ते निज तकदीर। (3)

लाभ हानि में, सुख या दुख में, तेरा नाम सदा हो मुख में
तप संयम से ''रूप'' मिलेगा, जनम मरण का तीर। (4)

तर्ज-जय हे जय...

पंच पद की वंदना हम, विनय श्रद्धा से करें
पूज्य परमेष्ठी हमारी, विघ्न बाधाएं हरे।।

कर्म अरियों के हनन से, जो बने अरिहंत हैं
ज्ञान दर्शन चरण बल से, अतुल अमित अनंत हैं।
तीर्थ की कर स्थापना, आराध्य तीर्थंकर बने
अतिशयों से हैं सुशोभित, महाकरूणा से सने। (1)

नष्ट कर खुद आठ कर्मो को, हुए स्वाधीन हैं,
अरूज अज अविकार शाश्वत, आत्मलय में लीन हैं।
मुक्त हैं पर भाव से नित, रमण आत्म स्वभाव में
सिद्ध परमात्मा बिराजें, अमल अन्तर्भाव में। (2)

साधकों के संघ का नेतृत्व, जिनका कार्य हैं
विमलतम आचार तारण, तरण धर्माचार्य हैं।
जगत का मिथ्यात्व हरते, शुद्ध निर्मल ज्ञान से
विषय विष को दूर करते, अमृतमय व्याख्यान से। (3)

आगमों का ज्ञान सागर सम, अतल गंभीर है
भव्य जन पाते उसी से, नित्य भवजल तीर हैं।
शास्त्रवाणी के रहस्यों की, जिन्हें पहचान है
पठन पाठन में निरत वे, उपाध्याय महान् हैं। (4)

जो महाव्रत साधना रत, संयमी उपशांत हैं
त्यागमय वैराग्यमय आचार, उज्जवल दान्त हैं।
सर्वदा निष्काम करते, धर्म संघ प्रभावना
''रूप'' जन जन के लिए आनंद मंगल कामना। (5)

तर्ज-हरिगीतिका

सच्चे दिल से पावन मन से, जिसने भी उसे पुकारा है
उसकी किश्ती को प्रभुवर ने, निश्चित ही पार उतारा है।।

अर्जुन माली सा हत्यारा, था रोहिणेय डाकू तारा
चंदन वाला की वीर प्रभु ने, तोड़ी बंधन कारा है। (1)

वह बाल्या भील बना ज्ञानी, रामायण अद्‌भुत सहनाणी
मीरां की प्रेम कहानी में, वह छुपा सांवरा प्यारा है। (2)

उस भरी सभा में द्रुपद-सुता की लाज बचाई हरी व्यथा
तुलसी की कुटिया पर पहरा दे प्रभु ने उसे उबारा है। (3)

जब नहीं प्रार्थना हो सच्ची, श्रद्धा भीतर में हो कच्ची
वह आए तो कैसे आए, जब मन अपना आबारा है। (4)

दिल में वह एक न दूजा हो, सारा जीवन ही पूजा हो
फिर देखो उसका अलख ''रूप'', जो सारे जग से न्यारा है। (5)

तर्ज-ये संत पुरूष...

महामन्त्र नवकार

महामंत्र नवकार का, जो ध्यान धरें
संकट हो सब दूर, अमृत-पान करें।।

यह सब मंत्रों का राजा, इसके फल ताजा-ताजा
तन्मय वन सुमरन करके, मनमानी मौजें पा जा
महिमा-दान करें। (1)

हम नमो नमन करते हैं, मन श्रद्धा से भरते हैं
तब ज्ञानामृत के झरने, भीतर-भीतर झरते हैं
निज पहचान करें। (2)

जब नाग युगल ने ध्याया, दुख से छुटकारा पाया
पा स्वर्ग-लोक सिंहासन, जीवन को धन्य बनाया
सब सम्मान करें। (3)

वह सती सुभद्रा निर्मल, छलनी से भर लाई जल
उद्धार किया चंपा का, ले इसी मंत्र का सम्बल
पुर गुण-गान करें। (4)

ऐसा यह मंत्र निराला, जप करता किस्मत वाला
वह ''रूप'' सनातन सुख का, पीता है मीठा प्याला
आत्म ज्ञान करें। (5)

तर्ज-रेशमी सलवार

गुरू का ले लो आशीर्वाद,
अलख निरंजन से होता है, गुरू का ही संवाद।।

गुरू ब्रह्मा गुरू विष्णु, महेश्वर,
परम ब्रह्म गुरू, हैं परमेश्वर
हैं सपूत प्यारे वे प्रभु के, वे ही अनहदनाद। (1)

कल्पवृक्ष सम है, गुरू का मुख
दर्शन से मिलता, सुख ही सुख
जो भी चाहो पाओ उनसे, लेकर शरण अबाध। (2)

गुरू की गरिमा, सब मत गाते
शास्त्रों का वे, सार बताते
अज्ञानी जन कैसे जाने, गुरू का ज्ञान अगाध। (3)

शिष्यों को, निंर्बध करे जो
जनम मरण, संताप हरे जो
गुरू का काम न ''रूप'' कभी भी, करना वाद-विवाद। (4)

तर्ज-जय हे जय...

मन ही हो मंदिर, मन ही हो पूजा
मन में विराजे हैं, खुद परमात्मा
भीतर की आंखों से, कोई तो देखे
मन में विराजे हैं, खुद परमात्मा।।

जिसने भी जब भी, उसको पुकारा
अंतरप्राणों से, नाम उचारा
उसने ही पाया, उसका सहारा। (1)

उसकी तो करूणा का, पार नहीं है
हमने ही जोड़ा, तार नहीं है
सब धर्मों का, सार यही है। (2)

राम जहां वहां, काम नहीं है
काम जहां वहां, राम नहीं है
यहां पर मिलावट का, नाम नहीं है। (3)

सारे ही तीरथ, सारे ही मंदिर
झांकोगे भीतर तो, ''रूप'' हैं अंदर
छोड़ो भटकना, बाहर दर-दर। (4)

तर्ज-तुम ही हो मंदिर

ये संत पुरूष पावन गंगा, डुबकी लेना हो तो ले लो,
बन जायेगा यह मन चंगा, डुबकी लेना हो तो ले लो।।

यह गंगा जहां जहां जाए, सूखी धरती को सरसाए
सुख मंगल वर्षा बरसाए, डुबकी लेना हो तो ले लो। (1)

यह गंगा जिधर जिधर गुजरे, हर प्यासे दिल की प्यास हरे
हो जाते जन-मन हरे-भरे, डुबकी लेना हो तो ले लो। (2)

गंगा खुद चलकर घर आए, फिर भी जो प्यासा रह जाए
वह हतभागी फिर पछताए, डुबकी लेना हो तो ले लो। (3)

सुख मिलता है मुख दर्शन से, गांठें खुलती हैं प्रवचन से
अमृत झरता है नयनों से, डुबकी लेना हो तो ले लो। (4)

जो डूबेगा तर जाएगा, खाली होगा भर जाएगा
वह ''रूप'' अमर पद पाएगा, डुबकी लेना हो तो ले लो। (5)

तर्ज-वह धर्म नहीं

तेरा मन दर्पण बन जाए,
भली बुरी जैसी सूरत है, वैसी तुझे दिखाए।।

दूरबीन बन देखी तुमने, जग की सदा बुराई
दोष दूसरों के चुगने में, कब आंखें सकुचाई
देखेगा जब अपने को तू, खुद से बुरा न पाए। (1)

सब धर्मों का सार यही है, मन हो अपना चंगा
मन मैला तो भटको चाहे, तुम जमुना या गंगा
सध जाएंगे तीरथ सारे, यह मनवा सध जाए। (2)

नहीं पार पाया मानव ने, निज अभिलाषाओं का
रहा भटकता सदा दास बनकर वह आशाओं का
चिड़िया खेतों को चुग जाए, फिर क्या हो पछताए। (3)

मन में ही है मोक्ष तुम्हारे, और इसी में बंधन
मन ही उजड़ा जंगल और, यही सुंदर नन्दन बन
जैसा चाहो ''रूप'' बना लो, सीधा पंथ सुझाए। (4)

तर्ज-तेरा मन दर्पण...

तेरे ही चरणों से, जुड़ जाए मेरा तार
तेरे ही हाथों में, भगवन्! मेरी पतवार।।

तेरा ही रूप प्रभो, नयनों में बस जाए
तेरी ही वाणी में, कानों को रस आए
नस-नस में तेरी ही, करूणा का हो संचार। (1)

हैं मतलब के सारे, जग के रिश्ते नाते
रस वाले फूलों पर, ही भंवरे मंडराते
सब सुख के साथी हैं दुख में तू ही आधार। (2)

तेरी अनन्त करूणा, का पार नहीं पाया
तेरा न दोष इसमें, जो प्यार नहीं पाया
पहुंचाया किश्ती को, हर बार तुम्हीं ने पार। (3)

निर्बल का तू बल है, निर्धन का तू धन है
सांसो की सरगम तू, हर दिल की धड़कन है
तू ''रूप'' सहारा है, जो जग से जाए हार। (4)

तर्ज-गीत अमर...

तूने मन को ही न रंगाया
तरह-तरह के वसन रंगाए, रंगली अपनी काया।।

श्वेताम्बर पीताम्बर भगवां, और दिगम्बर बाना
रंग बिरंगे इन बानों को, तूने सब कुछ माना
रंग भक्ति का लगा न मन पर, बाना खुद शरमाया। (1)

योगी बनने खातिर सिर पर, भारी जटा बढ़ाई
मुनि बनने को बार-बार, तूने है मूंड मुंडाई
सब बेकार जटा या मुंडन, मनको जो न मुंडाया। (2)

तिलक लगाया और गले में, डाली तूने माला
जपता राम नाम नित मुख से, मन काला का काला
तप भी तपा अन्नजल छोड़ा, मनको ही न तपाया। (3)

मन की मैली चादर तेरी जिस दिन उज्ज्वल होगी
प्रभु आएंगे दौड़े-दौड़े, सुरता निश्चल होगी
''रूप'' सजेगा बाना उस पर, जैसे सूरज आया। (4)

तर्ज-तोरा मन दर्पण...

कर्मों की लीला को, कोई भी क्या जाने
चलते हैं अग जग में, इसके ही अफसाने।।

क्यों रघुपति राघव ने, था राजतिलक छोड़ा
सीता ने सोने के, मृग से मन क्यों जोड़ा
कर्मों की अलखगति, कोई क्या पहचाने। (1)

क्यों जुआ युधिष्ठर ने, दुर्योधन से खेला
क्यों नल दमयंती पर, आई संकट वेला
कष्टों में अपने भी, बन जाते बेगाने। (2)

बोने से पहले ही, सोचो क्या बोना है
जैसा भी बोया है, उस पर क्या रोना है
अच्छी करणी से तुम, फल पाओ मनमाने। (3)

तिल भर टाली न टले, यह ''रूप'' कर्म रेखा
पलभर में राजा को, है रंक बना देखा
सब इसका ही खेला, माने कोई ना माने। (4)

तर्ज-गीत अमर...

मन सुमर सुमर महावीर वीर
कट जायेंगे बंधन सारे, मिल जाए भव-तीर तीर।।

कितने कितने जनम गंवाए, कितने संकट सहते आए,
भटक भटक अनजाने पथ पर, भोगी कितनी पीर-पीर। (1)

सुमिरन में विश्राम मिलेगा, भीतर सोया राम जगेगा
दीप जलेगा इस चेतन का, खुल जाए तकदीर-दीर। (2)

सांस सांस प्रभु नाम सुमर ले, माया से मन खाली करले,
अंग अंग में बस जाए अब, एक वही तस्वीर-वीर। (3)

भीतर में विश्वास अटल हो, ''रूप'' ध्यान उसका पल पल हो
निकलेगा ज्योतिर्मय सूरज, श्याम घटाएं चीर-चीर। (4)

तर्ज-माल कोश...

लक्ष्य है ऊंचा हमारा हम विजय के गीत गाए
चीर कर कठिनाइयों को, दीप सम हम जगमगाएं।।

तेज सूरजसालिए हम, शुभ्रता शशि सी लिए हम
पवन सा गति वेग लेकर, चरण ये आगे बढाएं। (1)

हम न रूकना जानते हैं, हम न झुकना जातने हैं
हो प्रबल संकल्प इतना, आपदाएं सिर झुकाएं। (2)

हो अभय निर्मल निरामय, हो अटल जैसे हिमालय
हर कठिन जीवन घड़ी में, फूल बनकर मुस्कुराएं। (3)

हे प्रभो नवपंथ तेरा, ''रूप'' अब होगा सबेरा
प्राण का भी अर्ध्य देकर, मृत्यु से अमरत्व पाएं। (4)

तर्ज-जो व्यथाएं प्रेरणा दें

कि अब इंसान जागेगा
गगन जमीं थर्रा रहे, तूफान जागेगा।।

टूट टूट कर चकनाचूर हुएं, सब महल झरोखे
इन्कलाब की इस आंधी को, कोई कैसे रोके
ऊंच नीच का भेद मिटे, अरमान जागेगा। (1)

उफन रही अजगर के फन सी, लहरें इस सागर में
कौन बचेगा यदि तूफान, मचलता है गागर में,
शोषित पीड़ित मानव का, अभिमान जागेगा। (2)

मानवता के नारों से, अब गूंज रही है घाटी
नई फसल को सिंचन दो, सोना उगलेगी की माटी
धरती के कण-कण का, फिर सम्मान जागेगा। (3)

घर घर में अब समता, स्वतंत्रता का दीप जलेगा
धर्म नाम पर झूठा, आडंबर नहीं ''रूप'' चलेगा
जन जन के मन में सोया भगवान जागेगा। (4)

तर्ज-जवाहरलाल बनेंगे

जीवन की पगडण्डी, कांटो से गुजरती है
वीरों की झोली ही, फूलों से भरती है।।

जिसको मरना आया, उसको जीना आया
विष घूंट पिया जिसने, उसने अमृत पाया
वह नहीं जिंदगी जो, सौ सौ दफा मरती है। (1)

पथ पर जो कदम बढ़ा, वो रूकने ना पाए
मंजूर टूटना हो, वो झुकने ना पाएं
बढ़ने वालों का ही, मंजिल स्वागत करती है। (2)

जिसको परवाह नहीं, कांटो तूफानों की
कोई भी चाह नहीं, पद यश सम्मानों की,
जग के नक्शे पर वो, तस्वीर उभरती है। (3)

आती जो विपदाएं, वे ''रूप'' कसौटी हैं,
आदर्श भरी बातें सच्ची या खोटी हैं
कायर पर प्रभु की भी, करूणा न उतरती है। (4)

तर्ज-बचपन की मुहब्बत

संकल्प एक ही हो, इंसान हम बनेंगे
इंसान बन गए तो, भगवान हम बनेंगे।।

हम जैन, बोद्ध, मुस्लिम, हिन्दू हों या ईसाई
आपस में भाई-भाई, सब ही गले मिलेंगे। (1)

हम एक ही गगन के, हंसते हुए सितारे
लगते हैं कितने प्यारे, हंसते रहें हंसेगे। (2)

हम एक ही चमन के, हैं फूल न्यारे न्यारे
लगते हैं कितने प्यारे, खिलते रहे खिलेंगे। (3)

मंदिर तो एक ही है, हम दीप न्यारे न्यारे
लगते हैं कितने प्यारे, जलते रहे जलेंगे। (4)

गीता, कुरान आगम, गुरू ग्रंथ बाइबिल में
इन्सानियत की गाथा, ''मुनिरूप'' हम पढ़ेंगे। (5)

तर्ज-इतिहास गा रहा है...

जिंदगी की अब, नई शुरूआत हो,
आज खुलकर, दिल की दिल से बात हो।।

वैर का बदला न लें, हम वैर से,
गैर पर भी, प्रेम की बरसात हो। (1)

हों न विचलित, धर्म से, ईमान से
चाहे कैसे भी, कठिन हालात हो। (2)

छोड़ दें खुद को, प्रभु के हाथ में
सुख की घड़ियां हों, कि झंझावात हो। (3)

हर दिवस हो, ज्योति में न्हाया हुआ
चांदनी सी ''रूप'', उजली रात हो। (4)

तर्ज-दिल के अरंमा...

करें महावीर को वंदन।
वीर को वंदन करें, महावीर को वंदन
ज्ञान का ले दीप, कर में शील का चंदन।।

छोड़ा राजमहल, तीखे कांटों का पथ अपनाया
मानवता के घावों को, निज हाथों से सहलाया
युगों युगों की दासता के, टूटे सब बंधन। (1)

धर्म नाम पर चलने वाली, हिंसा को ललकारा,
दीनों असहायों को प्रभुवर, ने ही दिया सहारा,
पाकर अभय मूक पशुओं का बंद हुआ क्रंदन। (2)

रोहिणेय सा चोर भले हो, अर्जुन सा हत्यारा,
जो भी आया चरणों में, पापों से उसे उबारा,
वज्र कठोर दिलों में जागा, करूणा का स्पंदन। (3)

दृढ संकल्प लिए प्रभुवर के, पथ पर सदा चलेंगे,
''रूप'' एक दीपक से, लाखों-लाखों दीप जलेंगे
श्रद्धा सुमनों से करते हैं, शत-शत अभिनन्दन। (4)

तर्ज-जवाहरलाल बनेंगे...

प्रभु पार्श्वनाथ का, ध्यान करें
भगवन् सबका, कल्याण करें...।।

जो वीतराग को, ध्याता है
वह वीतराग बन, जाता है
हम वीतराग का, ज्ञान करें... (1)

जंगल में मंगल, कर देते
खाली झोली को, भर देते
उस नाम का, अमृत-पान करें... (2)

भगति सच्ची हो, अंदर में
घर में, दफ्तर में, मंदिर में
निशदिन उनका, गुणगान करें... (3)

शिव कंठ बीच, अहि फुंकारे
पर गरूड़ देखता, मन मारे
हरि मौसी का, गज-मान करे... (4)

मृग-नाभि बीच है, कस्तूरी
यदि खोजें, ''रूप'' नहीं दूरी
हैं भीतर में, पहचान करें... (5)

तर्ज-नवकार मंत्र का ध्यान...

तेरे ही पावन चरणों में, भगवान् हमारा ध्यान रहे
होठों पर तेरा नाम रहे, जब तक इस तन में जान रहे।।

हम मोह नींद में सोए हैं, मीठे सपनों में खोए हैं
सोते जगते खाते पीते, प्रभुवर तेरा ही भान रहे। (1)

जग की माया ने भरमाया, पग पग पर धोखा ही खाया
इस भूल भूलैया में पड़कर, हम तेरे से अनजान रहे। (2)

सुख में तेरे को बिसराया, दुख में न भजन मन को भाया
अब ऐसी महर करो भगवन्, निशदिन तेरी पहचान रहे। (3)

हैं काम क्रोध मद ने घेरा, तृष्णा ने डाला है डेरा
इनसे छुटकारा मिल जाए, बस एक यही अरमान रहे। (4)

नयनों में तेरी सूरत हो, दिल दर्पण में प्रभु मूरत हो
''मुनिरूप'' सदा इन सांसों में, प्रभु तेरा ही अवधान रहे। (5)

तर्ज-उठ जाग मुसाफिर भोर भई...

ओम जय तीर्थंकर भगवान
परम पुरूष का धरलें ध्यान।
सुमिरन से होता कल्याण।।

ऋषभ, अजित, संभव, शुभनाम,
अभिनन्दन, प्रभु सुमति ललाम।
पद्म सुपार्श्व चन्द्र शिवधाम। (1)

सुविधिनाथ, शीतल, श्रेयांस
वासुपूज्य, जपलें हर सांस।
विमल, अनंत, धर्म, जगत्राण। (2)

शांति, कुंथु, अर, मल्लि, प्रभो
मुनि, सुव्रत, नमि, नेमि, विभो
पार्श्वनाथ प्रभु वीर महान। (3)

नित उठ चौबीसी सुमरें
जनम जनम के पाप हरें।
हम भी पाएं पद निर्वाण। (4)

मंगलकारी हैं अरिहंत,
मंगल ''रूप'' सिद्ध भगवंत
साधु धर्म सुख शांति निधान। (5)

तर्ज-रघुपति राघव सीताराम....

जय पर्युषण जय पर्युषण
पर्वों का राजा पर्युषण,
आत्मा का अद्भुत आभूषण।
जय पर्युषण-2।।

तप संयम से, तन को साधें
पूजा जप से, मन को साधें
तेला अट्ठाई मास-खमण, जय पर्युषण-2 (1)

है क्षमा याचना, का मौका
कर लें अपना, लेखा जोखा
मिच्छामि दुक्कडं का, ले धन, जय पर्युषण-2 (2)

हम करें स्वयं का, आलोचन
अपनी भूलों का, संशोधन
सामायिक पौषध, प्रतिक्रमण जय पर्युषण-2 (3)

मन की सारी गांठे, खोले
आत्मा को आत्मा से, धोलें
बन जाएं ''रूप'' परम पावन, जय पर्युषण-2 (4)

तर्ज-उठ जाग मुसाफिर भोर

नाम लो भगवान का, भगवान बनने को
ले रहे यह नाम क्यों, शैतान बनने को
क्यों नहीं तैयार तुम, इंसान बनने को।।

अल्प सुख पाने गंवाते, क्यों बड़े सुख को
पंथ है आनंद का, क्यों मांगते दुख को
गरीबी छोड़ो अरे, धनवान बनने को। (1)

आत्म धन के सामने, सब संपदा छोटी
फल मिलेंगे पकड़ लो, यदि मूल की चोटी
नीर सींचो मूल में, फलवान बनने को। (2)

अगर मांगोगे हृदय से, वह मिलेगा ही
एक धुन से द्वार खोलो तो, खुलेगा ही
तुम करो संकल्प दृढ, गतिमान बनने को। (3)

नाम में है प्रेरणा तुम, जान लो खुद को
नाम देता सूचना पहचान लो, खुद को
मनुज का अवतार ''रूप'' महान बनने को। (4)

तर्ज-मेरा जीवन कोरा...

प्यारा नाम, प्रभु का प्यारा
सहारा भगतों का, प्यारा प्यारा।।

जो एक बार भी बोले, वह द्वार सुखों का खोले
दुःखों से छुटकारा, प्यारा प्यारा। (1)

छोटी सी हो चिनगारी, ढेर घास का भारी
कि जल जाता सारा, प्यारा प्यारा। (2)

जहां सूर्य काम क्या तम का, जहां नाम काम क्या गम का
कि पग-पग उजियारा, प्यारा प्यारा। (3)

सुख-दुख का साथी असली, जग के रिश्ते हैं नकली
क्यों फिरता मारा-मारा, प्यारा प्यारा। (4)

उलटा-सुलटा गोया जो, बीज खेत में बोया
वह फलता अनधारा, प्यारा प्यारा। (5)

मुनि ''रूप'' नाम का प्याला, पीता कोई किस्मत वाला
वह जग का ध्रुव-तारा, प्यारा प्यारा। (6)

तर्ज-मीठी लगदी गुरांदी

खुद को देखो, खुद से देखो, होगा खुद का ज्ञान
सार यह साधना का, धर्म आराधना का।।

झांकोगे अपने भीतर तब ही सच्चाई जान पाओगे
केवल ऊपर से ही, करके भरोसा धोखा खाओगे
खोज निकालो छुपा खजाना, बन जाओ धनवान। (1)

देखा है हमने अब तक, केवल बाहर के संसार को
ओढ़े हुए हैं अपने ऊपर, झूठे अहंकार को
अवसर आया छोड़ गरल को, कर लो अमृतपान। (2)

बाहर टिकी जो नजरें, उनको ही भीतर अब मोड दो
मन के ये तार प्रभु के, पावन चरणों से तुम जोड़ दो
अंदर बहता सुख का दरिया, कर लो अब पहचान। (3)

जिसने ही जाना खुद को उसने खुदा को पा लिया
नुकते के फेर से ही दुखमय जीवन है जिया
'र' चढ़ जाए ''रूप'' अहं पर, तुम अर्हम् भगवान। (4)

तर्ज-मिलो न तुम तो...

कितने कितने जनम गवांए, कितने संकट झेले
अब नाम प्रभु का, ले ले।।

नाम प्रभु का मंगलकारी, सबदुख हरने वाला
घोर भयंकर जंगल में भी, मंगल करने वाला
आए सदा अकेले ही तुम, जाना सदा अकेले। (1)

कहां-कहां भटके हो अब तक, और कहां भटकोगे
बहते बहते कहां आ गए, अरे कहां अटकोगे
झूठी चतुराई में तुमने, कितने पापड़ बेले। (2)

जिसने नाम लिया प्रभुवर का, उसने जन्म सुधारा
इस अथाह भवसागर का, उसको ही मिला किनारा
अब भी लो विश्राम ''रूप'' हैं कितने नाटक खेले। (3)

तर्ज-प्यासे पंछी

रोशनी का कोई भी, मजहब नहीं
मजहबों का इसलिए, मतलब नहीं।।

पांव फैलाए, अंधेरे ने तभी
आग दीपक में रही, जब जब नहीं। (1)

उजाले के नाम पर, इतिहास में
आदमी लूटा गया, कब कब नहीं। (2)

आंख वाला आ गया, जब सामने
दाल अंधों की गली तब-तब नहीं। (3)

बहुत दीवारें खड़ी की, धर्म ने
और दीवारें कि हरगिज, अब नहीं। (4)

दीप हो या लैंप, ज्योति एक है
''रूप'' चेहरे एक से तो, सब नहीं। (5)

तर्ज-दिल के अरमां

प्रेम हमारी साधना है, प्रेम हमारा पंथ है
जो भरा हो प्रेम से, वो ही हमारा संत है।।

प्रेम मंदिर प्रेम मूरत, प्रेम ही भगवान है
प्रेम के ही थाल में सब, पूजा का सामान है
प्रेम दीपक प्रेम बाती, प्रेम पावन मंत है। (1)

वेद हो या वीरवाणी, रामायण या गीता हो
वो न समझेगा इन्हें जो प्रेम से घट रीता हो
प्रेम का जो पाठ पढ़ाए, वो ही सच्चा ग्रंथ है। (2)

नफरत के जो गीत गाते, मजहब वे सब झूठे हैं
धर्म के ही नाम पर हम, आपस में क्यों रूठे हैं
घृणा का पतझर मिटे तब, खिलता प्रेम वसंत है। (3)

प्रेम के बल पर टिके ये, धरती आसमान है
ढाई आखर सीखा जिसने, उसका ''रूप'' जहान है
प्रेम की महिमा सनातन, आदि है ना अंत है। (4)

तर्ज-माटी री आ काया...

धर्म के इस चमन में हम, प्रेम के पौधे लगाएं
साधना सेवा समर्पण के, सुमन घर घर खिलाएं।।

संत न्यारे पंथ न्यारे, हो भले ही ग्रंथ न्यारे
प्रेम है आधार सबका, प्रेम से प्रभु को रिझाएं। (1)

धर्म की देकर दुहाई, हो रही पग-पग लडाई
व्यर्थ पूजा जो न औरों को, गले अपने लगाएं। (2)

जैन हिन्दू या ईसाई, बौद्ध मुस्लिम सिख भाई
जाति मजहब प्रांत की सब, भेद रेखाएं मिटाएं। (3)

पौंछदें आंसू सभी के, धनी निर्धन सब सरीखे
बांट कर सुख दुख सभी का, हम धरा पर स्वर्ग लाएं। (4)

राम से हम त्याग सीखें, बुद्ध से अनुराग सीखें
वीर से सीखें अहिंसा ''रूप'' मन मंदिर बनाएं। (5)

तर्ज-जो व्यथाएं

जयवीर प्रभु की वाणी, यह वाणी जन कल्याणी रे।

जो वीतरागता धारे, हैं वे ही देव हमारे रे। (1)

यह आत्मा ज्ञाता द्रष्टा अपने कर्मों की स्रष्टा रे (2)

जैसी है तेरी करणी, वैसी ही पार उतरणी रे (3)

अपनी मस्ती में रहना, समता से सुख दुख सहना रे (4)

प्रभु वाणी दिल में धारें, निज जीवन ''रूप'' संवारे रे। (5)

तर्ज-जयवीर प्रभु

जीवन का लेखा जोखा, करता है कोई कोई
मन ही मन ध्यान प्रभु का, धरता है कोई कोई।।

जीवन यह राजमहल है, ज्योतिर्मय ताजमहल है
मरते सब, सत के खातिर मरता है कोई कोई। (1)

मिलती है सबको नौका, मिलता है सबको मौका
फिर भी इस दुख सागर को, तरता है कोई कोई। (2)

विष के फणधर भी रहते, अमृत के झरने बहते
लेकिन खुद को अमृत से, भरता है कोई कोई। (3)

दुःखों से सब डरते हैं, घुट घुट आहें भरते हैं
सचमुच दुर्गुण पापों से, डरता है कोई कोई। (4)

पग पग पर बहुत पंथ हैं, पग पग पर ''रूप'' संत हैं
माया ममता के तम को, हरता है कोई कोई। (5)

तर्ज-दो दिन की जिंदगी....

ओ मेरे चंचल मनवा नाम सुमर ले
कहना मेरा मान।।

भटके दर दर धरती अंबर, सात समंदर पार
खोदा पर्वत निकली चुहिया, सारा श्रम बेकार। (1)

घूमे मंदिर मस्जिद गिर्जे, तीरथ गंगा धाम
कीर्तन में भी लीन बने पर, भीतर बैठा काम। (2)

कौड़ी कौड़ी माया जोड़ी, भोजन नींद हराम
दास बने जब तुम तृष्णा के, कैसे मिले आराम। (3)

मूंड मुंडाई मन नहीं मूंडा, केवल साधु नाम
दुविधा में दोनों गए रे, माया मिली न राम। (4)

देख लिया है ''रूप'' जगत का, जान लिया अनजान
देर भले अन्धेर नहीं है समझ अरे नादान। (5)

तर्ज-माढ जीवन की...

अयि परमात्मन शुद्ध चिदात्मन्, तन मन से मैं ध्यान धरूं
आंखों से तुमको ही देखूं, वाणी से गुणगान करूं।।

अजरामर तुम निर्विकार हो, मुझको भी भव पार करो
बोधिलाभ आरोग्य अमलता, देकर अब उद्धार करो। (1)

दर्शन ज्ञान चरणमय अनुपम, शुद्ध बुद्ध पुरूषोत्तम हो
ज्योतिर्मय आनंद सनातन, बनूं वही मैं जो तुम हो। (2)

शिशु सम मेरा हृदय सरल हो, माया छल से दूर रहूं
जो आएं विपदाएं उनको, हंसते-हंसते सदा सहूं। (3)

दृष्टि विजय हो स्वाद विजय हो, मिटे वासनाएं सारी
ईर्ष्या ममता मान मिटाकर, नाम जपूं मंगलकारी। (4)

जो आता है वह जाता है, जीवन का निश्चित क्रम है
फिर मिलने में खुशी बिछुड़ने में, दुख हो कितना भ्रम है। (5)

है विवेक ही मर्म धर्म का, अप्रमत बन क्षण क्षण में
समता भाव ध्यानरत होकर सफल ''रूप'' निज जीवन में। (6)

तर्ज-प्रभाती...

राग द्वेष के काटे बंधन, उन चरणों में हो वंदन
पग पग पर मंगल होगा महकेगा मरू में भी चंदन
णमो अरिहंताणं।।

ज्योतिर्मय परमात्म पुरूष जो, नयनों के पथ पर उतरें
दूर सभी संकट होंगे हम, भक्ति भाव से नमन करें
णमो सिद्धाणं। (1)

अंधियारी राहों को गुरूवर ही, नित रोशन करते हैं
नौका बनकर दुख दरिया से, हमें तारते तरते हैं
णमो आयरियाणं। (2)

सागर सा गहरा है जिनका, ज्ञान अमल निर्मल पावन
पतझर में भी ला देता, बगिया में हरा भरा सावन
णमो उवज्झायाणं। (3)

जो वैराग्य साधना से नित, आत्म रमण में रहते हैं
सुख दुख में समता रत हो, अपनी मस्ती में बहते हैं
णमो लोए सव्वसाहूणं। (4)

''रूप'' नमन इन पांच पदों को, सब पापों का नाशक है
सुख मंगल का दाता शांति विधाता, विघ्न विनाशक है
णमो पर-मेट्टीणं। (5)

तर्ज-कविता छन्द

चरणों में आया, वीर तेरे चरणों में आया
इन चरणों में जो आया, उसने ही सच्चा सुख पाया।।

देख लिया दुनियां को मैंने, मतलब के सारे
मतलब पूरा होने पर लगने, लग जाते हैं खारे
खुद का भी साया, छोड़ता खुद...। (1)

धन के बिना दुःखी है निर्धन, तृष्णा वश धन वाले
कुर्सी की छीनाझपटी में, बने दुःखी कुर्सी वाले
है दुःख की छाया, सभी पर है दुख...। (2)

न्याय कहां है यहां, सभी है, माया के साथी
लक्ष्मी जी मिल जाए नारायण की, कथा नहीं भाती
पैसे की माया, जगत में पैसे...। (3)

उसको ही हरि मिलते हैं, जो दुनियां से हारा
पाया उसने ''रूप'' सहारा, जिसने मन को है मारा
मरा-मरा गाया, राम ने उसको अपनाया...। (4)

तर्ज-पल्लो लटके

जिसको अपने शील धर्म का, भान होता है,
वही इंसान होता है।।

पैसों से कितने ही, आलीशान महल बनवालों,
लाखों के फर्नीचर से, चाहे फिर उसे सजालो,
किन्तु अंत में, सबका घर श्मशान होता है। (1)

नहीं कभी भी टिक पाती हैं, खोटी पाप कमाई
पता नहीं कब वमन रूप में, निकले दूध मलाई
भूल गए नर दो दिन का, मेहमान होता है। (2)

एक समान नहीं सारे दिन, कभी किसी के होते,
फिर खुशियों में हंसने वाले, दुख में है क्यों रोते
अचरज है मानव कितना, नादान होता है। (3)

अपने प्रण पर रहा अडिग जो, संकट की घड़ियों में
गिनता है इतिहास उसे, अवतारों की कड़ियों में
''रूप'' जहां ईमान, वहां भगवान होता है। (4)

तर्ज-करें महावीर को वंदन

मन्दिर में तो बहुत गये पर, मन यह मन्दिर नहीं बना
इसीलिए यह चंचल मनवा, शिव सा सुन्दर नहीं बना।।

पूजा से पहले गंगा में, स्नान सदा तुम करते हो
शुद्ध कलश में पावन गंगा का, पानी भी भरते हो
उजले कपड़े धारण करके, मन्दिर में पग धरते हो
किसी गन्दगी को भीतर ले, जाते मन-मन डरते हो
किन्तु तुम्हारा मैला मन उजला जब अन्दर नहीं बना। (1)

जिस रसना से तन्मय होकर, नित्य आरती गाते हो
किन्तु उसी से पर निंदा करते, तुम नहीं सकुचाते हो
जिन आंखों में बड़े प्रेम से, प्रभु मूरत बिठलाते हो
किन्तु उन्हीं नयनों में मादक, रूप लिए भरमाते हो
अहंकार से भरा हुआ मन, कभी शिवशंकर नहीं बना। (2)

जब तक 'मैं' भीतर में, तब तक प्रभु कैसे आ सकते हैं
धारा में बहने वाले, राधा कैसे पा सकते हैं
अगर दरश पाना प्रभुवर के, मन आंगन को साफ करो
दुखे किसी का दिल तुम ऐसा, कभी न कोई पाप करो
जीत लिया जिसने मनवा को, तीर्थंकर वह ''रूप'' बना। (3)

तर्ज-चांदी की दीवार....

चार दिनों की मधुर चांदनी, चार दिनों का मेला
जाए जीव अकेला।
किसे पता इस रंग मंच पर, किसने क्या क्या खेला
जाए जीव अकेला।।

बड़े बड़े सम्राट यशस्वी, इस धरती पर आएं
जिनके डर से जमीं आसमां, और सिंधु थर्राएं
कौन जानता आज उन्हें जिनका यश चिहुंदिशि फैला। (1)

हिटलर मुसोलिनी से वीर, मिले हैं अब माटी में
दबी पड़ी समृद्ध संस्कृति, आज सिंधु घाटी में
जिनका चमका सूर्य वहां, हो गई सांझ की बेला। (2)

यह जग बून्द ओस की, या फिर समझो झूठा सपना
फल हैं तब तक आते पंछी, कौन बाद में अपना
सब संबंध कल्पना भर हैं, पिता पुत्र गुरू चेला। (3)

जग की चिंता छोड़, समय का कर उपयोग सयाने
खोता वह अनमोल जिंदगी, सोए खूंटी ताने
कैसे हो कल्याण ''रूप'' जब, तन उजला मन मैला। (4)

तर्ज-प्यासे पंछी

यह जीवन बहता जाता है,
जग की माया बादल छाया, मूरख क्यों भरमाता है।।

तन तो है माटी का पुतला, भीतर मैला ऊपर उजला
जिसने भी विश्वास किया, वह आखिर धोखा खाता है। (1)

जिसको अपना अपना कहते, ज्ञानी उसको सपना कहते
गोद खिलाया जिसको, वो ही मरघट बीच जलाता है। (2)

उगता जो वह छुप जाता है, खिलता जो वह मुरझाता है
आने के पीछे जाना है, झूठा रिश्ता नाता है। (3)

जीते जी का सब खेला है, चार दिनों का यह मेला है,
''रूप'' बना जो इसमें पागल, वह आखिर पछताता है। (4)

तर्ज-जब प्यार किया

आओ आओ देव मेरे, मन मंदिर में आज
सौ सौ बार वंदना
करूणा सागर कैसे पाएं, तेरी करूणा का अंदाज।।

ऊपर नीचे दाएं बायें, बरसे करूणा धार
अगर भीगना उस धारा में, छोड़े विषय विकार। (1)

जिसने दिल के देवालय में, प्रभुवर को बिठलाया
नहीं भेद पापी धर्मी का, उसने पार लगाया। (2)

सती चंदना सी पुकार, हो वे दौड़े आएंगे
छोड़ मिठाई, उड़द बाकुले, वे रूच-रूच खाएंगे। (3)

दिल के दरवाजे खोलें, उसकी किरणें आने दें
''रूप'' उसी की मस्ती में अब, भजन हमें गाने दें। (4)

तर्ज-म्हांरा आंगणा सूना

भगवान बिना तेरे कोई न सहारा है
डगमगती नैया का तू खेवनहारा है।।

कितने कितने अधमों, को पार किया तूने
कितनों को पापों से, उबार लिया तूने
अब मेरी भी सुन लो, प्राणों ने पुकारा है। (1)

तेरे दर्शन पाने हम, कब से पागल हैं
सदियों जितने लंबे, अब लगते पल पल हैं
क्यों निष्ठुर बन भगवन्, हमको यों बिसारा है। (2)

युग-युग से प्यासे हैं, मत ज्यादा तरसाओ
दिखला सूरत अपनी, मन बगिया सरसाओ
तू ही है मझधारा तू ''रूप'' किनारा है। (3)

तर्ज-बचपन की मुहब्बत को...

तन है न केवल माटी का ढेला
इसने ही प्रभु की ज्योति को झेला।।

मंदिर है राम का यह, वीर का यह घर है
इसमें ही कृष्ण पारस शिव शंकर है
बाहर रचा है जो भी माया का खेला
यह अलबेला। (1)

द्रोपदी का चीर जैसे श्याम ने बढ़ाया
चन्दन वाला ने वीर को रिझाया
भक्त भगवान का यह अनूठा है मेला
यह अलबेला। (2)

रथ है शरीर आत्मा रथवान मानो
नाविक है जीव नौका तन को पहचानो
पार करें जो सागर दूर है झमेला।
यह अलबेला। (3)

भीतर है चिन्मय, बाहर मृण्मय छाया
''रूप'' है नजर जैसी वैसा ही पाया
मीरा को कृष्ण भाया, मजनूं को लैला।
यह अलबेला। (4)

तर्ज-यशोमती मैया...

जिस दिल में है भगवान वह नर तर जाएगा
मन पापी तो वाना काम नहीं आएगा।।

मूंड मूंडाने से ही मन, का पाप साफ हो जाए
क्यों ना तरे भेड जो, छठे महिने सर मुंडाए। (1)

जटा बढ़ाने से ही मन, का पाप साफ हो जाए
क्यों ना तरता भालू, रहता भारी जटा बढाए। (2)

गंगा में नहाने से ही, मन का पाप साफ हो जाए
मछली क्यों ना तर जाती, जो गंगा सदा नहाएं। (3)

मौनी बनने ही से मन, का पाप साफ हो जाए
गूंगा क्यों ना तर जाता, जो नहीं बोलने पाए। (4)

आंख मूंदने से ही मन, का पाप साफ हो जाए
अंधा क्यों ना तर जाता, जो नहीं देखने पाए। (5)

जिसकी सुरता भीतर बैठे, प्रभुवर से जुड़ जाए
''रूप'' उसी को करूणा सागर, अपने कंठ लगाए। (6)

तर्ज-नखरालो देवरियों...

जिंदगी वो जिंदगी जिसमें प्रभु की बंदगी
बंदगी वो बंदगी पूजा बने खुद जिंदगी।।

सांस उससे हो जुड़ी खुशबू कि जैसे फूल से
आंख में तस्वीर उसकी दीप में ज्यों रोशनी। (1)

दिल में बहता ही रहे दरिया दया और प्रेम का
आ न पाए बैर नफरत की जरा भी गंदगी। (2)

काम हो विश्राम हो उसका जुबां पर नाम हो
और कोई नाम लेने में लगे शर्मिन्दगी। (3)

देह यह मंदिर प्रभु का साफ सुथरा रख इसे
पा सकेगा हर घड़ी में ''रूप'' उसकी चांदनी। (4)

तर्ज-सूघता कोई...

वीर भजले रे महावीर भजले
तूं तो आदिनाथ शांतिनाथ पारस भजले।।

पुण्य-योग से मानव-चोला है मिला
मानो कल्पवृक्ष भाग्य से आंगन फला। (1)

तन की कमाई तूं तप कर ले
मन की कमाई तूं जप कर ले। (2)

धन की कमाई दोनों हाथ बांट दे
तूं तो ऊँची भावना से सारे कर्म काट दे। (3)

''रूप'' भक्ति-रंग में रंगले चदरिया
तेरी बीती जाए कीमती यह उमरिया। (4)

तर्ज-घोर तपसी हो मुनि

हमें मिल गई है मंजिल, अब और कुछ न पाना
क्यों तीर मारते हैं, जब सध गया निशाना।।

दर दर पे सर झुकाया, पर हाथ कुछ न आया,
मनदीप जल गया, फिर किसको कहो मनाना। (1)

जिस खोज में भटकते, हम हैं जनम जनम से
उस आत्म देवता का, अब मिल गया ठिकाना। (2)

जिस जायके के आगे, सारे ही रस हैं फीके
वह सोम रस की प्याली, होठों से मत हटाना। (3)

आवाज वह सुनी है, जो छू गई हृदय को
बस बहुत सुन लिया है, अब और ना सुनाना। (4)

तस्वीर जो बसी है, इस दिल के आइने में
उस ''रूप'' में हैं खोए, हमको नहीं जगाना। (5)

तर्ज-हमें रास आ गया है...

जय-जय पारस जिनवर जी
सात फनों से शोभित सत्यं शिंव सुंदरं जी।।

अश्वसेन के राजदुलारे, वामा मां सुत प्यारे
जन्म-जात थे योगी भगवन, सांप-सपिर्णी तारे। (1)

सात फनों में सात चक्र हैं, इन पर ध्यान लगाओ
जन्म-2 से सोई शक्ति, अपनी आज जगाओ। (2)

पारस पत्थर को छूकर, लोहा बन जाता सोना
इस पारस को छूने वाला, पारस बने सलौना। (3)

लाखों अरबों के मालिक हों, फिर क्यों बने भिखारी
पारस की चाबी से खोलो, बंद खजाना भारी। (4)

चिंतामणि है कामधेनु है, पारस नाम उजारा
जीवन की यात्रा में पग-पग पारस, ''रूप'' सहारा। (5)

तर्ज-झड़ाको माला रो लाग्यो

माया के मेले में भूला प्रभु तेरी नगरिया
महर करो इतनी सी भगवन् दिखला दो डगरिया।।

मैं हूं कौन कहां से आया, इसका मुझको ज्ञान नहीं
क्यों आया हूं कहां मुझे जाना है यह भी भान नहीं
चक्कर काटे ऊपर नीचे, मन मेरा चकरिया। (1)

मिले चार दिन प्रभु सुमिरन, को मैंने यों ही खो दिए
जहां आम बोने थे मुझको, वहां धतूरे बोदिए
दिन दिन भारी होती जाती, पापों की गठरिया। (2)

पूजा पाठ प्रार्थना करता, लेकिन सब बाहर बाहर
काम क्रोध मद मोह लोभ से, भरा हुआ भीतर भीतर
पल पल छिन छिन की हैं, मैंने मैली यह चदरिया। (3)

करूणा सागर करूणा करके, आंखे मेरी खोल दो
''रूप'' तोड बंधन उडजाऊं, पांखें मेरी खोल दो
तेरे चरणामृत से मेरी, भर जाए गगरिया। (4)

तर्ज-नगरी द्वारे...

मन ही तारे, मन ही मारे, है मन का सारा खेल रे,
तू मन में बसा ले प्रभुवर को।।

सत्कर्मों में लगा हुआ मन, हमें तारने वाला
दुष्कर्मों में रत हैं जो मन, वही मारने वाला,
मन ही सज्जन, मन ही दुर्जन, यदि भरा हुआ है मैल रे। (1)

मन में ही है नरक भयंकर, मन में स्वर्ग सुहाना,
गुंथा हुआ मन में माया, का सारा ताना बाना
यह भटकाए, चक्कर खाए, ज्यों घाणी का बैल रे। (2)

एक पलक भी नहीं ठहरता, कुछ तोड़े कुछ जोड़े
चाहे जागे हों या सोएं, यह कब पीछा छोड़े,
मन यह घोड़ा, जाएं दौड़ा, जैसे पटरी पर रेल रे। (3)

उन संतों के दास बनें हम, जिनने मन को जीता,
मन में ही सारी रामायण, ''रूप'' इसी में गीता
जैसा बोए वैसा पाए, छोड़ो सब ठेलमठेल रे। (4)

तर्ज-तन डोले...

मन को साधें हम
मन को साधें हम, भीतर बैठे प्रभु को आराधें हम।।

चेहरा अपना देख नहीं पाते, हम मैले दर्पण में
उजला हो मनवा, तो देर न लगती प्रभु दर्शन में। (1)

चंचल लहरों में न पता लगता, क्या छुपा सरोवर में
प्रकट न होते, अंदर छुपे हुए भगवान चंचल उर में। (2)

केवल राख हटाना ही है, अंगारा तो है भीतर
दरवाजा खुलते ही हमें मिलेंगे, ज्योतिर्मय ईश्वर। (3)

एक उपाय ''रूप'' है केवल, खोकर ही कुछ पाना है
बिन खोए पाने की आशा, अपने को भरमाना है। (4)

तर्ज-पनजी मूंढे बोल...

जीवन की महिमा को जाने
इसकी गरिमा को पहचाने।
इसमें ही स्वर्ग नरक इसमें
कोई माने या ना माने।।

दिल में यदि करूणा समता है
माया न मोह मद ममता है।
प्रभु चरणों में मन रमता है
तो यही स्वर्ग की मुस्कानें। (1)

जिस मन में हिंसा भाव भरा
ईर्ष्या नफरत का घाव हरा
पापों का जिसको डर न जरा
ये घोर नरक के अफसाने। (2)

इस चौराहे पर सब राहें
खुशियां भी मिले यहां आहें
फल सकती हैं सारी चाहें
यदि बनो प्रभु के दीवाने। (3)

साथी निज पुण्य पाप होंगे
या जितने सांस जाप होंगे
उतने ही ''रूप'' आप होंगे
अपनी मस्ती में मस्ताने। (4)

तर्ज-होठों पर मुलकी...

मत बिसरा नाम प्रभु का तू मत बिसरा
जन जन का उजियारा नैया खेवन हारा।।

नाम प्रभु का भव भव सुखकारी है
विघ्न हरण यह मंगलकारी है
उजड़े दिलों को है सरसाता। (1)

डूबते हुए का प्रभु नाम ही सहारा है
मझधार में भी यह बनता किनारा है
अटके हुए को पथ दिखलाता। (2)

सुख हो या दुखहो इस नाम को सुमरले
जनम मरण के दरिया को तरले
नाव बिना यह पार लगाता। (3)

भोर भोर उठते ही ध्यान जो ध्याता है
प्रभु मूरत को मन में बिठाता है
''रूप'' मुनि वह प्रभुपद पाता। (4)

तर्ज-यारो दिलदारों...

ओ सयाने त्याग पथ पर,
सुख ही सुख है, कोई आए।।

लालसाओं का न कोई, अंत अब तक पा सका,
क्या भुजा से सिंधु के, उस पार कोई जा सका
नाव से कर, पार सागर। (1)

देखते माटी में लिपटा, डूबता तूम्बा सदा,
दूर होते ही परत, ऊपर उछलता सर्वदा
पाप मल, निर्मल तू कर। (2)

विषय के लोभी गंवाते, कीमती यह जिंदगी
जगत पर करते हुकूमत ''रूप'' खुद की बंदगी
मांग मत अब, भीख दर दर। (3)

तर्ज-ओ बंसती पवन...

राम का नाम जगत से न्यारा
कितना प्यारा प्यारा।।

राम बिना, आराम न मन को
फिरता मारा मारा। (1)

रमण कराए, चिदानंद में
जीवन का ध्रुव तारा। (2)

मेल नहीं हैं, राम रमा में
काम वहां बेचारा। (3)

उलटा सुलटा, कैसे भी हो
इसने पार उतारा। (4)

निर्बल का बल, निर्धन का धन
हारे का है सहारा। (5)

वह पत्थर भी, तेरा जिसने
रूप नाम यह धारा। (6)

तर्ज-रमैया बिना...

वीर प्रभु नस नस में बस जाए
वीतरागता पाएं।।

नमन बताया सब संतो को
पंथ विवाद मिटाए। (1)

धर्म अहिंसा सत्य सनातन
मत की आदि कहाए। (2)

सत्य असीम अगम हम समझें
सीमा में न समाए। (3)

है आकाश अनंत जगत में
घट में कैसे आए। (4)

अपनी करणी पार उतरणी
पल पल सफल बनाएं। (5)

केवल नाम न काम संवारे
सोया राम जगाएं। (6)

दर्शन ज्ञान चरण संगम में
गोता ''रूप'' लगाए। (7)

तर्ज-रमैया बिना...

जो प्यार तुझे जग माया से, प्रभु से वह प्यार हुआ होता
तो इस भवसागर से तेरा, यह बेड़ा पार हुआ होता।।

जितनी सेवा तन की करते, दिन रात गुलामी हो भरते,
वह सेवा चरणों की होती, प्रभु का दीदार हुआ होता। (1)

कितनी चिंता अपना घर हो, सर ढकने को अपना दर हो
वह चिंता आत्मा की होती, शिव पद घर बार हुआ होता। (2)

यह मेरा है वह तेरा है, सब राग द्वेष का घेरा है
इससे छुटकारा मिल जाता, जग ही परिवार हुआ होता। (3)

जो दौड़ लगी धन पाने की, है धन कुबेर बन जाने की
वह दौड़ फकीरी की होती, पीछे संसार हुआ होता। (4)

यह मन ही असली मंदिर है, प्रभुवर इसके ही अंदर है
यदि ''रूप'' जान लेते इतना, दिल ही दरबार होता। (5)

तर्ज-ये संत पुरूष पावन गंगा...

ओ भगवान हमको साधना का सार बतलाएं
सार बतलाएं कि करूणा धार बरसाएं।।

मजहब के घेरों-पर-घेरे
गुरूओं के डेरों-पर-डेरे
इन तेरे-मेरे के फेरों से छुटकारा दिलवाएं, ओ... (1)

है होड़ लगी यश पद् धन की
किसको चिंता है बंधन की
नहीं मुंडाया मन को तो क्या होना मूंड मूंडाए, ओ... (2)

बातें तो ऊंची संतों की
भीतर में गांठे पंथों की
केवल जय-जय के नारों से नहीं रोशनी आए, ओ... (3)

यह मन ही प्रभु का मंदिर हो
गंगा सा निर्मल हर घर हो
धर्म एक है, इसीलिए हम सभी एक हैं,गाएं, ओ... (4)

पथ नहीं साधना सा दूजा
सेवा ही है भगवत् पूजा
''रूप'' साधना सेवा से हम नया समाज रचाएं, ओ... (5)

तर्ज-म्हारी साधना

सच्चा प्यार भरा जिस दिल में
उसमें ही आते भगवान।।

जूठे बेर भीलनी के हाथों, से खाते राम
केले के छिलकों में मोद, मनाते हैं घनश्याम। (1)

पांच माह पच्चीस दिनों का, तप है बड़ा महान्
दासी-कर से किया पारणा, वर्धमान भगवान। (2)

लालों की सूखी रोटी, मिसरी-सी मीठी जान
नानक ने कब मालपुओं पर, दिया जरा भी ध्यान। (3)

प्रेम न बाड़ी नीपजै भाई, प्रेम न हाट बिकाय
राजा-परजा जेहि रूचै, वो सीस देय ले जाय। (4)

जब मैं था तब हरि नहीं भाई, जब हरि है मैं नांय
प्रेम गली अति सांकरी भाई, तामें दो न समाय। (5)

पोथी पढ-पढ जग मुआ भाई, पंडित भया न कोय
ढाई आखर प्रेम का भाई पढ़े, सो पंडित होय। (6)

रहिमन धागा प्रेम का भाई, मत तोड़ो छिटकाय
टूटे ''रूप'' नाहि जुडे रे, जुडे गांठ पड़ जाय। (7)

तर्ज-हंसा निकल गया...

जग में सद्गुरू ही एक सहारा, जीवन का है उजियारा
मतलबिया यह सारा संसार है, ओ बंदे सद्गुरू का होता सच्चा
प्यार है।।

गुरू ब्रह्मा गुरू विष्णु, महेश्वर गुरू देवों के देव
गुरू ही परम ब्रह्म है नित उठ, गुरू की करिये सेव। (1)

गुरू गोविंद दोनों खड़े हो, किसके लागूं पांय
बलिहारी गुरूदेव की जो, गोविंद दिया बताय। (2)

गुरू कुम्हार सिस कुंभ है, जो गढ़-गढ़ काढै खोट
अंदर हाथ सहार दे, और ऊपर मारै चोट। (3)

सहजो गुरू दीपक दियो, रे नैना भए अनंत
आदि अंत अरू मज्झ में, अब दीस परै भगवंत। (4)

सतगुरू चंदन बावना जो, परस्यो पलटै काठ
रज्जब चेला चूक में रे, रहया बांस के ठाठ। (5)

यह तन विष की बेलडी रे, गुरू अमरित की खान
सीस दिये जो गुरू मिले, तो भी तू सस्ता मान। (6)

पारस में ''रूप'' संत में, बड़ो आंतरो जान
वो लोहा कंचन करे, वो करे आप समान। (7)

तर्ज-झूठी परदेशिया री प्रीत है।

घट में हैं बैठे प्रभु अविनाशी
भजले उनको कट जाए चौरासी।।

कमल हजार, पांखुरी वाला
तेरी सूरता, सूरज परकाशी। (1)

झरता अमृत, का नित झरना
चखले तृप्त बने रसना प्यासी। (2)

आंख तीसरी, जो खुल जाए
सारी दुनियां, है उसकी दासी। (3)

सांस सांस में, सावधान जो
मुनि ''रूप'' वही है संन्यासी। (4)

तर्ज-घूमर

जीवन एक वीणा है इस पर गाना सीखो
यह मीठा झरना है अमृत पाना सीखो।।

इस वीणा के तारों, को ढीला मत छोड़ो
ना खींच खींच ज्यादा, इन तारों को तोड़ो
संगीत मधुर इनमें तुम, प्रकटाना सीखो। (1)

इस बगिया में कांटे, गुल भी मुसकाते हैं
जो जैसा बोते हैं, वैसा वो पाते हैं
कर फूलों की खेती, तुम मुस्काना सीखो। (2)

सूरज से सीखो तुम, हो ज्योतिर्मय जीवन
चन्दा से सीखो तुम, उज्ज्वल शीतल तनमन
बादल ज्यों करूणा जल, तुम बरसाना सीखो। (3)

जिसके मिल जाने पर, जग मिल जाए सारा
तेरे में ''रूप'' छिपा वह, प्रभुवर का प्यारा
भीतर की गंगा में, जीभर नहाना सीखो। (4)

तर्ज-गीत अमर...

जिसको बनाना था उसे ना बनाया
जिसको मनाना था उसे ना मनाया।।

महल बनाए तुमने, कोंठियां बनाई
कीमती फर्नीचर से, खूब ही सजाई
जिसको सजाना था उसे ना सजाया, कुछ ना सजाया। (1)

लंदन अमेरिका में, व्यापार भारी
बड़े धन कुबेरों से, तूने बाजी मारी
जो धन कमाना था उसे न कमाया, कुछ ना कमाया। (2)

ऊंची से ऊंची तुमने, उपाधियां भी पाई
जो भी अड़ा उसने, मुंह की ही खाई
जिसको हराना था उसे ना हराया, कुछ ना हराया। (3)

मन और इंद्रियों के, दास बने हो
असली खजाने से, उदास बने हो
जो ''रूप'' पाना था उसको ना पाया, कुछ भी ना पाया। (4)

तर्ज-यशोमती मैया...

जो माया का बंधन तोड़े
प्रभु का दीदार उसे होता
अपने को अपने से जोड़े
प्रभु का दीदार उसे होता।।

जिसने माया को, समझ लिया
चंचल छाया को, समझ लिया
नश्वर काया को, समझ लिया
प्रभु का दीदार, उसे होता। (1)

मुख तम सम्मुख, दुख ही दुख है
मुख अगर ज्योति, के सम्मुख है
उस जीवन में सुख, ही सुख है
प्रभु का दीदार, उसे होता। (2)

छाया पीछे, सूरज आगे
माया पीछे हो, सत आगे
काया पीछे, चेतन आगे
प्रभु का दीदार उसे होता। (3)

यह जग है, माया का मेला
या आंख मिचौंनी, का खेला
जिसका न ''रूप'' दामन मेला
प्रभु का दीदार, उसे होता है। (4)

तर्ज-ये संत पुरूष...

अनहोना कभी न होता है, जो होना है सो होता है
क्यों भार व्यर्थ का ढोता है, जो होना है सो होता है।।

सुख दुख का शाश्वत जोड़ा है
इसने किसको कब छोडा है
क्यों अपने दिल को तोड़ा है। (1)

क्यों इतनी चिंता करते हो
क्यों आग चिता की धरते हो
यों बिना मौत क्यों मरते हो। (2)

मरने पर चिता जलाती है
चिंता जीते जी खाती है
सुख दुख तो जीवन साथी है। (3)

निष्काम भाव से कर्म करें
अन्याय पाप से सदा डरें
हर स्थिति में हम आनंद करें। (4)

जो मिले उसी में मस्त रहें
दरिया की भांति मस्त बहें
सुख मंगलमय पथ ''रूप'' गहें। (5)

तर्ज-वह धर्म नहीं बस...

उड़ जाएं हंस अकेला
यह चार दिनों का मेला।।

नहीं माता रहे, नहीं बेटा रहे
नहीं गुरू रहे नहीं चेला। (1)

नहीं राजा रहे, नहीं प्रजा रहे
नहीं जाए संग अधेला। (2)

चाहे बच्चा जवान, चाहे बूढा नादान
सब पर यम पंजा फैला। (3)

छोड़ तेरा मेरा तोड़, माया घेरा
यह आंख मिचौनी, का खेला। (4)

''रूप'' अब भी तू जाग, मोह निद्रा को त्याग
आई जगने की, मंगल बेला। (5)

तर्ज-आई जगने की मंगल बेला

होठों पर है सुधा, मगर पीना नहीं आया
तुझे जीना नहीं आया।।

लगा दांव पर गंवा रहे क्यों, यह अनमोल जिंदगी
राजमहल में क्यों भरते हो, कीचड़ और गंदगी
फटी चदरिया जीवन की, सीना नहीं आया। (1)

भरलो तुम आलोक और खुशबू से, निज जीवन को,
नहीं पता कब ले जाएगा, काल सुनहरे तन को,
पारस मिला, किन्तु लोहा छूना नहीं आया। (2)

क्यों अपना घर छोड़, पराए की चिंता करते हो,
क्यों अमृत से भरे कुंभ में, ''रूप'' गरल भरते हो,
छुपा खजाना भीतर में, पाना नहीं आया। (3)

तर्ज-कि अब इंसान जागेगा

मेरी रसना के लिए तू है, तेरा ही नाम है
और जग की वस्तुओं से कुछ न मेरा काम है।।

जिधर देखूं उधर तू ही, तू नजर आए मुझे
तू ही मेरा तीर्थ पावन, तू ही मेरा धाम है। (1)

हो तुम्हारी वंदना के गीत, अधरों पर सदा,
नयन की इन पुतलियों का, एक तू विश्राम है। (2)

जागते सोते कभी भूलूं, नहीं भगवन् तुझे,
ज्ञान तेरा घ्यान तेरा, भान आठों याम है। (3)

प्राण जाएं या रहें, पर नाम होठों पर रहे
तू ही है घनश्याम मेरा, ''रूप'' तू ही राम है। (4)

तर्ज-एक मैं हूं एक मेरी

दिल के दरिया में, उतर कर देख लो
दिल के दर्पण में, नजर भर देख लो।।

छोड़ दो भटकाने, वाले रास्ते
दिल की गलियों से, गुजर कर देख लो। (1)

उम्र भर की दौड़ का, परिणाम क्या,
एक पल को तुम ठहर, कर देख लो। (2)

दिल के अंदर ही छुपे, परमात्मा,
अपने से अपना, सफर कर देख लो। (3)

क्या मिला हालात, जग के जानकर
अब जरा अपनी, खबर कर देख लो। (4)

खूब बाहर से संवारा, देह को
''रूप'' अब दिल से संवर, कर देख लो। (5)

तर्ज-दिल के अरंमा...

एक बनें और नेक बनें, प्रेम का दीप जलाएं
घर घर में और घट घट में, प्रेम का दरिया बहाए।।

हम एक है सदा से, और एक ही रहेंगे
इस एकता के खातिर, सहना है जो सहेंगे
जीवन की फुलवारी में, प्रेम के फूल खिलाएं। (1)

हम जाति और मजहब, की तोड़ दें दीवारें
है भाई भाई सारे, फिर कैसी ये दरारें
मानवता के मधुवन में, प्रेम की वंशी बजाएं। (2)

इस वसुन्धरा के आंगन, पर स्वर्ग को उतारें
है कौन ऊंचा नीचा, झूठे अहं को मारे
वसुधा ही परिवार बने, ''रूप'' गीत ये गायें। (3)

तर्ज-स्वतंत्र...

सफर में क्यों रूक गए, चलते चलो-चलो
बीच में क्यों थक गए, चलते चलो-चलो।।

जिंदगी है नाम चलने का, न रूकने का
जिंदगी है नाम लड़ने का, न झुकने का
तुम धुआं ना, धधकती ज्वाला जलो जलो। (1)

जो सतत गतिशील उसका, भाग्य भी चलता
जो परिश्रम शील उसका, भाग्य भी फलता
बीज से वट वृक्ष, बन कर तुम फलो फलो। (2)

तेज लो तुम सूर्य से, गति लो हवाओं से
शुष्क धरती सींचना, सीखो घटाओं से
फूल से मुस्कान, लेकर तुम हंसो-खिलो। (3)

सब मिलेगा प्रकृति से, जो चाहते लेना
पर अकेले ही तुम्हें है, नाव को खेना
आंधियों का नाम, ले खुद को न तुम छलो। (4)

आत्म-बल जिसमें उसे, परमात्म बल मिलता
जो स्वयं कमजोर उसको, जगत भी छलता
''रूप'' अपने ही सहारे तुम पलो पलो। (5)

तर्ज-मेरा जीवन कोरा...

जो प्यासा लौटे सरवर से, उसको क्या कहें तुम्हीं बोलो
जो भूखा लौटे तरूवर से, उसको क्या कहें तुम्हीं बोलो।।

वरदान मिला जब मन चाहा, नृप के महलों में भोजन का
पर भीख मांगता दर-दर से, उसको क्या कहें तुम्हीं बोलो। (1)

मौका तो पल पल जीवन में, फिर भी जो ऐसा कहता है
मैं काम करूंगा अवसर से, उसको क्या कहें तुम्ही बोलो। (2)

गिर गिर कर उठने वाले ही, पथ पर आगे बढ़ पाता है
जो चले न गिरने के डर से, उसको क्या कहें तुम्हीं बोलो। (3)

आश्रय को पाने जो भटके, तीरथ तीरथ मंदिर मंदिर
पर अनजाना अपने घर से, उसको क्या कहें तुम्हीं बोलो। (4)

किस किस को अपना ''रूप'' मान, तुमने अब तक है प्यार किया
पर प्रीत नहीं की प्रभुवर से, उसको क्या कहें तुम्हीं बोलो। (5)

तर्ज-वह धर्म नहीं...

अपने घर में आना होगा
अक्षय सुख को पाना होगा।।

आखिर अपना अपना होता
और पराया सपना होता
भ्रम का भूत भगाना होगा। (1)

कब तक भूलोगे घर अपना
कब तक लोगे झूठा सपना
गहरी नींद उड़ाना होगा। (2)

सुख ही सुख है अपने घर में
दुख ही दुख है पर के घर में
दुख का मूल मिटाना होगा। (3)

निज घर आना 'जिन' होना है
पाने से पहले खोना है
खोकर ही कुछ पाना होगा। (4)

औरों के घर पर जो रहता
अपमानों को वह नित सहता
''रूप'' स्वरूप को पाना होगा। (5)

तर्ज-जीवन अखंड...

अपने से अपनी जिसको पहचान है
वही ज्ञान है सच्चा समझो, शेष सभी अज्ञान है।।

जो सच्चा हो वही हमारा, इसका हरदम ध्यान रहे
नहीं कभी अपनी बातों, की झूठी खींचातान रहे
सत्य तत्व पाने का, यह विज्ञान है। (1)

दुनियां भर का ज्ञान भले हो, किन्तु नहीं तरना आया
डूबेगा मझधार सिंधु का, पार नहीं उसने पाया
वही भटकता जिसे न अपना भान है। (2)

धर्म नाम पर चलती रहती, यदि आपस मैं तलवारें
धर्म नाम पर जो खिंचती, हैं ऊंची ऊंची दीवारे
धर्म नहीं वह झूठा, निज अभिमान है। (3)

जहां नम्रता मिलनसारिता, सदा मुक्त जिज्ञासा हो
ग्रहणशीलता और सरलता, पावन ज्ञान पिपासा हो
''रूप'' हृदय में ही रहता भगवान है। (4)

तर्ज-आने वाले कल की...

कटते हैं पाप सकल, मंगल का, सुर तरू घर में फलता है
उसको ही मीठे फल मिलते, जो बीज आम का बोता है।।

पत्नी पुत्रों का मिलना तो, पापी जनको भी संभव है
लक्ष्मी मिलना भी सुलभ, ज्ञानियों का कुछ ऐसा अनुभव है
प्रभु कथा संत के मिलन बिना, नरतन का बोझा ढोता है। (1)

छल कपट दंभ अभिमान छोड़, जो मुनि दर्शन को जाता है
जितने पग धरता उतने ही, यज्ञों का फल वह पाता है
जनमों जनमों से संचित पापों, को वह पल में धोता है। (2)

मुद मंगलमय है तीर्थ संत, सच्चे सपूत हरि के होते
खुद तरते ''रूप'' तारते हैं, इस गंगा में ले लो गोते
कीड़ा भी राजकुमार बना, गुरू ही अमृत का स्रोता है। (3)

तर्ज-दिल लूटने वाले...

है हमारी एक मंजिल, एक ही अभियान है,
गा रहे हैं हम सभी मिल कर, एक ही संगान है।।

एक ही है पथ हमारा,
एक सा है अथ हमारा,
एक ही है साधना, इसका हमें अभिमान हैं। (1)

एक ही स्वर, एक ही लय,
एक ही गति, एक निश्चय,
विजय है हाथों हमारे, हम स्वयं भगवान हैं। (2)

मित्र हैं, ये सब दिशाएं,
साथ सोचें, साथ गाएं
ये विहंसते फूल जिनमें एक ही मुस्कान है। (3)

हो भले बलिदान अपना,
''रूप'' हो साकार सपना
सत्य का सम्मान सचमुच स्वयं का सम्मान है। (4)

तर्ज-मातृ मंदिर में चलो प्रिय...

जो सताते दूसरों को, वे सताएं जायेंगे
जो मिटाते दूसरों को, वे मिटाएं जायेंगे।।

दीन-दुखियों को रूलाकर, जो मनाते मौज है
देख लेना एक दिन वे, ही रूलाए जाएंगे। (1)

सेंकते रोटी जलाकर, दूसरों की झोंपड़ी
एक दिन उनके महल भी, तो जलाएं जायेंगे। (2)

डूबती किश्ती बचाए, जान की बाजी लगा
भव समंदर से सदा वे, ही बचाए जाएंगे। (3)

दूर कांटों को करे जो, दूसरों की राह से
रास्ते उनके गुलों से, ही सजाए जाएंगे। (4)

जो गरीबों को लगाए, कंठ से दिल खोलकर
''रूप'' प्रभु-दरबार में दिल से लगाए जाएंगे। (5)

तर्ज-दर्द कांटे का...

सत का पथ मत छोड़ो भाई
सत की बांधी लक्ष्मी आई।।

सत ही भगवान, शास्त्र गाते
सत सार लोक में, बतलाते
सत पर ही धरणी, टिक पाई। (1)

होती है सत की, अंत विजय
इसमें न रंच भर भी, संशय
आखिर में सत ही, फलदायी। (2)

है झूठ बराबर, पाप नहीं
इस पाप का कोई, माप नहीं
यह पर्वत और, पाप राई। (3)

जो पांच टके में, नहीं बिका
वह पाग बिकी दे, सात टका
माया ने माया, फैलाई। (4)

सत पर सारा विश्वास टिका,
सागर धरती, आकाश टिका,
मुनि ''रूप'' सत्य ही सुखदायी। (5)

तर्ज-प्रभुपार्श्व नाथ का...

संतो की शिक्षा को मानो, बोलो जब भी मीठे बोलो
जो अमृत घोल नहीं सकते, तो जहर जुवां में मत घोलो।।

वाणी मिसरी से भी मीठी, है यही नमक से भी तीती
अमृत भी इसमें विष भी है, तुम फूलों की बगिया बोलो। (1)

यदि दान तुम्हारे हाथ नहीं, चिंता की कोई बात नहीं
मीठे वचनों में कंजूसी क्यों करते खुद को टंटोलो। (2)

पूछे कोई तब ही बोलो, शब्दों को ठीक-ठीक तोलो
आपस में दो बातों करते, उस बीच न होठों को खोलो। (3)

पांचाली का वह व्यंग्य-वचन, बन गया महाभारत कारण
वचनों के घाव नहीं भरते, चाहे औषध-जल से धोलो। (4)

कोयल की बोली क्यों प्यारी, कौवे की बोली क्यों खारी
मुनि ''रूप'' सदा मीठी बोली से, सारे जग के तुमे हो लो। (5)

तर्ज-ये संत पुरूष...

तारा है सारा जमाना वीर हमको भी तारो।।

हमने सुना है चन्दनवाला को तारा
दासी का करके बहाना, वीर हमको भी तारो।। (1)

हमने सुना है चंडकोशिये को तारा
ध्यान का करके बहाना, वीर हमको भी तारो। (2)

हमने सुना है चोर रोहिणे को तारा
कांटे का करके बहाना वीर हमको भी तारो। (3)

हमने सुना है अर्जुनमाली को तारा
सुदर्शन का करके बहाना, वीर हमको भी तारो। (4)

हमने सुना है मेघकुमार को भी तारा
हाथी का करके बहाना, वीर हमको भी तारो। (5)

हमने सुना है शांलिभद्र को तारा
रतन-कम्बल का करके बहाना, वीर हमको भी तारो। (6)

हमने सुना है धन्ना श्रेष्ठि को तारा
आंसू का करके बहाना, वीर हमको भी तारो। (7)

औरों को तारा ''रूप'' हमको भी तारो
करके कोई न कोई बहाना, वीर हमको भी तारो। (8)

तर्ज-स्वतंन्त्र

सोचो न बुरा भाई, अंत में दुःखदायी

देखो न बुरा भाई, अंत में दुःखदायी
बोलो न बुरा भाई, अंत में दुःखदायी।।

बुरी सोच में सबसे पहले, मन में घुसे बुराई
जले दूसरे, पहले ही खुद जलती दिया सलाई। (1)

नहीं किसी के चाहे से, नुक्शान किसी का होता
लेकिन गलत चाहने वाला, आखिर खुद ही रोता। (2)

धर्मेजय पापे क्षय संतों, की है सच्ची वाणी
भले भलाई बुरे बुराई, करो न तुम मनमानी। (3)

जैसा चिंतन भीतर में, संस्कार वही आएगा
निर्मल मन उजले अणुओं, को खींच-खींच लाएगा। (4)

सोचें हर पल सभी सुखी हों, सबका ही मंगल हो
''रूप'' देश में अमन-चैन हो, नहीं कहीं दंगल हो। (5)

तर्ज-ये संत पुरूष...

प्रेम गंगा में, डुबकी लगाते रहें
धार मैत्री की दिल में, बहाते रहें।।

गांठ जो भी हो मन में, उसे खोल लें
छोड़ विष को हृदय में, अमृत घोल लें
प्रेम के फूल दिल में, खिलाते रहें। (1)

हो क्षमा, साधना का, यही सार है
धर्म का मर्म समझो, यही प्यार है
प्यार का प्याला पीएं, पिलाते रहें। (2)

भूल औरों की दिल से, हमें भूलना
दूसरों के गुणों पर, हमें फूलना
आज रूठे दिलों को मनाते रहें। (3)

प्रेम में ही सदा, राम का वास है
प्रेम का तुम समझ लो, जगत दास है
''रूप'' दीये से दीया, जलाते रहें। (4)

तर्ज-प्रेम दरिया...

ओस बूंद सा जीवन तेरा, क्यों इतना इतराए
इन सांसों का नहीं भरोसा, आए या ना आएं।।

हवा भरा जैसे गुब्बारा, क्षण में ही फट जाए
जो पतंग नभ बातें करता, अगले पल कट जाए। (1)

सौ वर्षों की चिंता करता, कलका पता न पाए
नहीं देखता तेरे सर पर, मौत खड़ी मंडराए। (2)

बाती तेल दीप में जब तक, सब कोई बतियाये
तेल खतम होते ही पल में, मुर्दा घर पहुंचाए। (3)

मीठे मीठे सपने सारे, आंख खुले बिलखाए
यह सब खुली आंख का सपना, क्यों खुद को भरमाए। (4)

''रूप'' सिर्फ जितनी सांसे, प्रभु पूजा से जुड़ जाए
केवल उतनी ही ये, सांसे तेरी सफल कहाए। (5)

तर्ज-की जाना दम कोई...

झूठी माया है जगत की, झूठी माया है
इस माया के पीछे पागल बन तूं, क्यों भरमाया है।।

पीठ दिये सूरज को जब तुम, दौड़े जाओगे
जीवन भर भी दौड़ लगाओ, खुद को पीछे पाओगे
आगे छाया है तुम्हारी... (1)

प्रभु को देंगे पीठ अगर, माया होगी आगे
वह उतनी ही बढ़ जाए आगे, जितने हो तुम भागे
अंत न पाया है, माया का... (2)

जैसे कुछ भी नहीं स्वयं में, दीखे जो छाया
वैसे सचमुच कुछ भी नहीं, सपन सी सारी है माया
कंचन काया है, ऊपर से... (3)

माता मेरी, पत्नी मेरी, बांधव है मेरा
पंछी जब उड़ने को होगा, टूटेगा यह भ्रम तेरा
मन बहलाया है सभी ने... (4)

सूरज होगा सम्मुख पीछे, खुद होगी छाया
प्रभु मूरत आंखों में होगी, पीछे दौड़ेगी माया
भेद बताया है ''रूप'' ने... (5)

तर्ज-पल्लो लटके...

जीवन तेरा बीता जाए, क्या तूने कुछ भी सोचा है
बीती घड़िया न वापस आए, क्या तूने कुछ भी सोचा है।।

जो बीत रहे पल पूजा में, संतों के पावन चरणों में
दीनों-दुखियों की सेवा में, ऊंचे सच्चे आचरणों में
वे ही रात सफल कहाएं.... (1)

जो बीत रहे पल नफरत में, औरों का खून बहाने में
भोले लोगों को ठगने में, घर-घर में आग लगाने में
वे ही रात विफल कहाएं... (2)

सालों-महीनों-दिन-रातों में, इस उम्र का माप न होता है
वह कैसा जीवन जिसमें, संयम-सुमिरन जाप न होता है
कितनी सांसें प्रभु-गुण गाए... (3)

जो पर-हित-जीवन जीते हैं, वे नर नारायण बन जाते
जो पर-पीड़ा विष पीते हैं, वे नर ही शंकर कहलाते
''रूप'' तुम्हें यह सार बताएं... (4)

तर्ज-माटी री काया...

जग सुपने की माया
क्यों अपने को भरमाया रे।।

पत्नी मेरी धन मेरा
मेरी है प्यारी काया रे। (1)

तू इनके पीछे दौड़े
ये आगे ज्यों तन-छाया रे। (2)

इक बंद आंख का सपना
यह खुली आंख ही आया रे। (3)

भोगों का अंत नहीं है
हरदम धोखा ही खाया रे। (4)

कोई भी साथ न देगा
क्यों ममता महल चिणाया रे। (5)

अपना प्रभु ''रूप'' परख लो
इसने ही साथ निभाया रे। (6)

तर्ज-मत खोई...

मन की भटकन तो मिटी नहीं, ध्यानी बनने से क्या होगा
यदि ज्ञान मार्ग पर चले नहीं, ज्ञानी बनने से क्या होगा।।

देते हो पाप छुपाने को, पूजा यश नाम कमाने को
निष्काम भाव से दिया नहीं, दानी बनने से क्या होगा। (1)

जब शील धर्म को छोड़ दिया, मानवता से मुख मोड़ लिया
चांदी के टुकड़ों के बल पर, मानी बनने से क्या होगा। (2)

मिट पाई आश न इस मन की, बुझ पाई प्यास न इस तन की
औरों की प्यास बुझाने को, पानी बनने से क्या होगा। (3)

उपवास किया व्रत मौन लिया, उपदेश दिखावा ''रूप'' किया
भीतर मैला ऊपर उजला, मौनी बनने से क्या होगा। (4)

तर्ज-वह धर्म नहीं...

अब तो जागो रे, अब तो जागो रे
अब तो जागो रे।।

किरणों का रथ, सजा-सजाया
उस पर चढ़ कर सूरज आया
जगने का, संदेशा लाया। (1)

टूटा कुटिल, तिमिर का घेरा
भागा उल्टे, पांव अंधेरा
आई लेकर उषा सवेरा। (2)

सोते सोते युग हैं बीते
सपने मधुर-मधुर मन चीते
पर भीतर रीते-के-रीते। (3)

जो जागा उसने ही पाया
उसका भाग्य सदा मुस्काया
सोने वाला है पछताया। (4)

नींद उड़ाओ जागो जागो
''रूप'' मुनि कहे निद्रा त्यागो
जीवन बदलो तुम मत भागो। (5)

तर्ज-धरती धोरां...

मेरे मधुवन में मधुर मधुर, नित मलय वयारें चलती हैं
तन मन को झुलसाने वाली, लूएं हैं कोसों दूर यहां
अंगारे बरसाने वाली, किरणें भी है मजबूर यहां
डाली डाली पर कोमल कोमल, कलियां हंस हंस खिलती हैं।।

जो एक बार आ जाता है, वह वापस कभी नहीं जाता
जो एक बार फल चख लेता, वह कुछ भी और नहीं खाता
जिसने जो मांग लिया, उसकी सब मनोकामना फलती है। (1)

मेरी धरती पर धूल भरे, अंधड हैं कभी नहीं चलते
मन चाहे घूमो लेकिन, कभी यहां पर पांव नहीं जलते
मेरे आंगन में हर प्राणी को, शीतल छाया मिलती है। (2)

इन सूखे उजड़े वाड़ों को, तुम छोड़ बगीचों में आओ
माया की भूल भूलैया में तुम, अपने को मत भरमाओ
मुनि ''रूप'' भूलता जो स्वरूप को, उसको माया छलती है। (3)

तर्ज-भगवान तुम्हारे द्वारे...

झूठे जग की झूठी रचना झूठी है यह काया
सब सपने की माया।।

आंख मूंदकर कब तक, लोगे मीठे मीठे सपने
कर लो अब पहचान पराए, कौन कौन हैं अपने
दुनिया के सब रिश्ते नाते, जैसे बादल छाया। (1)

जिस तनको है पाला पोसा, मलमल कर नहलाया
मधुर मधुर पकवान खिलाए, नित सिंगार सजाया
वह ही साथ छोड़ देता है, कैसा धोखा खाया। (2)

धन धरती तक पशु बाड़े तक, नारी घर द्वारे तक
स्वजन श्मशान भूमि तक, देह चिता के अंगारे तक
माटी में मिल जाती माटी, कैसा खेल रचाया। (3)

मेरी माता पत्नी मेरी, पिता पुत्र हैं मेरे
मेरा धन प्रिय भवन है मेरा, सब घेरे ही घेरे
''रूप'' न कोई साथ चलेगा क्यों खुद को भरमाया। (4)

तर्ज-प्यासे पंछी...

दिन-रात भले कर ले कमाई, तू भाई
जो साथ चले पाई, पाई या ना पाई।

सांस-सांस सुमिरन करो रे, वृथा सांस मत खोय
ना जाने इन सांसों का फिर, आना होय न होय। (1)

दया धरम का मूल है रे, पाप मूल अभिमान
तुलसी दया न छोड़िये रे, जब लग घट में प्राण। (2)

कबीरा तेरी झोंपड़ी रे, गल कट्टे के पास
करेगा सो भरेगा भाई, तू क्यों भया उदास। (3)

चीड़ी चोंच भर ले गई रे, नदी न घटियो नीर
दान दिये धन ना घटे भाई, कह गए दास कबीर। (4)

क्षमा बडन को होत है, रे छोटन को उत्पात
कहा विष्णु को घटि गयो, जो भृगुजी मारी लात। (5)

बड़ा बड़ाई ना करे रे, बड़ा न बोले बोल
हीरा मुख से ना कहे रे, लाख हमारा मोल। (6)

तुलसी इस संसार में रे, भांत-भांत के लोग
सबसे हिलमिल ''रूप'' चालिये, नदी नाव संयोग। (7)

तर्ज-हर चीज यहां...

करले प्राणी मात्र से प्यार जुड़ जाएगा प्रभु से तार
जुड़ जाएगा प्रभु से तार, हो जाएगा बेड़ा पार।।

मन में मैत्री दीप जलाएं
सब पर करूणा रस वरसाएं
होगा खुद प्रभु का अवतार। (1)

प्रभुवर हमसे नहीं जुदा हैं
भीतर बैठे स्वयं खुदा हैं
कब हो खुद का साक्षात्कार। (2)

बस तुमको है तार जोड़ना
केवल अपना अहं छोड़ना
ले लेंगे वे खुद संभार। (3)

दिल दर्पण में जरा झांकले
प्रभु मूरत को ''रूप'' आंकले,
अंदर बाहर एकाकार। (4)

तर्ज-स्वतन्त्र...

जागो जागो निद्रा त्यागो उठो वीर संतान
समय अब आ गया है।
जो सोएगा वह खोएगा करो आत्म पहचान
समय अब आ गया है।।

महावीर तीर्थंकर ही, एक हमारे भगवान है,
एक ही है झंडा सबका, एक ही ग्रंथ, निशान है
बातें छोटी खाई मोटी, तजो मान अपमान। (1)

सब ही सबेरे जपते, मंगलकारी नमोकार हैं,
साधना है एक सबकी, एक आचार विचार है
कटुता छोड़ो दिल को जोड़ो, हो सबका सम्मान। (2)

जागो ओ साथियों, इन मजहब की दीवारों को तोड़ दो
मेरा ही सच्चा है, इस झूठे अहं को बिल्कुल छोड़ दो,
मत काटो तुम, मत बांटो तुम, कहना मेरा मान। (3)

वीर प्रभु की सारे मिलकर, जोरों से जय बोल दो,
प्रेम हो परस्पर सच्चा, भीतर की गांठे सारी खोल दो,
गूंजे घर-घर धरती अंबर ''रूप'' एकता-गान। (4)

तर्ज-क्या हो गया है...

हम बढे साधना के पथपर
सेवा का दीप जले घर-घर।।

पंथों से कोई काम नहीं
है जहां प्रेम का नाम नहीं
पल भर का भी आराम नहीं
फिर कैसे मिले वहां प्रभुवर... (1)

माटी की परंपरा होती
खुद जलने से मिलती ज्योति
गहरे जल में, होते मोती
हम डुबकी लें उसमें जी भर... (2)

अपने को सागर से जोड़ें
हम मोह तलैया को छोड़ें
मजहब की दीवारें तोड़ें
आंगन हो धरती छत अंबर... (3)

नव युग की हम शुरूआत करें
जड़ मूल्यों पर आघात करें
मुनि ''रूप'' प्रेम बरसात करें
जागे अब जन-जन में ईश्वर... (4)

तर्ज-नवकार मंत्र का ध्यान...

उतारूं पल पल आरती प्रभो
ध्याऊं प्रति दिन मैं महावीर, तोडूं कर्मों की जंजीर।।

दुनियां की तकदीर जगी, जब तुम सूरज बन कर आए
घट-घट का मिट गया अंधेरा, जगत उजाला पाए। (1)

सिद्धार्थ के कुल उजियारे, त्रिशला मां के प्यारे
जन जन की आंखों के तारे, जैन जगत रखवारे। (2)

देवों ने उपसर्ग दिए, पर प्रभु ने हंस हंस झेले
समता का वह पाठ पढ़ा कर, मेटे जगत झमेले। (3)

अनेकांत का सूत्र तुम्हारा, मिटा रहा दुविधाएं
पग पग पर मंगल करता है, हरता है विपदाएं। (4)

पर्युषण सम्वतसरी पर्व पर, मंगल मोद मनाएं
''रूप'' सदा आनंद सिंधु में, लहर लहर लहराए। (5)

तर्ज-मंदिर में कोई

गम की घड़ियों में क्यों तू घबराएं
दिन के पीछे रात है, तम के पीछे सूरज आए
ओ राही।।

फूलों के संग शूलें भी मिलती, कलियां कांटो में ही खिलती
आंसू में ही मुस्कानें पलती, आंधी-वर्षा संग संग है चलती
दुख की तपती लू चले, सुख का फिर सावन लहराए
ओ राही। (1)

कांप उठा जो भी तूफानों से, हार गया पथ की चट्टानों से
मर मर जीना भी क्या जीना, जीना सीखो तुम परवानों से
कायर मरता बार-बार, वीरों का जीना कहलाएं
ओ राही। (2)

बढ़ते जाओ बढ़ना ही है जीवन, चढ़ते जाओ चढ़ना ही है जीवन
गम की पोथी में खुशियों के सफे पढ़ते जाओ पढ़ना ही है जीवन
मंजिलें खुद चल आएगी, "रूप" तुम्हें यह राज बताएं
ओ राही। (3)

तर्ज-तेरे मेरे...

सब धर्मों का संदेश यही, हम सब आपस में प्यार करें
सब संतों का उपदेश यही, हम सब आपस में प्यार करें।।

जिस दिल में प्रेम भावना है, देवों का वास वहीं होता
जिस घर में नफरत भाव भरा, दैत्यों का वास वहीं होता
ऊंचा ही चिंतन हो मन में, हम ऊंचा ही व्यवहार करें। (1)

यदि स्नेह नहीं हो दीपक में, उसमें न रोशनी आ पाती
जो स्नेह नहीं हो अंतर में, उसमें न बंदगी टिक पाती
हर आत्मा में परमात्मा है, हम अपना घर तैयार करें। (2)

भाई-भाई में प्यार नहीं, वह भाई दुश्मन बन जाता
दुश्मन से प्यार अगर हो तो, वह भी निज परिजन बन जाता
हैं मानव मानव एक सभी, अपने मन का विस्तार करें। (3)

प्रभु को पाना है तो पहले, यह अहं छोड़ना ही होगा
मेरे ही बल पर सब चलता, यह बहम छोड़ना ही होगा
मुनि "रूप" प्रेममय बनकर हम मानवता का श्रृंगार करें। (4)

तर्ज-दिल लूटने...

पुण्य से मानव चोला पाया
भाग्य से मानव चोला पाया, सुंदर अवसर आया।।

साथ नहीं कुछ, ले जाएगा
कुछ भी साथ न लाया। (1)

पत्नी सुत धन की, ममता में
क्यों खुद को भरमाया। (2)

जो धन हरदम, साथ रहेगा
वह धन नहीं कमाया। (3)

लाभ कमाने का, मौका था
तूने मूल गंवाया। (4)

करलूं करलूं के, चक्कर में
मरने को विसराया। (5)

माटी में ही, मिल जाएगी
कंचन जैसी काया। (6)

''रूप'' सुमरले, नाम प्रभु का
जग सुपने की माया। (7)

तर्ज-रमैया बिना...

दिल को साफ करो
दिल को साफ करो अपनी भूलों को कभी न माफ करो।।

रोज सवेरे उठ कर सबसे पहले, प्रभु का जाप करो
सोने से पहले रात्रि में खुद से, खुद का माप करो। (1)

खाली बैठे बैठे मन ही मन से, मत तुम पाप करो
पल पल छिन छिन मंत्र सुमिर कर, भीतर का संताप हरो। (2)

जीवन के कोरे कागज पर अंकित, प्रभु की छाप करो
मैले घर की साफ सफाई अब तुम, अपने आप करो। (3)

अपनी गलती को जान ''रूप'' फिर, उसका पश्चाताप करो
क्या खोया क्या पाया अब तक, इसका खुद इंसाफ करो। (4)

तर्ज-पनजी मूंडै बोल

हीरों-पन्नों का मिलना है आसान
मुश्किल है समरथ संतों की कृपा।।

जात न पूछो साधु की रे पूछ लीजिये ज्ञान
मोल करो तलवार का रे पड़ी रहन दो म्यान। (1)

दया भाव हिरदे बसै रे, मुख में मीठे बैन
वे ही ऊंचे जानिये रे, जाके नीचे नैन। (2)

फूटी आंख विवेक री रे, लखे न संत असंत
जाके संग दस-बीस है रे, ताको नाम महंत। (3)

सिंहों के नहीं लेहडे रे, हंसों की नहीं पांत
लालों की नहीं बोरियां रे, साध न चलै जमात। (4)

साध-साध सब एक है रे, ज्यूं आफू का खेत
कोई-कोई तो लाल है रे, बाकी खेत का खेत। (5)

तुलसी इण संसार में रे, पांखंडिन को मान
सीधों को सीधा नहीं रे, झूठों को पकवान्। (6)

दास कहाना ''रूप'' कठिन है मैं दासन का दास,
अब तो ऐसा हो चलूं रे पांव तले की घास। (7)

तर्ज-मंदिर में कांई ढूंढती

यह तन है अनमोल तेरा यह तन है अनमोल
सोने चांदी के सिक्कों से भाई, तूं इसको मत तोल।।

लाल लाल कांई करे रे, सबके पल्ले लाल
तूं तो गांठ खोल जानी नहीं रे, ताते है कंगाल। (1)

लाली मेरे लाल की रे, जित देखूं तित लाल
इस लाली को देखन मैं चली रे, मैं भी हो गई लाल। (2)

तेरे में तेरा है सांई, ज्यों पत्थर में आग
जो साहिब से तू मिलना चाहें, तो चकमक होकर लाग। (3)

तूं भोला खोजन चला रे रहा किनारे बैठ
जिसने खोजा उसने पाया भीतर गहरे पानी पैठ। (4)

लिखा लिखी की है नहीं रे देखा देखी बात
दुल्हा दुल्हिन दोनों मिल गए, तो फीकी पड़ी बारात। (5)

ज्यों गूंगे के सैन को भाई, गूंगा ही पहचान,
त्यों ज्ञानी के सुख आनंद को भाई, ज्ञानी हो सो जान। (6)

वाणी तो है अगम की रे, कहन सुनन की नांय
जो जानत ''रूप'' बोलत नहीं रे, बोले सो जाने नांय। (7)

तर्ज-मीठो बोले है...

पुण्य के संयोग से गुरू-चरण मिलते हैं
प्रभु-कृपा से घर में मंगल-दीप जलते हैं।।

संत-दर्शन हरिकथा ये तुलसी दुर्लभ दोय
सुत दारा अरू लक्ष्मी तो, पापी के भी होय। (1)

एक घड़ी आधी घड़ी, फिर आधी में भी आध
तुलसी संगत साधु की, यह हरै कोटि अपराध। (2)

संत-दरसन कीजिए तज माया और अभिमान
जितने पग आगे धरेंगे, उतने यज्ञ समान। (3)

संत हरि का लाडला अरू, संत हरि का पूत
जो न होता संत जग में हरि भी जाता ऊत। (4)

निराकार की आरसी है, संतन की ही देह
लखा जो चाहे अलख को, तू इण में ही लखि लेय। (5)

''रूप'' महिमा संत की, कैसे बखानी जाय
जो चरण की शरण ले वह, परम सुख को पाय। (6)

तर्ज-तेरा जीवन कोरा

मेरे जैसे अज्ञानी का, कैसे होगा उद्धार प्रभो
मझधारा में ड़ोले नैया, तेरे हाथों पतवार प्रभो।।

चलती रहती है तीव्र वेग से, क्रोध हवाएं भीतर में
नित अहंकार का अजगर भी, करता रहता फुंकार प्रभो। (1)

माया ऐसी ठगिनी दिन रात, लूटती जो चेतन धन को
इस लोभ अग्नि की ज्वाला, का होता रहता विस्तार प्रभो। (2)

झूठे हैं जो रिश्ते नाते, उनको ही मान लिया सच्चा
मतलबी प्यार है दुनिया का, तेरा ही सच्चा प्यार प्रभो। (3)

अनगिन अवगुण हैं मेरे में पर, जैसा हूं, मै तेरा हूं
चाहे छोड़ो इस पार ''रूप'' या पहुंचाओ उस पार प्रभो। (4)

तर्ज-दिल लूटने...

सारा स्वारथिया संसार मतलब की सारी रिश्तेदारियां।।

माया से माया मिलै रे, कर कर लंबा हाथ
तुलसीदास गरीब की रे, कोई न पूछे बात। (1)

पैसों के सब यार दोस्त हैं, पैसा नेह-सगाई
जब न पास में पैसा हो तो, कौन बहिन या भाई। (2)

कैसा ही हो रूप रंग, अक्कल से पशु जैसा हो
सारे गुण लगते हैं उसमें, अगर पास पैसा हो। (3)

जिसे मानता तू अपना, वह और किसी का होय
और बना औरों का प्यारा, समझ सकै ना कोय। (4)

घी जंवाई ले गयो रे, बहू ले गई पूत
दास मलूका कह गए रे, रहे ऊत के ऊत। (5)

साच गयो पाताल में रे, झूठ रहयो जग छाय
पांच टके की पागड़ी रे, सात टके में जाय। (6)

रोते ''रूप'' अपने स्वारथ को, बिना न मतलब रोय
दूर गई पोशाक, निकाले स्वर्ण-दांत भी दोय। (7)

तर्ज-मंदिर में कांई

माटी री आ काया आखिर माटी में मिल ज्यावै है
क्यां रो गर्व करै रे मनवा, क्यां पर तूं इतरावै है।।

जिण तन ने मीठा माल खुवा तूं, निश दिन पाले पोसे है
अपणे एक पेट री आग बुझावण, कित्तांरा मन रोसे है
लेकिन गटका खायोड़ा नै, एकदिन भटका आवै है। (1)

आ सांसारों विश्वास नहीं, कद आती आती रूक ज्यावै
जीवन में झुकणो नहीं जाण्यो, वो जमरे आगे झुक ज्यावै
एक कदम तो उठग्यो दूजो, कुण जाणै उठ पावै है। (2)

ओतो चार दिनां रो चानणियो, सुण फेर अंधेरी रातां है
थांरी टपरी सारी चूवै है, अै सावण री बरसातां है
थोड़े जीणै रे खातिर क्यूं, भारी पाप कमावै है। (3)

जो बीत गई सो बात गई, अब पाछल खेती कर लै तूं
मुनि ''रूप'' कहै सद्गुण मोत्यां स्यूं, खाली झोली भरले तूं
जो जागै है सो पावै है, जो सोवै सो पछतावे है। (4)

तर्ज-चांद सी महबूबा...
राजस्थानी

पधारो प्यारा प्रभु जी, म्हारै आंगणै
म्हारै आंगणै, आयां काम वणै।।

रोज बुहारूं सांझ सवेरे, घर रो कचरो सारो
खड्यो बारणै वाट निहारूं, नहि दीख्यो उणियारो। (1)

माला फेरूं मंत्र ऊचारूं, सदा आरती गाऊं
दीप जलाऊं थाल सजाऊं, दरशण फिर भी न पाऊं। (2)

घूम्यो तीरथ तीरथ, पीयो घाट घाट रो पाणी
मंदिर मंदिर मूरत-मूरत, सूरत नहीं पिछाणी। (3)

एक बार दीदार हुवै तो, ओ हिवड़ो ठर जावै
''रूप'' स्वरूप मिल्यां ही अपणो, मन वांछित फल पावै। (4)

तर्ज-स्वतन्त्र

आतमा स्यूं आतमा उजाल
काल रो भरोसो नहीं भाई।।

काल काल करतां, बीत्यो कितो काल
काल रो भरोसो, नहीं भाई। (1)

आंख खोल देखंई, शरीर री संगत
करयां हुथै, के के हवाल। (2)

भूल चूक में तो चोट, लागणी है सोरी
लेवै क्यूं तूं, भाटो उछाल। (3)

देखा देखी करणे वालो, डूबै मंझधार में
कौवो चाले हंस री, जो चाल। (4)

मांयलो संसार सार एक बार देखले,
लागण लागै बाहरलो जंजाल। (5)

''रूप'' धन्य जीवन, पायो घर रो खजानो
सात पीढयां, तांई है निहाल। (6)

तर्ज-पास प्रभुवर थारै पास...

जनम सारों वातां में बीत गयो
सांस सांस में उम्र रो, सागर रीत गयो।।

दिवस गमायो खाय के, रात गमाई सोय
हीरां मोली जिंदगी, कोड्यां में दी खोय। (1)

सावधान तूं क्यूं नहीं, माथै ऊभौ काल
बांध सके तो बांध ले, पाणी पेलां पाल। (2)

सूरज ऊगे आंथमें, फूल खिले मुरझाय
आणो जाणो साथ में, जनमै सो मर जाय। (3)

खोल अबै तो आंखडी, ''रूप'' समय पर चेत
फिर पछतायां के हुसी चिड़ियां चुगसी खेत। (4)

तर्ज-सुपना की...

मनड़ा कहणो म्हारों मान, करले अपनी तूं पहचान
भटके क्युं तूं वण अणजाण, थोड़ो ज्ञान करले।

सुण कर मीठा रसिया गीत, क्युं बिगड़े हैं थारी नीत
होवे दोनूं भवां फजीत, निजरो भान करले। (1)

देखी मन गमता तूं रूप, खोदै क्यूं कर्मा रो कूप
अब तो उठ चढ़ती है धूप, अपणो ध्यान धर ले। (2)

पाकर तरह तरह री गंध, होवे भीतर आंख्या बंद
क्यूं तूं रचे झूठा फंद, अंतर स्नान करले। (3)

पाकर रसना रा तू रास, बणग्यो तूं इंद्रियाँ रो दास
खोयो चेतन रो परकास, अमृत पान कर ले। (4)

चाहिजै कोमल कोमल स्पर्श, आवै भोगां में उत्कर्ष
करले अपणो जरा विमर्श, प्रभु गुणगान करले। (5)

अब भी जाग जाग तू जाग, उठकर अपणे रस्ते लाग
''रूप'' खिल्या आपारां भाग, भव सागर स्युं तरले। (6)

तर्ज-चेतन ले ले सरणा...

जनम जनम रा पाप, श्राबकां धोयल्योकनी
एक घड़ी तो निज आतम रा, होयल्योकनी।।

सामायिक समता में, रहणो
भलो बुरो सब कुछ है, सहणो
समभावां रा बीज घर में, बोयल्यो कनी। (1)

पल पल जागरूकता, साधै
वो ही प्रभुपद नै, आराधै
सांस री डोरी में मोती, पोयल्यो कनी। (2)

ज्यूं साबण स्युं धुपे, दाग है
ज्यूं पाणी स्युं बुझे, आग है
मक्खन पावण मन री छाछ, बिलोयल्यो कनी। (3)

आ अनमोल साधना, भारी
श्रेणिक घटना इचरजकारी
''रूप'' मुनि अब शाश्वत सुख, संजोयल्यो कनी। (4)

तर्ज-हो गयो उजालो...

जागो जागो जागणै रो, अवसर आयो जागो रे
कर ल्यो जिनवर स्यूं, साची प्रीतड़ी
त्यागो त्यागो जनम-2 री, नींद अब तो त्यागो रे।।

बचपन खेल-कूद में बीत्यो, जोवनियो तो भोगां में
आवै बुढ़ापो, अणभावणो
बेटा-पोता संगी-साथी, पास न आवै रोगां में
खुद रो तनुडो भी, अणखावणो जागो। (1)

सुपनै में तो सात मंजला, ऊँचा महल चिनाया रे
आंख खुली तो, टूटी झूंपड़ी
धन दौलत पत्नी सुत प्यारा, कोई साथ न आया रे
बंद हुई जद आंखड़ी। (2)

भव सागर में ममता-ममता काल अनंतो बीत्यो रे
चौरासी रा चक्कर अब, छोड़ द्यो
धर्म कमाई करल्यो जो संसार समंदर तरणो है
''रूप'' दुनियां स्युं मुखडो मोडल्यो। (3)

तर्ज-तेजा

तप री पावन गंगा में, नहालै म्हारा मनड़ा
जनम जनम रा पातक, कट ज्यासी।।

मिनखां जोणी रो लाभ, उठाले म्हारा मनडा
पायो ओ नर भव, भमतां भमतां चौरासी। (1)

सोनेरी आभा निखरै, तपणै स्युं आग में
कालो कलुष सारो, छंट ज्यावै
तन ने तपाणे स्यु ओ, मैलो पापी मनड़ो
सौ टंच कंचन, वण ज्यासी। (2)

काया पर कुल्हाड़ी व्हाणी, काम तो है करडो हो
दिन में भी तारा, दीखण लागै
भूख आ वेरण भूंडी, फोडा घणा घाले है
डिग ज्यावै शूरवीर, संन्यासी। (3)

मुगति रा मारग च्यार, दर्शन ज्ञान हो
चरित्र चोथो तप, कहलावै
वीर प्रभु रो मारग, साचो सादो सांतरो
जो नर ले सी, अनहद सुख पासी। (4)

मनगमती चीजां देख, मुख में पाणी चालै हो
बड़ा बड़ा रा मन चल ज्यावै
''रूप'' जो करै है उज्जवल तपरी आराधना
इह भव पर भव शाबासी। (5)

तर्ज-कर्मा री जंजीरा...

परम पुरूष महावीर रो, आज हुयो निरवाण
सभी मिल दीप जलावां जी।।

तीर्थंकर महावीर रो, आज चरम कल्याण
आपां दीवाली, मनावां जी। (1)

लगभग सोलह पोर तक, वरसी रस बौछार
किन्तु अचानक के हुयो, थमगी अमृत धार। (2)

च्यारां कांनी देखल्यो, छायो घोर अंधार
हाथ स्यूं हाथ सूझे नहीं, कुण करसी उजियार। (3)

प्रभुवर म्हारा छोड़ग्या, भगतां नै मझधार
गौतम बिलखै बाल ज्यूं, कुण देसी जीकार। (4)

लाखां दीयां री जली, जगमगती रे कतार
फैल्यो घर धर च्यानणो, गलियां सब गुलजार। (5)

ओ तन माटी रो दियो, मनड़ो बाती पिछान
संजम तेल उंडेल ल्यो, करल्यो अंतर ज्ञान। (6)

बाहर ज्यूं अब मांयलो, मिट ज्यावे अंधियार
''रूप'' मुनि जद ही हुसी अपणो बेड़ो पार। (7)

तर्ज-सपना...

महापर्व संवत्सरी का दिन आया
क्षमा प्रेम का दरिया देखो लहराया।।

जी भरकर आज नहाएं, तन-मन पावन हो जाएं
जप-तप की पावन, धारा में सारे पाप बहाएं
शुभ अवसर आया... (1)

मानव गलती का पुतला, पग-पग पर जाता फिसला
वह देव पुरूष बन जाता, यदि गिरकर फिर से सम्हला
संतों ने गाया... (2)

जो भी गांठे हैं भीतर, खोले मन सरल बनाकर
अंदर रहने पर गांठे, वे बन जाती हैं कैंसर
छोड़े छल माया... (3)

भूलें औरों की भूलें, समता-झूले में झूलें
चुन-चुनकर सदगुण-मोती प्रभु चरणों को हम छू लें
''रूप'' ने समझाया... (4)

तर्ज-रेश्मी सलवार

सब का उपकार किया तुमने, अपना उपकार ही भूल गए,
सुख का संसार दिया सबको, अपना संसार ही भूल गए।।

ओढ़े रहते अपने ऊपर, तुम सारे जग की चिन्ताएं
सोते जगते है एक ध्यान, अब उनको कैसे सुलझाएं
दुनियां का भार उतार दिया, बस अपना भार ही भूल गए। (1)

अपने पुरखों का नाम किया, रोशन तुमने सचमुच भारी
जो भी सोचा कर दिखलाया, पर नहीं कभी हिम्मत हारी
सबको आधार दिया तुमने, अपना आधार ही भूल गए। (2)

करने को पूजा पाठ भजन कीर्तन, मन्दिर भी बनवाए
लाखों का देकर दान अरे, तुम दानवीर भी कहलाए।
सबका उद्धार किया तुमने, अपना उद्धार ही भूल गए। (3)

अब होना सावधान जीवन में, जगने की आई बेला
आंखे अपनी तू खोल ''रूप'', सब ओर उजला है फैला
सबका निस्तार किया तुमने, अपना निस्तार ही भूल गए। (4)

तर्ज-दिल लूटने वाले

पूज्या प्रवर्तिनी साध्वी मंजुलाश्री जी के भजन

करूणा के अवतार दया के सागर श्री महावीर
जगत की हरने आए पीर
छेड़ा नव संग्राम हाथ में लिए अहिंसा तीर
जगत की हरने आए पीर।।

आत्म विजय का पथ दिखलाया सबको नई दिशा दी
ठुकरा राज सिंहासन राजतंत्र की जड़ें हिला दी
ऐसे वीर धीर योद्धा की अद्‌भुत थी तस्वीर। (1)

विश्व मैत्री का सबक सिखाया, अपने ही जीवन से
जीव मात्र पर समता रस बरसाया था कण-कण से
पशुबलि दासप्रथा की तोड़ी प्रभुवर ने जंजीर। (2)

जातिपंथ का भेद मिटाकर व्यापक धर्म बताया
हिंसा आडम्बर मिथ्याचारों को दूर भगाया
धर्मद्वार सबके खातिर है कौन गरीब अमीर। (3)

पर्यावरण-शुद्धि आतंकवाद से हो छुटकारा
महावीर के सिद्धांतों का यदि ले विश्व सहारा
वैर विरोध मिटे आपस का पग-पग शांति समीर। (4)

उपकारों से उऋण होना प्रभु आसान नहीं है
पूजा अभिवादन कैसे कर पाएं ज्ञान नहीं है
तन मन प्रभु पथ पर अर्पित बरसादो करूणा नीर। (5)

तर्ज-गगन जमीं

ये नाम न्यारे न्यारे, भगवान एक ही है
सब भेद भाव झूठे, इंसान एक ही है।।

यह धर्म है हमारा, यह धर्म है तुम्हारा
यह मजहबी लड़ाई, ईमान एक ही है। (1)

ये शास्त्र हैं हमारे, ये शास्त्र हैं तुम्हारे
गीता हो वीरवाणी, सद्ज्ञान एक ही है। (2)

ये संत हैं हमारे, ये संत हैं तुम्हारे
सब बीतराग प्रभु की, संतान एक ही है। (3)

यह पंथ है हमारा यह पंथ है तुम्हारा
दुकान न्यारी न्यारी सामान एक ही है। (4)

जड़ एक है हमारी, शाखाएं न्यारी न्यारी
माली जुदा जुदा हैं, उद्यान एक ही है। (5)

तर्ज-इतिहास गा रहा है...

कोई आज जा रहा है, कल कोई जाने वाला
हम हैं सभी मुसाफिर, दुनियां है धर्मशाला।।

नीरोग तन हमारा, परिवार धन हमारा
पागल बना रही है, हमारे पन की हाला। (1)

है अप्सरा सी नारी, संतान प्यारी प्यारी
संसार का यह घेरा मकड़ी का एक जाला। (2)

कैसा अखंड शासन, सोने का यह सिंहासन
जब तक खुली है आंखें, फिर राम रखवाला। (3)

प्रभुनाम है अनूठा, सब काम दाम झूठा
आराम से जपो अब प्रभु नाम मंत्र माला। (4)

तर्ज-संकल्प एक ही हो...

आज मैंत्री के मधुर स्वर गुन गुनाने दो
शांति सह-अस्तित्व के अब गीत गाने दो
गुन गुनाने दो, हमें अब गुन गुनाने दो।।

ऊंचा कौन, कौन है नीचा, हैं सभी इंसान
मानव मानव के घट घट में, वसता है भगवान। (1)

हिंदू कौन, कौन है मुस्लिम, कौन सिख सरदार
भाई भाई हैं हम सारे, एक खून की धार। (2)

विश्वबंधुता के प्रांगण में, क्या निर्धन धनवान
शिक्षित और अशिक्षित गोरे, काले एक समान। (3)

वैष्णव बौद्ध जैन ये सारे, ऊपर के उपचार
सत्य अहिंसा ही हम सब के, धर्मों का आधार। (4)

जाति धर्म भाषा को लेकर, क्यों होते हम दूर
दिल को दिल से समझ मिलें हम, गले अहं को चूर। (5)

समता का साम्राज्य अटल हो, छूआछूत का अंत
शुद्ध विचार पवित्र आचरण से, हो मानव संत। (6)

राहें अलग अलग हैं चाहें, मंजिल सबकी एक
कितने दिन का यहां बसेरा, जीवन जीलें नेक। (7)

तर्ज-जयतु जय...

बहादे धार मैत्री की, वही त्यौहार होता है
फटे दिल जोड़ने वाला, मनुज अवतार होता है।।

कभी होली, कभी राखी, दीवाली, दशहरा आता
नहीं मनकी मिटी दूरी, सभी बेकार होता है। (1)

मनुज हैं भूल का पुतला, कि भूलें हो ही जाती हैं
भूल करके जो पछताऐ, वह नर सरदार होता है। (2)

आ गया पर्व का राजा, महात्यौंहार पर्युषण
खुले गांठे अगर मनकी, तो बेड़ा पार होता है। (3)

खुदा को खोजते बीते, अनेकों वर्ष जीवन के
खुदा खुद ही मिले दिल में, जो असली प्यार होता है। (4)

तमन्ना है अगर सच्ची, रहेगी मिल के ही मंजिल
तड़पने वालों को निश्चित, खुदा दीदार होता है। (5)

पराया दर्द जो समझें, वहीं भगवान का बेटा
काम आए जो अवसर पे, वह असली यार होता है। (6)

नहीं नुकसान का सौदा, धर्म में जीत हैं केवल
नफा जिसमें नहीं वह, मूर्ख का व्यापार होता है। (7)

तर्ज-मेरा दिल लूटने...

हर चीज यहां नकली, धोखे में मत आना
अंगारों पर कजली, धोखे में मत आना।।

खाना नकली, पीना नकली, दवा मिलावट वाली
फल भी नकली, फूल भी नकली, रूपया भी है जाली। (1)

बंगला नकली, कपड़ा नकली, जेबर भी है नकली
मोटरकार मशीनें नकली, कौन यहां पर असली। (2)

नौकर नकली, मालिक नकली, पिता पुत्र भी नकली
नेता नकली, जनता नकली, नकली हड्डी पंसली। (3)

चेला नकली, गुरू भी नकली, सारे रिश्ते झूठे
धर्म भी नकली, ध्यान भी नकली, योगी बड़े अनूठे। (4)

डिग्री नकली, सर्विस नकली, पासपोर्ट है नकली
भीतर है कुछ, बाहर है कुछ, किस पर करें तसल्ली। (5)

तर्ज-नखराली देवरियो...

प्रभु कर दो बेड़ा पार, तुम्हारे भक्त पुकार रहे
दुख दर्द भरा संसार, इसमें कितने कष्ट सहे।।

जब जब भीड़ पड़ी भगतों में, प्रभु ने आ संभाला
तोड़ बेड़ियां चंदन सती की, खोला सुभद्रा का ताला
दिया घोर कलंक उतार, किस किस का हम नाम गहें। (1)

बनी हुई पाषाण अहिल्या, को जीवित कर डाला
शरणागत सुग्रीव नरेश्वर, का था संकट टाला
किया शबरी का उद्धार, भवों के सारे पाप बहे। (2)

मित्र सुदामा का दारिद्रय, हरण कर दया दिखाई
द्रुपद सुता का चीर बढ़ा कर, प्रभु ने लाज बचाई
मीरा की भक्ति अपार, विपदा के सब पहाड़ ढहे। (3)

शरणागत की रक्षा करना, है प्रभु काम तुम्हारा
डूब रहे भव सागर में, लोगों को दिया किनारा
जो जीवन से गए हार, उन्हें दे दो अब प्राण नए। (4)

तर्ज-आ लौट के...

मौत सर मंडरा रही है, किन्तु मन मरता नहीं
हो रही तैयार अर्थी, प्रभु स्मरण करता नहीं।।

यह अमोला मनुज चोला, मिला है सद्भाग्य से
कर दिया मेला अगर तो, धोने से धुलता नहीं। (1)

दुनिया भर की ऐश कर, जीवन समूचा खो दिया
घिर गया तन रोग से फिर, भी यह मन भरता नहीं। (2)

मुंह पर है राम तेरे, बगल में छूरी छिपी
धर्म का कोरा दिखाबा, पाप को हरता नहीं। (3)

हाय घोड़ा दिवस थोड़ा, एक भागम भाग है
तू प्रभु से मिलन खातिर, एक डग भरता नहीं। (4)

तर्ज-होश में आता...

जिंदगी का महल मनवा, देख ढह रहा
बदलता इतिहास सब को, साफ कह रहा।।

हो भले जीवन यह छोटा, सुख से जीलें हम
जहर भी पीना पड़े तो, हंस के पी लें हम
व्यर्थ की चिंता में पागल, क्यों तू दह रहा। (1)

आपदाएं चौतरफ से, आ रहीं प्रति दिन
समझता सुख निकलता दुख, व्यथित होता मन
वीर वह समभाव से, जो कष्ट सह रहा। (2)

हो पतंग भले गगन में, हाथ में हो डोर
जल गया मन दीप फिर, चाहे अंधेरा घोर
संभलजा अब भी तू क्यों, गफलत में रह रहा। (3)

आज ही करले जो करना, कल का क्या विश्वास
है नहीं पल का भरोसा, क्यों लगाएं आस
अंजलि के नीर ज्यों, यह श्वास बह रहा। (4)

तर्ज-मेरा जीवन कोरा...

धर्म को खतरा, नकलची धर्म वीरों से
साधुता बदनाम, मायावी फकीरों से।।

धर्म ओट में खोट छुपाना, है बड़ा आसान
शोषण अत्याचार माफ है, कर दो थोड़ा दान। (1)

हाथों में हैं बरछी भाले, मुंह पे रहता राम
मानवता का है कलंक यह, धर्म नाम बदनाम। (2)

धर्म और भगवान नाम पर, होते कितने पाप
इंसानों का खून बहाकर, चाहते हैं इंसाफ। (3)

कितना महंगा धर्म आज का, धनवानों का राज
निर्धन को अधिकार नहीं है, कैसा धर्म समाज। (4)

धर्म स्थान में भी आडम्बर, और दिखावा आज
समता सात्विक जीवन की, है मंद मंद आवाज। (5)

धर्म ग्रंथ सारे ही अच्छे, पर इससे क्या लाभ
कैसे हैं आचरण आपके, दे दो सही जवाब। (6)

दान पुण्य चाहें न करें हम, रटें न प्रभु का नाम
न्याय नीति का जीवन जीलें, है आराम हराम। (7)

तर्ज-जयति वीणा वादिनी...

धर्म वीरों! धर्म को बदनाम, करना छोड़ दो अब
लद चुका युग दान का, अहसास करना छोड़ दो अब।।

पाप एरण का छुपाने, दान सूई का किया
बैठ कर आफिस दुकानों, पर सदा धोखा दिया
दान की ले ओट शोणित, पान करना छोड़ दो अब। (1)

रात दिन शोषण किया जिनका उन्हीं पर यह दया,
चटा जूठी पत्तलें दानी बनें यह पथ नया
मनुज हो तो मनुज का अपमान करना छोड़ दो अब। (2)

इन पड़ौसी भाईयों को, हीन यों समझो नहीं
आज जो हैं हीन, कल ऊंचे बने तुम से कहीं
अर्थ सत्ता शक्ति का, अभिमान करना छोड़ दो अब। (3)

कर्म का जो देवता क्यों पंगु उसको कर रहे
क्यों भिखारीपन बढ़ाकर देश में विष भर रहे
जो किया सहयोग उसका मान करना छोड़ दो अब। (4)

जाति भाषा, प्रांत को लेकर कटे क्यों जा रहे
साम्प्रदायिक कलह से तुम कौन सा हल पा रहे
शांति सह - अस्तित्व समता से हृदय को जोड़ लो अब। (5)

तर्ज-स्वतंत्र...

धर्म की बातें सरल है, पर निभाना ही कठिन है
सरल पूजा पाठ जीवन में, रमाना ही कठिन है।।

प्राण जाए प्रण न जाए, गा रहे नित मंदिरों में
वचन खातिर राम ज्यों, वनवास जाना ही कठिन है। (1)

दौड़ते हैं देव दानव और मानव अमृत पाने
निगल विष को किन्तु शिव ज्यों मुस्कुराना ही कठिन है। (2)

सत्य पर दृढ हरिश्चन्द्र नरेंद्र की घटना सुनाते
किन्तु खुद को उस कसौटी पर चढ़ाना ही कठिन है। (3)

तोड़ने जड़ता धर्म की वीर प्रभु ने दी चुनौती
चंदना सी दमित कन्या को उठाना ही कठिन है। (4)

तर्ज-शपथ लेना...

पराया दर्द जो समझे उसे इन्सान कहते हैं
किसी के काम जो आए उसे भगवान कहते हैं।।

है इन्सां गल्ती का पुतला कि गल्ती हो ही जाती है
जो गल्ती करके पछताए... (1)

ओ इन्सां! तू संभल कर चल यह दुनियां एक उलझन है
जो ठोकर खा संभल जाए... (2)

मानव की तरह पशु भी जहां में पेट भरते हैं,
जो नर अवसर पे गम खाए... (3)

कभी धनवान है कितना कभी इंसान निर्धन है
कभी सुख है, कभी दुख है, इसी का नाम जीवन है। (4)

तर्ज-पराया दर्द जो समझे उसे इंसान कहते हैं

बाना नहीं जीवन को बदलना है साधना
धुएं सा जीवन मौत है, जलना है साधना।।

मूंड मुंडाना बहुत सरल, मनका मुंडन आसान नहीं
व्यर्थ बभूत लगाना तन पर यदि भीतर का भान नहीं
जग की पीड़ा में मोम-सा पिघलना है साधना। (1)

मंदिर में हम बहुत गए पर मन यह मंदिर नहीं बना
व्यर्थ शिवालय में जाना जो मन शिव-सुंदर नहीं बना
पल पल समता में इस मनका ढलना है साधना। (2)

सच्चा पाठ तभी होगा जब जीवन में पारायण हो
सांस सांस धड़कन धड़कन से जुड़ी हुई रामायण हो
प्रभु प्रेम पंथ पर जन जन का चलना है साधना। (3)

तर्ज-गिरना नहीं है...

बाना भी बड़ा जरूरी बाने की ही पूजा होती
बाती के बिना नहीं आती लोगों दीपक में ज्योति।।

कहते जो मन चंगा है, कट्ठौती में गंगा है
लेकिन दुनिया की नजरें बिना सीप क्या जाने मोती। (1)

बाना संतों की शोभा, विद्या ग्रंथों की शोभा
पथ से गिरते साधक को बाना भी बन जाय चुनौती। (2)

बाने से श्रद्धा पाते, बाने से रोटी खाते
बाने के हटते ही बन जाती है सब बातें थोथी। (3)

चोले का पग पग स्वागत चाहे कैसा भी हो मत
भीतर में फल कैसा छिलका ही इसकी बने कसौटी। (4)

बाने से दुनिया डरती, डरती फिर क्या नहीं करती
देवों की पत्थर में हो प्राण प्रतिष्ठा तभी मनौती। (5)

बाने की लाज बचाना, माया में मत फंस जाना
कैसा संन्यास संत बन मांग रहे जो आज फिरौती। (6)

तर्ज-टाई लगा के....

जीवन चमकाने वाली विपदाओं को गले लगाओ
पग पग पर देख उतार चढ़ाव न मन का धैर्य गंवाओ।।

खुद ही बन दीप जलो तुम, गहरा यह तम निगलो तुम
रोशन हो जाएगा यह जीवन थोड़े से संभलो तुम। (1)

पौरूष का सूर्य उगाओ कुहरे को दूर भगाओ
जीवन की हार गए जो बाजी उसको पुनः लगाओ। (2)

औरों को मत कुचलो तुम अपना जीवन बदलो तुम
सौरभ फैलेगी अपने आप बनकर फूल खिलो तुम। (3)

मन में सौहार्द जगाओ मत्सरता मत पनपाओ
अपने हित बहुत किया परहित साधन में समय लगाओ। (4)

पल पल सत्कर्म करो तुम, फल की कामना हरो तुम
जीवन के दुर्गम चौराहे पर खुलकर विजय वरो तुम। (5)

तर्ज-टाई लगाके मानो...

माटी है न्यारी न्यारी पर जान एक ही है
गोरी या काली चमड़ी इंसान एक ही है।।

यह देश है हमारा यह देश है तुम्हारा
क्यों बांटते हो धरती आसमान एक ही है। (1)

यह जाति है हमारी, यह जाति है तुम्हारी
छोटे दिलों की बातें, कि जहान एक ही है। (2)

हिन्दी हमारी बोली, उर्दू तुम्हारी बोली
दिल की है एक भाषा, अरमान एक ही है (3)

यह सभ्यता हमारी, यह सभ्यता तुम्हारी
क्यों भूलते हो मनु की संतान एक ही है। (4)

राजा हो या भिखारी, पंडित हो या पुजारी
मरते समय सभी के शमशान एक ही है। (5)

तर्ज-संकल्प एक ही हो...

अपने भीतर भगवान खड़े मंदिर के द्वार खुले न खुले
आत्मा का साक्षात्कार हुआ कल्पित भगवान मिले न मिले।।

क्यों ढूंढ रहे हो दर दर में वह भीतर ही मिल जाएगा
जो जितना जल में पैठेगा बस वही रत्न ले आएगा
अंतर की आंखें खुली अगर बाहर की पलक खुले न खुले। (1)

धरती की खाक छान देखा खोजा उसको अंबर में भी
जो नहीं मिला पैगबंर में वह मिल जाता है नर में भी
जब स्वयं स्वयं में तृप्त हुए औरों के शीश डुले न डुले। (2)

जिसको आलोकित करना था वह अब तक भी उजला न हुआ
इस नश्वर तन को धो-धो कर पावनता की दे रहे दुआ
भीतर की ज्योति जली फिर क्या बाहर की ज्योति जले न जले। (3)

खुद से अनजान बनें औरों से वरदानों की मांग करें
औरों के घर की बिजली से अपने घर का अंधेर हरें
आत्मा के स्वप्न फले सारे मन के अरमान फलें न फले। (4)

तर्ज-दिल लूटने वाले...

हो गई है भोर अब क्यों सो रहे
कीमती यह जिंदगी क्यों खो रहे।।

मुस्कुराने के लिए हैं जिंदगी
आंख भर भर व्यर्थ ही क्यों रो रहे। (1)

मनुज का अवतार सुख का द्वार है
मान कर क्यों भार इसको ढो रहे। (2)

मिलेगा नवनीत कैसे बंधुओं
दूध बदले नीर आप बिलो रहे। (3)

जो बिछाते शूल औरों के लिये
खून से वे वस्त्र अपने धो रहे। (4)

पार कर मझधार की कठिनाइयां
क्यों किनारे आज नाव डुबो रहे। (5)

हम न मरने के लिए आए यहां
जीत मृत्यु को अमर हम हो रहे। (6)

तर्ज-दिल के दरिया में...

जो चाहो इंसानो! इस दुनियां में ऊंचा नाम
कर दिखलाओ ऊंचा काम।
श्रम की पूजा करना सीखो है आराम हराम
कर दिखलाओ ऊंचा काम।।

राम नाम की माला जपते, जंगल में जाकर तप तपते
त्याग और वैराग्य भाव के जिनके अगणित पोस्टर छपते
ऐसे जन ही करते अक्सर राम नाम बदनाम। (1)

दान पुण्य चाहे न करो तुम, जन-जन का संताप हरो तुम,
समता मैत्री सदाचार से जीवन का घट नित्य भरो तुम,
पर उपकार परायण जन ही कहलाते श्रीराम। (2)

सेवा का व्रत लेकर आते जैसे तैसे कुर्सी पाते,
सता सता भोली जनता को फिर तो पैसे खूब कमाते,
सेवा बदले शोषण करने वालों तुम्हें सलाम। (3)

पुंजीपतियों सत्ताधीशों नेता और धर्म के ईशो
अपना अपना फर्ज निभाओ, आश्रित लोगों को मत पीसो,
बलिदानी जीवन से पूजे जाते मनुज तमाम। (4)

तर्ज-कितना बदल...

है क्या भरोसा जिंदगी का, क्यों कहो इठला रहे।
जाना सभी को एक पथ से, क्यों किसी पर छा रहे।।

जो भी खिला मुरझाएगा, जो भी जला बुझ जाएगा
है चार दिन की चांदनी जिसके लिए अकुला रहे। (1)

हैं चल दिए श्रीराम भी रावण चले घनश्याम भी
महावीर गौतम बुद्ध गांधी भी यही बतला रहे। (2)

किसका चला अभिमान है, किसका अमर सम्मान है
सब रंक राजा मूर्ख पंडित, एक क्रम में आ रहे। (3)

किससे लड़ाई कर रहे, किस के लिए घर भर रहे
अपने पराए हैं न कोई, व्यर्थ धोखा खा रहे। (4)

जागो यही अवसर जगाओ मित्रता, मन्मथ भगाओ
है सार जीवन का सही, पथ क्यों नही अपना रहे। (5)

तर्ज-ऐ दिल मुझे

मुंह पर है प्रभु का नाम, हाथों में छूरी है
कैसे मिल पाए राम, जब भक्ति अधूरी है।।

कैसा नकली जीवन, कुछ समझ नहीं आए
भीतर है पापी मन, बाहर कुछ दिखलाए
है तप तपना बेकाम, यदि प्रभु से दूरी है। (1)

मंदिर में पूजा पाठ, घर में तकरार चले
अंतर में घुल रही, गांठ, शब्दों में फूल खिले
खुश कैसे हो घनश्याम, दिल दुविधा पूरी है। (2)

थोथे आडंबर में पैसे को फूंक रहे
क्या धरा मुकद्दर में सेवा से चूक रहे
जीवन में व्यसन तमाम, मन की मजबूरी है। (3)

कर दिया जरा सा दान, बस नाम कमाया है
कितनों की ले ली जान, कुछ जोड़ लगाया है
लेकर हराम के दाम क्या दान जरूरी है। (4)

तर्ज-ऐ मेरे दिले...

सब धर्मों का समता ही सार है
दुनिया को जीतने का प्रेम हथियार है।।

जिनकी आंखो में नफरत, उनको नफरत ही मिलती है
जिनके दिल में है प्रेम, वहां मुरझी कलियां खिलती है
जुड़ जाता पल में, भावना का तार है। (1)

है मानव की क्या बात, प्रेम से पशु भी जीते जाते
पाकर मालिक का प्रेम, नहीं क्या कुत्ते पूंछ हिलाते
प्रेम का प्यासा सारा संसार है। (2)

ये पेड़ और पौधे भी, प्रेमभाव से दुगुने फलते
मस्ती से दीपक राग, अगर गाओ तो दीपक जलते
बरसाती मेघ प्यारी, राग मल्हार है। (3)

जितने दुनियां में संत, प्रेम का पाठ पढ़ाए सारे
जितने भी पंथ ग्रंथ, और मंदिर मस्जिद गुरूद्वारे
प्रेम ही सबका, मौलिक आधार है। (4)

तर्ज-सौ साल पहले...

शपथ लेना तो सरल, है पर निभाना ही कठिन है
साधना का पथ कठिन है।।

शलभ बन जलना सरल है दीप की जलती शिखा पर
स्वयं को तिल तिल जलाकर दीप बन जलना कठिन है। (1)

मेघ बनना तो सरल है जलधि से पानी चुराकर
पर्वतों की चीर छाती स्रोत बन ढलना कठिन है। (2)

सरल है संन्यास लेकर जंगलों में तन सुखाना
किन्तु मन को साध कर गृहवास में चलना कठिन है। (3)

शिखर पर चढ़ना सरल है पांव की ताकत लगाकर
पर ढलाई पर फिसलते चरण का रूकना कठिन है। (4)

वृक्ष बन फलना सरल है पा सहारा धरणि तल का
फूल बन निज को मिटा सौरभ लुटाना ही कठिन है। (5)

तप तपस्या के सहारे इन्द्र बनना तो सरल है
स्वर्ग का ऐश्वर्य पाकर मद भुलाना ही कठिन है। (6)

ठोकरें खाकर नियति की युगों से जी रहा मानव
है सरल आंसू बहाना मुसकुराना ही कठिन है। (7)

तर्ज-छन्द

तन्मय होकर सुनलो अपनी आत्मा का आह्वान
करना चाहो जो कल्याण।।

बहुत बहुत उपदेश सुने हैं, कितने कितने पंथ चुने हैं
अपने को ऊंचा दिखलाने, ताने बानें खूब बुने हैं
हुआ न अब तक इनसे लेकिन, जीवन का उत्थान। (1)

पूजा करते जीवन बीता, तीर्थस्थान से भी घट रीता
क्या सामायिक संत समागम, जो न स्वयं के मन को जीता
अन्तर्मुखता ही है धार्मिक, जीवन की पहचान। (2)

पुस्तक पढ़ पंडित कहलाएं, दान पुण्य से पाप छिपाए
इज्जत मान प्रतिष्ठा पाने, धर्मशाल पर नाम खुदाएं
हो सकती है देर नहीं, अंधेर अरे इंसान। (3)

मन मंदिर को स्वच्छ बनाओ, समता का तुम दीप जलाओ
शोषण संग्रह और क्रूरता, विषम भाव को दूर भगाओ
करूणा मैत्री वत्सलता, सौहार्द स्वयं भगवान। (4)

तर्ज-कितना बदल...

किस पर करते नाज बंधुओ! नश्वर काया है,
जगत की झूठी माया है।।

सुबह जिसे खिलते देखा था सांझ वहीं मुरझाया
गीत जहां गाए जाते थे, वहां रूदन है छाया
चार दिनों की क्षणिक चांदनी ने भरमाया है। (1)

राजाओं का राज गया है, गई साथ ठुकराई
कब तक बनी रहेगी, बोलों सेठों की सेठाई,
मालिक को मजदूर बना युग ने दिखलाया है। (2)

जिसका जिससे जितना नाता, उतना वह दुख पाता
जो जितना निर्मोही वह सुख, की सरिता में नहाता
किसने इस दुनिया में अब तक, साथ निभाया है। (3)

जो सोता है वह खोता है, जगने वाला पता
विषमय जग को अमृतमय करके, वह सदा दिखाता
आंख मूंद सोचें हमने, क्या खोया पाया है। (4)

तर्ज-ऋषिराज तुम्हारे...

हम अपनी मस्ती में पागल जलने वाले जला करें
वहे प्रेम की धारापल पल बुरा करे कोई भला करें।।

दूसरे के हाथ का बनकर खिलौना क्यों जिएं
अपने दर्पण में अपना मुख देख देखकर चला करें। (1)

रोशनी अपनी हमारे पास रहती रात दिन
हमें पड़ा क्या दीपक के नीचे अंधेरा पला करें। (2)

आम और बबूल दोनों एक धरती पर उगे
लेने वाले मनुज चतुर हैं फलने वाले फला करें। (3)

जानकर गो-दूध से नफरत करे कोई अगर
जी भर कर वे आक धतूरे से निज आंखे मला करें। (4)

खुली पुस्तक सा सहज औ स्पष्ट जीवन है अगर
फिर क्या चिंता अपने और पराए सारे छला करें। (5)

तर्ज-मुक्त छंद

जो न कर सकते भलाई तो बुराई क्यों करें
है अगर मुश्किल सफाई, गंद से घर क्यों भरें।।

दूसरों के देख गुण मन में जगे सद्भावना
जो न कर सकते बड़ाई, जलन ईर्ष्या तो हरें। (1)

है बड़ा आसान देना गालियां हर एक को
जो न गुस्सा पी सकें दुर्वचन तो ना उच्चरें। (2)

मधुर भाषी जीत लेता दुश्मनों के भी हृदय
मधुर भाषण दूर, क्यों व्यवहार में कटुता भरें। (3)

जो करेगा वह भरेगा यह कुदरती फैसला
हम किसी को क्यों सताएं सीख यह दिल में धरे। (4)

मेहरबानी कर न सकते व्यर्थ है नाराजगी
सहज समता धर्म कर स्वीकार भव सागर तरें। (5)

तर्ज-फिर क्या वन...

मझधार में है किश्ती पगले संभल के चलना
जो होश खो दिया तो आखिर में हाथ मलना।।

छोटी सी भूल का भी होता नतीजा भारी
चिनगारी आग बनती, पड़ता है अंत जलना। (1)

कर्जा भले पिता का सिर दर्द है भयंकर
कर्जे से दब मया जो मुश्किल है उसका फलना। (2)

थोड़ी सी हो बीमारी तब ही इलाज बाजिब
बढ़ने के बाद उससे होता कठिन निकलना। (3)

बन सावधान रहना, दुश्मन अगर है कोई
है सांप का क्या छोटा, उससे सदा ही टलना। (4)

तर्ज-जीवन खतम...

कांटों से गुजरी हैं जीवन की राहें
खतरों को देख सम्मुख क्यों घबराएं।।

अमृत से पहले विषपान सीखें
खुशियों में हंसने वाले दुख में क्यों चीखें
सुख दुख का जोड़ा है मन समझाएं। (1)

सचमुच इस दुनियां में जीना कठिन है
पग पग पर अपमानों को पीना कठिन है
थोथे ये रिश्ते फिर भी हंस हंस निभाएं। (2)

हंसते हैं लोग पैदल घोड़े चढ़े को
बख्शे ना मूरख और पढ़े को
औरों की बातों का असर न लाएं। (3)

आती जो विपदाए जीवन बनाती
चोटों से हीरे में चमक नई आती
खोने वाला ही रघु ज्यों सब कुछ पाए। (4)

तर्ज-अंबवा डाली पै...

हमें मिल गई है मंजिल अब और कुछ न पाना
क्यों तीर मारते हैं जब सध चुका निशाना।।

दर-दर पै सर झुकाया, पर हाथ कुछ न आया
मन दीप जल गया फिर किसको कहो मनाना। (1)

जन्मों से भटकते हैं, जिसके मिलन की धुन में
उस आत्म देवता का अब मिल गया ठिकाना। (2)

जिस जायके के आगे सारे ही रस हैं फीके
वह सोमरस की प्याली, होठों से मत हटाना। (3)

जो छू गई हृदय को आवाज वह सुनी है
बस बहुत सुन लिया है अब और ना सुनाना। (4)

छवि हो गई है अंकित जिसकी झलक अमिट है
उस रूप में हैं खोए, हमको नहीं जगाना। (5)

तर्ज-हमें रास आ गया है

करते किसका अभिमान अयि दुनियां वालो
होता है पतन महान गर्व से मतवालों।।

रावण का इतिहास बांच लो होकर के तल्लीन
सोने की वह लंका हो गई औरों के आधीन। (1)

हिटलर मुसोलिनी जैसों का चूर्ण हुआ अभिमान
औरों पर की सदा हुकूमत भूल स्वंय का भान। (2)

चमड़ी की सुंदरता पर होता सबको ममकार
गर्व रूप का कब तक चलता उपनय सनत्कुमार। (3)

सिद्धसेन से आचार्यों में विद्या का उन्माद
बोध दिया गुरू वृद्धवादी ने कर छोटा संवाद। (4)

तन-धन यौवन है सब झूठे, झूठा है संसार
अंन्तर्द्रष्टा बन सम्यक् दर्शन का लो आधार। (5)

तर्ज-बरसों है जलधर नीर

पल-पल मौत बुलाती है कब किससे शर्माती है
धड़क रही क्यों छाती है सबके घर पर आती है।।

आता है वह जाता है, फूला वह मुरझाता है
जनमा वह मर जाएगा, पीछे सब रह जाएगा
मौत न कभी अघाती है। (1)

निर्धन धनवानों के घर, राजा ओर भिखारी पर
एक छत्र साम्राज्य है अनुशासन अविभाज्य है,
सबको गोद सुलाती है। (2)

मौत किसी की देख के, रह जाते सब ठगे ठगे
मरघट तक वैराग है फिर वापस अनुराग है
जलती रहती बाती है। (3)

मौत देख घबराना क्या, ऊब जगत से जाना क्या
जन्म मरण की परंपरा, क्या है इसमें सार भरा
धर्म सभी की थाती है। (4)

तर्ज-धरती गीत सुनाती...

जन्म मरण का पग-पग पर संताप है
सत्य शोध से समाधान मिल जाता अपने आप है।।

दुनियादारी के चक्कर में फंस-फंस कितने चले गए
इस मायावी दुनियां से वे अनजाने ही छले गए
उनका जीवन उनको ही अभिशाप है। (1)

किया पलायन इस दुनिया से उनका भी उद्धार नहीं
आंख मूंदकर किया अंधेरा उसमें भी कुछ सार नहीं
फंसना और पलायन दोनों पाप है। (2)

सत्य न मिलता मंदिर में जंगल घर धर्मस्थानों में
धर्मग्रंथ में मिले अगर तो मिल जाए मयखानो में
सत्य वहीं जीवन में जिसकी छाप है। (3)

भिन्न भिन्न है मार्ग सत्य के भिन्न भिन्न आकार लिए
भिन्न भिन्न है सम्प्रदाय अपना-अपना विस्तार लिए
लड़ना और झगड़ना क्या इंसाफ है। (4)

तेरा मेरा छोड़ बने मध्यस्थ सत्य को पाना है
रूढ धर्म की शल्य चिकित्सा करके आज दिखाना है
जीवन शोधन बिना व्यर्थ जप जाप है। (5)

तर्ज-रबड़ी नीम के नीचे

अब मन का दीप जलाओ
गहन तिमिर में भूल चूक तुम इधर उधर मत जाओ।।

लाखों दीप जले हैं लेकिन भीतर में तम गहरा
खोकर अपना वैभव सारा, देते पर घर पहरा
छोड़ देखना मुंह दर्पण में दर्पण खुद बन जाओ। (1)

तन को धोया और सजाया पर मन मलिन पड़ा है
जड़ तन बेचारा क्या जाने मन का पाप बड़ा है,
इस तन का नाता है नश्वर, मन को मीत बनाओ। (2)

जीवन की हर कठिन घड़ी में मन मजबूत बनाएं
मन के हारे हार और मन चाहे अगर जिताएं
जीवन के इस समरांगण में मन को धैर्य बंधाओ। (3)

तर्ज-तोरा मन दर्पण...

ये धर्म के ठेकेदार ही, खोते धर्म की शान हैं।
जिन्दे इन्सां की कब्र पै बिठलाते भगवान हैं।।

चढ़ांए फूल प्रेम से, देव प्रतिमा सामने,
पाप के अड्डे बने, आफिस घर दुकान हैं।

तुच्छ दान पुण्य से, धर्म का ठेका लिया,
फिर शोषण की हाट के बनते नित मेहमान हैं।

धर्म ग्रन्थ हैं भरे सभी, हर मजहब को देख लो,
किन्तु जीवन में कहो कुछ धर्म का निशान है।

जो न कर सकें कभी, पूजा पाठ प्रार्थना,
फिर भी भगत भगवान के, जो जीवन में ईमान हैं। 36

तर्ज-तूने जो मेरी

भजन भगवान का करते जगत रूठे तो रूठन दो
कदम तप-त्याग में धरते प्राण छूटे तो छूटन दो।।

प्रभु ब्रह्मा, प्रभु विष्णु, खुदा क्राइस्ट जिन बुद्धा
करें पल-पल स्मरण प्रभु का सांस खूटे तो खूटन दो।

न मंदिर में, न मस्जिद में, न गंगा में, न यमुना में
बसे प्रभु मन की महफिल में, हृदय का द्वार खटकन दो।

न आंखो से दिखाई दे, न कानों से सुनाई दे
अमर धन पास वह सबके कोई लूटे तो लूटन दो।

प्रभु के प्रेम में पागल बनें हम सूर मीरा ज्यों
प्रभु का प्रेम रस चखते दांत टूटे तो टूटन दो। 37

तर्ज-मेरा दिल लूटने

चली जो जा रही सांसे नहीं वे लौटकर आए
तृप्ति कब भोग में बोले भले मेरू निगल जाए।।

गई को याद करते हैं रही को खो रहे पल पल
शिखा जो बुझ गई क्या वह कभी आलोक बरसाए। (1)

नदी की राह सागर है, लता का पंथ पादप है
भटकते चरण ये, समझो कभी मंजिल नहीं पाए। (2)

सिनेमा देखने जाते, थियेटर देख हर्षाते
स्वयं की फिल्म जो उतरे नहीं उस पर नजर जाए। (3)

अभी अवसर जरा संभलो जिंदगी को जरा बदलो
आग जो लग गई घर में, कहां से फिर कुआं आए। (4)

तर्ज-मेरा दिल तोड़ने

अब आत्म जागरण का मंगल मुहूर्त आया
नव सूर्य आज का यह संदेश भव्य लाया।।

दीपक तले अंधेरा कब तक कहो चलेगा
बेहोश खुद पड़ा फिर क्या विश्व को जगाया। (1)

जो मध्य दिन में सोए, खोए भरा खजाना
जो सावधान पल पल उसको मिला सवाया। (2)

क्यों भटकता है कोई दर-दर बना भिखारी
हर मनुज अपना मालिक यह भेद क्यों न पाया। (3)

यदि एक बार झांका इस भीतरी जगत में
फिर बाहरी जगत का रिश्ता किसे सुहाया। (4)

लो छोड़ दौड़ भौतिक आत्मस्थ होके बैठें
आनंद कल्प तरू की शीतल सुरम्य छाया। (5)

तर्ज-इतिहास गा रहा है...

बहे जो धार मैत्री की विश्व परिवार बन जाए
कलुषताएं धुले मन की अकारण स्नेह सब पाए।।

सभी अपने नहीं कोई पराया हो घृणा किस पर,
कई इस जन्म के साथी रहे कुछ मित्र जन्मान्तर
छोड़कर द्वेष ममता भाव, सबके मीत बन जाए। (1)

किसी का बन हितैषी, दूसरे को जो सताता है
किसी का भी नहीं वह हित कभी भी साध पाता है
सभी का हित सधे वैसा सुपावन पंथ अपनाएं। (2)

किसी को मानना ऊंचा और नीचा किसी जन को
विषमता यह विचारों की कलंकित कर रही मन को
'बदल दें' मानदण्डों को सत्य के फूल खिल पाएं। (3)

कर्म की विविधता ने प्राणियों को भिन्न कर डाला
आज जिसकी प्रतिष्ठा है वही दिन देखता काला
समझलें राजप्रभुता का कि समता दीप जल पाएं। (4)

तर्ज-जो आंसू आंख तक आए

हम सब राही बन उत्साही,
चलें धैर्य के साथ हमें मंजिल पाना है।।

पथ में लुटेरों की भीड़ लगी है देखो सामने
सब ही पराए लगते कोई न अपना हाथ थामने
किस पर रीझें, किस पर खीजें करते सब उत्पात। (1)

कदम कदम पे देखो शूलें बिछीं हैं इस राह पर
कौन बहाता आंसू इस दुनियाँ में किसकी आह पर
स्वार्थ परायण जन-जन का मन कौन सुनें दिल बात। (2)

मंजिल मिलेगी उसको चलता जो पथ में साहस धार कर
पछताएगा वह जिसने छोड़ा है पथ को हिम्मत हारकर
आस्था गहरी, जीवन प्रहरी होगा स्वर्ण प्रभात। (3)

तर्ज-हर घट गागर...

प्यास भड़के नीर से तो नीर पीकर क्या करेंगे
मौत सी यह जिंदगी अब और जीकर क्या करेंगे।।

जिस जमीं को मानकर आधार बसना चाहते
खिसकती पावों तले से उस जमीं को क्यों वरेंगे। (1)

पंख फैलाए गगन में उड़ सकें आराम से
काट दे जो पंख उस आकाश पर 'पर' क्यों धरेंगे। (2)

नाव को जो पार कर दे, वह समंदर चाहिए
जो डुबो दे नाव को उस जलधि से हम क्या तरेंगे। (3)

भटकती इस भीड़ को कोई दिखा दे रोशनी
जो तिमिर बरसा रहे वे दीप क्या तम को हरेंगे। (4)

खुशबू देकर मुस्कुराना, फूल से हम सीख लें,
जो न खिलता गंध दे, उस फूल से घर क्यों भरेंगे। (5)

तर्ज-जय मां सरस्वती

फल की आशा छोड करें हम काम सभी निष्काम
जीतना यदि जीवन संग्राम
सतत करें शुभकर्म नहीं है पल भर का विश्राम।।

जीवन रण में आने वाली विपदाओं से जूझें
सुख दुख सरिता के दो तट हैं दोनों को ही पूजें
अपने मन को दुर्व्यसनों का होने दें न गुलाम। (1)

औरों के हित अपने सुखका त्याग करें जीवन में
दुश्मन पर भी कभी नहीं दुर्भाव जगे इस मन में
वही शख्स कहलाता इस दुनियां में राम घनश्याम। (2)

किसका मन चाहा सारा पूरा होता है जग में
बड़ों बड़ों के बाधाएं आ जाती जीवन मग में
जो कर्तव्य भाव से करते उनके नित आराम। (3)

दुनिया किसे सुयश देती है उचित मार्ग अपनाओ
नाम दाम का मोह छोड़ कर सच्चे पथ पर आओ
क्यों पूछें हम राह, नहीं जाना हमको जिस गांव। (4)

तर्ज-इंसान जागेगा...

सुख दुख में क्या फर्क हमें मस्ती का जीवन जीना है
मन ही बड़ा कमीना है।।

भरी हलाहल से यह दुनिया
हम को अमृत पीना है। (1)

दुनिया तोड़ फोड़े में, हमको
फटी चदरिया सीना है। (2)

नफरत का नहीं काम
प्रभुका पंथ प्रेमरस भीना है। (3)

हम आनंद मग्न चाहे
दुनियां ने सब कुछ छीना है। (4)

माया का मारग है मोटा
प्रभु का मारग झीना है। (5)

प्रभु मिलना आसान नहीं है
बहता खून पसीना है। (6)

तर्ज-उड़ उड़ रे...

संतों के खुल्ले द्वार वारी जाऊं संतन की
लो जिसको जो दरकार वारी जाऊं संतन की।।

हाट अनोखी धर्म की इसके मालिक है संत
मंजिल सबकी एक है बस जुदे जुदे हैं पंथ। (1)

जात न पूछो संत की बस पूछ लीजिए ज्ञान
मतलब है तलवार से क्या मतलब कैसी म्यान। (2)

सदा दिवाली संत के है आठ पहर आराम
परमात्मा में लीन उनको दुनियां से क्या काम। (3)

संत चरण में जो गया उसका है बेड़ा पार
बिना स्वार्थ सब पर करे नित मंगल की बौछार। (4)

तरूवर की ज्यों संत जन खाकर पत्थर की मार
फल देते हैं जगत को संतों का हृदय उदार। (5)

तर्ज-वारी जाऊं चिरमीरी...

जागरण की पुण्य बेला आत्म ऊर्जा को जगाएं
क्रांति गीतों की धुनों से सघन मूर्च्छा को मिटाएं।।

सुप्त इस चैतन्य को सद्‌बुद्धि देने के लिए
भवभवों से व्याप्त दृढ़ अज्ञान का परदा हटाए। (1)

कौन हम आए कहां से, जान लें इस तथ्य को
है कहां जाना सुनिश्चित लक्ष्य अपना हम बनाएं। (2)

शक्ति का केन्द्रीकरण कर उचित पथ को पकड़ लें
जो समर्पित सत्य को उस मनुज को मंजिल बुलाए। (3)

मलिनता मन की मिटाकार प्रेम को विस्तार दें
क्या पता किस वेश में भगवान आ दस्तक लगाए। (4)

जो जमी जड़ता युगों से दें चुनौती अब उसे
ले नया संदेश सूरज नव सृजन के गीत गाएं। (5)

तर्ज-जयति वीणा वादिनी...

जग की अस्थिरता पहचान, कर लो जीवन का उत्थान।।

परिवर्तन का नियम अटल है चेतन पर जड़ता का बल है
सोच जरा स्थिरता से मानव किस पर हो अभिमान। (1)

जीव भिन्न इस जड़ शरीर से, जैसे भिन्न तूणीर तीर से
केवल सहयोगी आत्मा का सुख दुख अनुभव स्थान। (2)

तज चेतन तन के बंधन को, और इस अपने चंचल मन को
शाश्वत मान मनुज भूला है, अपनी सच्ची शान। (3)

जब तन ही अपना ना नर का फिर गौरव क्या परिजन धन का
अरे! चेतना का विकास ही चेतन का वरदान। (4)

तर्ज-जग में सुंदर

कैसे हो कल्याण मन तो काला है जी काला है
होठों पर है राम, भीतर ज्वाला है जी ज्वाला है।।

ले पूजा सामान मंदिर खूब गए जी खूब गए
किया बहुत ही ध्यान बगुला भक्त रहे जी भक्त रहे। (1)

बन कर दानी सेठ नाम कमाया है जी पाया है
भली जमाई पेठ भीतर माया है जी माया है। (2)

सत्संग कीर्तन बीच सबसे आगे हैं जो आगे है
दे धोखा वे ही नर गुपचुप भागे हैं। (3)

काम क्रोध की आग सबको नष्ट करे जी नष्ट करें
लगा लगा कर दाग सबको भ्रष्ट करे जी भ्रष्ट करे। (4)

मन को कर लो साफ, फिर फल पाओगे जी पाओगे
पाप सभी हो माफ, शिवपुर जाओगे जी जाओगे। (5)

तर्ज-जग में मंगल च्यार...

एक देश के दो बंदे उनमें यह वैर कैसा
दो भाईयों के अंदर आपस में जहर कैसा।।

खेले थे एक भूपर, पढ़ते थे एक गुरूकुल
शादी गमी के साथी, उनमें यह कहर कैसा। (1)

खाते थे एक संग में, न्हाते थे एक सर में
खुद से ही खुद की हत्या, बोलो यह शहर कैसा। (2)

गैरों को मान अपना, करते थे जो भलाई
अपनों से दुश्मनी का, आया यह प्रहर कैसा। (3)

है हिन्दू सिक्ख भाई, क्यों कर पड़ी यह खाई
फिर से हो भाई चारा, अपनों में गैर कैसा। (4)

तर्ज-दो फूल...

माला फेर ले रे भाई राम नाम की
यही है कमाई सच्ची शिवधाम की।।

हाय पैसा हाय पैसा रात-दिन करते
घानी के बैलों की भांति जीते जी ही मरते
खट पट मोल ली है बिना काम की। (1)

आई बहू आया काम, गई बहू गया काम
दुनियां में किसी का भी रहा नहीं अमर नाम
छोड़ उज्जड़ मार्ग राह पकड़ गांव की। (2)

स्वार्थी संसार में कौन बोलो अपना
आंखें मूंदते ही सारा हो जाएगा सपना
माया में न फंस, कर बात काम की। (3)

घड़ी अठावन पाप की तो, दो घड़ी हो जाप की
साठ घड़ी दिन रात की, में दो घड़ी हो आपकी
दो घड़ी निकाल भाई सुबह शाम की। (4)

तर्ज-परदेशी मेरा...

संत का दरबार लोक में सबसे न्यारा है
संत ही संसार में सच्चा सहारा है।।

संतों की पहचान कठिन है
संतों का सम्मान कठिन है
संतो ने पापी जनों को भी उबारा है। (1)

संतों की चल रही दुकानें
पंथों के भी नहीं ठिकाने
इस चल रही धोखाधड़ी ने सब बिगाड़ा है। (2)

पग पग पर पाखंड़ पले हैं
आडम्बर में घुले मिले हैं
आज असली संत सच किसको गवांरा है। (3)

प्रभु के खातिर प्यार न मन में
सब पैसे कुर्सी की धुन में
नाम दाम की होड़ में सच नर जन्म हारा है। (4)

धर्म नाम पर आग लगाते
सोए अनगिनभूत जगाते
धर्म का नुक्शान होता उनके द्वारा है। (5)

तर्ज-कैसा नजारा है...

संत का सम्मान ही सम्मान है
संत ही अपने वतन की शान है।।

संत का आसन यहां ऊंचा रहा
विश्व का गुरू तभी हिंदुस्तान है। (1)

संत हो चाहे किसी भी पंथ का
साधना ही संत की पहचान है। (2)

जाग कर खुद जो जगाए जगत को
उसी सच्चे संत पर अभिमान है। (3)

संत कहला कर लगाए आग जो
कर रहे वे देश का नुकशान है। (4)

जो करे उपकार स्वार्थ के बिना
परख लो बस वही संत महान् है। (5)

तर्ज-दिल के अरमां...

संतों का काम शरणागत जन को पंथ दिखाना
पतितों को पावन करना, अधर्मों को गले लगाना।।

जो भी चरणों में आया, उसको दे प्यार उठाया
निर्धन धनवान सबको समता का पाठ पढाना। (1)

जो होते सच्चे साधु उनकी वाणी में जादू
जड़ता में सोई दुनिया को दे आवाज उठाना। (2)

बतलाते मारग सच्चा, आए बूढा या बच्चा
गोली दे प्रेम भाव की सबके झगड़े निपटाना। (3)

संतों के सदा दिवाली, होती हर क्षण खुशहाली
आए चाहे कोई भी सब पर मंगल बरसना। (4)

माता सी ममता मन में, जागृति करते जन जन में
सेवा का व्रत जीवन में लेकर चलते ही जाना। (5)

तर्ज-ज्ञानी गुरूदेव...

मनका मिटाकर संताप, जीवन का आनंद ले लें
सुख दुख के स्रष्टा हैं आप अपने को दुख में क्यों ठेले।।

मन से धन छोड़ मुनिवर त्यागी कहाए
जबरन जो छिन गया भिखारी में आए
भीतर को करलो जो साफ बाहर तो लगने हैं मेले। (1)

कपड़ों के भीतर है हर एक नंगा
मन है जो चंगा तो कठौती में गंगा
मन से बड़ा न कोई पाप, मन के है सारे झमेले। (2)

बिल्ली चूहों को है खाती जिस मुंह से
अपने बच्चों को भी लाती उस मुंह से
दुनिया कर देती इंसाफ किस पर है दांत विषैले। (3)

बगुले से भक्तों का कैसे कल्याण हो
दिल में हो पाप कोरी मीठी जुबान हो
उखड़ेगी आखिर तो छाप फिर चाहे गुरू हो या चेले। (4)

तर्ज-मुंबई पधारो...

सत्य ही भगवान है, भगवान को वंदन हमारा
सत्य द्रष्टा को मिला संसार सागर का किनारा।।

सत्य को हम हों समर्पित, सत्य पर ये प्राण अर्पित
सत्य ही है सार जग में सत्य ही तम में उजारा। (1)

लक्ष्य हो ऊंचा हमारा सत्य पथ का हो सहारा
मृत्यु से भयभीत हैं फिर जनम क्यों लेंगे दुबारा। (2)

सत्य को हम गुरू बनाएं, भटकने दर दर न जाएं
आत्म निष्ठ बनें बहाएं प्रेम रस की पुण्य धारा। (3)

ज्ञान गंगा में नहाएं, शुद्ध श्रद्धा को जगाएं
सहजता समता फलित हो हर समय आचरण द्वारा। (4)

तर्ज-वंदना के इन...

है सत्य हमारे साथ प्रभो, डरने की फिर क्या बात प्रभो
मजबूत हमारे हाथ प्रभो।।

है सत्य लोक में सारभूत, तप नियम धर्म में सत्यपूत
है सत्य तिमिर में प्रात प्रभो। (1)

है सत्य स्वयं भगवान रूप, सत के आगे नत इन्द्र भूप
सब अंत सत्य के साथ प्रभो। (2)

था अडिग सत्य पर हरिश्चन्द्र, द्रुपदा का चीर बढ़ा अमंद
पी गरल अमर सुकरात प्रभो। (3)

सीता ने अग्नि स्नान किया, शंकर ने विष का पान किया
सत पर कैसा आघात प्रभो। (4)

है दूध दूध पानी पानी, सत्पथ चलते कैसी हानि
है सत्य स्वयं अवदात प्रभो। (5)

हम सत्य शरण में आए हैं, खुद को खाली कर लाए है
अब दर्शन दो साक्षात् प्रभो। (6)

तर्ज-नवकार मंत्र का ध्यान...

जमाना है दिखावट का कि लोगों में दिखावट है
कि घर बाजार मंदिर में दिखावट ही दिखावट है।।

यह हट्टी खूब ऊंची है कि अंदर पोल पट्टी है
लगे हैं इश्तिहार सुर्खी कि धंधे में दिखावट है। (1)

ले रहे डिगरिया ऊंची कि देदे घूंस अफसर को
हैं बाबू ज्ञान में जीरों पढ़ाई में दिखावट है। (2)

फूंक घर शो किया भारी कि दुनिया देखने आए
भूख से तड़पते बच्चे कि शादी में दिखावट है। (3)

इलेक्शन जब लड़े नेता कि सौ सौ वायदे करते
चुनावों बाद बस छुट्टी, कि शासन में दिखावट है। (4)

दिखावे को गए मंदिर लगाए तिलक छापे भी
न दिल में भक्ति है सच्ची कि, पूजा में दिखावट है। (5)

तर्ज-कव्वाली...

जो भलाई कर सकें कर जाइये
क्या भरोसा उम्र का बतलाइये।।

जो तुम्हारी राह में कांटे धरे
फूल उनकी राह पर बिखराइये। (1)

डालते जो लोग नफरत की नजर
प्रेम की वर्षा वहां बरसाइये। (2)

धुप अंधेरी रात है यदि सामने
दीप बनकर रोशनी फैलाइये। (3)

गालियों की हो रही बौछार जो
जहर को अमृत समझ पी जाइये। (4)

जो हुए पागल मजहबी वहस में
धर्म की भाषा उन्हें समझाइये। (5)

तर्ज-दिल के अरमां...

हम सभी एक हों, जागृत विवेक हो
जो कुछ भी हों हम बाद में, पहले नेक हों।।

क्या होता हिन्दू मुस्लिम, क्या बौद्ध जैन हैं
क्या सिक्ख शरणार्थी सभी आखिर तो मैन हैं
जाति भाषा धर्म का नहीं अतिरेक हो। (1)

कोई भी देश वेष हो, कोई भी धर्म हो
मानव वही है ऊंचा, जिसके शुभ कर्म हो
लोक-सेवा में लगे सब एक टेक हो। (2)

निर्धन सुदामा साथ में मैत्री की श्याम ने
भिलनी के जूठे बैर भी खाए श्री राम ने
सम रहे वनवास या फिर अभिषेक हो। (3)

अपने पराए के सभी भेदों को छोड़ दें
औरों के दिल के तार को अपने से जोड़ लें
एकता के राज में क्यों भेद रेख हो। (4)

तर्ज-चवदहवीं का चांद...

क्या पैसा ही परमात्मा, पैसा ही प्राण है
क्यों करते लोग मिलावट, यह दुख की खान है।।

है अमर कौन दुनियां में, किसका वैभव स्थिर है
मरघट पर निर्धन धनपति, सब एक समान हैं। (1)

है अपना कौन पराया? सब रिश्ते कागजी
यह लोभ आपका लेता, कितनों के प्राण हैं। (2)

बेमेल वस्तु मिलने से, क्या क्या अनर्थ होते
ये जहर मिली औषध क्या, भारत की शान है। (3)

जो पूत सपूत कहो फिर यह संग्रह किस लिए
जो पूत कपूत अरे फिर क्यों लेते जान है। (4)

इज्जत मिट्टी में मिलती जब पड़ते हैं छापे
फिर दांव पेच रिश्वत से, बचती दूकान है। (5)

यह राष्ट्र समाज स्वयं से, है बहुत बड़ा धोखा,
जैसा बोता वैसा फल, पाता इंसान है। (6)

तर्ज-अप्साना लिख...

जो बनाना था तुम्हें उसको बनाया क्या?
जिस मंजिल को पाना उस पर कदम बढ़ाया क्या?।।

आलीशान बनाई कोठी, ली एम्बेस्डर कार
टी.वी. फ्रिज वीडियो का भी देख लिया संसार
आत्मा के इस मंदिर को तुमने सजाया क्या। (1)

नए नए जेबर के सेट खरीदे देकर दाम
बड़ी कीमती ड्रैसें मेक-अप का सामान तमाम
पर-भव में जो काम आसके, वह जुटाया क्या। (2)

छोड़ नौकरी सरकारी, कर लिया निजी व्यापार
लगा लिए कल कारखाने, हैं अब किसकी दरकार
लेकिन यमदूतों का तुमने, टैक्स चुकाया क्या। (3)

जीत लिए पैसे के बल पर तुमने जटिल चुनाव
कुर्सी जिसके पास उसी के दुनियां पूजे पांव
जीत लिया संसार, स्वयं को जीत दिखाया क्या। (4)

तर्ज-दिल्ली चलो...

धर्म द्वीप है, धर्म प्राण है, धर्म शरण आधार
धर्म से होगा बेड़ा पार।।

धर्मशांति है धर्म मुक्ति है ऋजुता मृदुता पावन
लाघव सत्य और संयम तप त्याग बड़ामन भावन
ब्रह्मचर्य की अद्‌भुत महिमा नतमस्तक संसार। (1)

दशलक्षण वाला यह उत्तम धर्म हमारा प्यारा
कितनों का कल्याण हुआ है, शुद्ध धर्म के द्वारा
एक शब्द में समता ही है, सब धर्मों का सार। (2)

धर्म नाम पर मिथ्या आडम्बर पनपाना छोड़े
प्रभु से अपने चंचल मनका तार जरा हम जोडें
तभी मिलेगा हमे बंधुओं! मोक्ष नगर का द्वार। (3)

महावीर के हम अनुयायी आगे कदम बढ़ाएं
महावीर बनकर, दिखलाएं कोरे गीत न गाएं
तब ही होगा इस जीवन में धर्म स्वयं साकार। (4)

तर्ज-गगन जमीं

संभलो अब भी अवसर है, मंजिल पर पैर बढ़ाओ मन समझाओ।।

आज नहीं हम कल कर लेंगे ऐसी भूल न करना
कौन जानता कल क्या होगा क्रूर काल से डरना
पल-पल सफल बनाना है, सच्चा पथ दर्शन पाना, मन को रमाओ। (1)

जिसकी मैत्री हुई मौत से वह देरी कर सकता
जिसको है विश्वास पलायन पर वह ही रूक सकता
अमर रहूंगा जो जाने वह कल की आशा करता मत सुस्ताओ। (2)

जन्म दुःख है जरा दुःख है, रोग मृत्यु दुखदायी
दुःख भरे जीवन पर क्यों तू मुग्ध बना है भाई
अनासक्त बन रहना है खुद ही निर्लिप्त बनोगे आनंद पाओ। (3)

तर्ज-पिया घर आजा

हो सबका संकल्प महान्
बनना है सच्चा इंसान।।

होठों पर हो प्रभु का नाम
हाथों से करलें शुभ काम
छुए नहीं हमको अभिमान। (1)

करें साधना का अभ्यास
सेवा का व्रत ही संन्यास
भक्ति साथ जागृत हो ज्ञान। (2)

सत्य हमारा हो आदर्श
छोड़ें पंथों का संघर्ष
जनहितकारी हो अभियान। (3)

ज्योतिर्मय जीवन मग हो
क्षेम कुशल जय पग पग हो
विश्वपिता की हम संतान। (4)

सुख दुख में समभाव रहें,
दुश्मन को भी मित्र कहें,
गूंजे मैत्री का संगान। (5)

तर्ज-रघुपति राघव राजा राम

यह भोला सा इंसान ही ईश्वर की पहचान है
नफरत करें इंसान से, वो कैसा इंसान है।।

की ठगाई आपने, खुद अपने से भगवान से
इंसानों को जो ठगा, इसां ही भगवान है। (1)

जैन, बौद्ध, हिंदुओं! मुस्लिम ईसाई फारसी
ऊंचा कौन है धर्म से, कर्म ही महान है। (2)

भाइयों का खून पी, ऐश किया तो क्या किया
अपने हक में मस्त जो, वह सच्चा धनवान है। (3)

मानवता के मंच पे, कौन है छोटा बड़ा
दिल को दुखाना पाप है, सबके दिलों में जान है। (4)

बादशाह बजीर हो, सेठ साहूकार हो,
अंत में सब एक से, क्या मजदूर किसान है। (5)

तर्ज-तूने जो मेरी कब्र

मनवा! दुनियां कोरा सपना यहां पर कोई नहीं है अपना।।

मनवा! यह मन मोहक माया, समझो है बादल की छाया हो। (1)

मनवा! सब स्वार्थ के साथी जब तक तेल जलेगी बाती हो। (2)

मनवा! सुख दुःख दोनों आते, दुख से कायर जन घबराते। (3)

मनवा! राहगीर हम सारे, सबके लक्ष्य हैं न्यारे न्यारे हो। (4)

मनवा! जब तक तन में चेतन, देता साथ स्वयं का यह मन। (5)

तर्ज-प्रभु जी तुम चंदन

दुनियां से आगे कहां चारों तरफ फैला जहां
स्वर्ग नरक सब ही यहां।।

ऊपर भी जग है, नीचे भी जग है
समझो यहां खतरे पग-पग है निशानां इक, हजारों निशां। (1)

बाहर भी डर है, भीतर भी डर है
मरघट के राहीं कौन अमर है, घबराता क्यों अयि इन्सां। (2)

महलों को तजकर, जंगल में बसकर
होता न योगी जल में उतरकर, खुदा का घर तेरा ईमां। (3)

तर्ज-जाएं तो जाएं कहां...

सांच को आंच कब आए विजय है सत्य की आखिर
अंत में झूठ पछताए विजय है सत्य की आखिर।।

सत्य भगवान का मंदिर, सत्य है देवता का घर
सत्य की क्या महिमा गाए। (1)

सत्य है सार इस जग में, सत्य की पूछ पग पग में
सत्य व्यवहार में लाएं। (2)

सत्य पर अडिग जिसका मन, मृत्यु को जीतता वह जन
सत्य से वचन सिद्धि पाएं। (3)

सत्य कुर्बानियां मांगे, समय पर शूल पर टांगे
पिला विष अमर कर जाए। (4)

गालियां दे रहे जो नर, वही हैं पूजते आखिर
चमक लाती हैं विपदाएं। (5)

तर्ज-मधुर बोलो...

अब चीख रही है मानवता
भीतर का कोई भगवान जगे
हर घर में खून की होली है
इंसानों में इंसान जगे।।

मानव के भीतर की पशुता
बेकाबू होकर नाच रही
बेभान बने शैतानों में
फिर से कोई मतिमान जगे। (1)

खतरे की घंटी घर घर में
दूकानों में मयखानों में
इन आदम कद हैवानों में
कुछ तो अपनी पहचान जगे। (2)

निर्दोष औरतों बच्चों को
जो भून रहे बन बेहय्या
उन गला घोंटने वालों में
हे राम जरा सद्ज्ञान जगे। (3)

बस जान बचाने की धुन में
जो जन्म भूमि को छोड़ रहे
दुम दबा भागने वालों में
अब थोड़ा सा अभिमान जगे। (4)

तर्ज-ओम अर्हं नमः....

आज सबको है एक शिकायत एक दूसरे के लिए
जिंदगी ही भर हो तो क्यों न कोई विष पिएं।।

मील-मालिकों को शिकायत मजदूरों को भी वही
ऑफीसर और कर्मचारी में बगावत हो रही
नेताओं ने हार-हार जनता को इस्तीफें दिए। (1)

पिता कह रहे पुत्र हमारे, फैशन में डूबे हुए
पुत्र कह रहे पिता हमारे, पौराणिक युग में जीएं
कैसे समझौता बिठाए कौन किसका मुंह सीएं। (2)

बहू चुराए काम से दिल, रोब जमाए सास पर
सास दे गाली बहू को कर्कशा कैसी निडर
स्वर्ग घर कैसे बने हर जिंदगी टूटन लिए। (3)

पत्नी को शिकवा की पति निरपेक्ष जीवन जी रहा,
पति कहे घर में सदा मैं कलह का विष पी रहा,
बोलो किस किसको कहे सब एक सा जीवन जीएं। (4)

तर्ज-फिर क्या बन सकता

बालक का कोई दोष नहीं जब मात पिता को होश नहीं।।

बालक तो बिल्कुल सच्चा है, वह परमात्मा का बच्चा है
नादान उम्र का कच्चा है, उसको कोई अफसोस नहीं। (1)

जिस सांचे में तुम ढालोगे, जिस सुंदर विधि से पालोगे
वैसा ही बालक पाओगे, उसके मन में तो दोष नहीं। (2)

कोरा कागज शिशु का जीवन, मिट्टी का ढेला है पावन
जब लापरवाह बने परिजन, बच्चे का है आक्रोश वहीं। (3)

बस पांच वर्ष तक लालन हो, दस वर्षों तक फिर ताड़न हो
फिर मित्र भाव का पालन हो, इससे जगता है जोश सही। (4)

तर्ज-नौकर का कोई...

जीवन में कुछ काम करो अपने पुरखों का नाम करो।।

जो आए जग में वह जाए, फूले वह कुम्हलाए
जीवन का कुछ नहीं भरोसा मानव! क्यों इतराए। (1)

भूख लगे तब पशु भी खाए, नींद आए सो जाए
शिशुपालन जीवन संचालन पंछी भी कर पाए। (2)

दुर्लभ मनुज देह में आए ऊंचा लक्ष्य बनाएं
सोई शक्ति जगे अंतर की, काम सभी के आएं। (3)

मानवता की सेवा करना सीखें और सिखाएं
जन जन को सच्चे पथ पर ला, सबको साथ चलाएं। (4)

माटी की यह काया आखिर माटी में मिल जाए
कौन पराया अपना जग में सबको गले लगाएं। (5)

तर्ज-सुमिरन करले मेरे मना...

सारे शास्त्रों का सार, मंगल मंत्रो का द्वार
कैसा अद्भुत ओंकार इसको साधना है।।

ब्रह्मा, विष्णु, महेश का प्रतीक रे
पंच परमेष्ठी जिसमें सटीक रे
इसका ले लो आधार, बेड़ा हो जाए पार, इसको। (1)

योगियों का यह पावन ध्येय रे
भोगियों का है इसमें श्रेय रे
जोड़ो मन का यह तार, होगा निश्चित उद्धार। (2)

कामनाओं को करता साकार रे
भव्य जीवों को मुक्ति दातार रे
करलो मन को तैयार, भर लो ऊंचे संस्कार। (3)

ओम का ही हो भीतर से ध्यान रे
ओम जपने से होगा कल्याण रे
पावन करलो विचार, निर्मल होगा आचार। (4)

तर्ज-ऊंची टहनियों पै...

आजाद हिंदुस्तान की तस्वीर को निहारें
अपने धर्म के नाम पर क्या कर रहे हम सारे।।

टुकड़े टुकड़े वतन हो रहा, बहे खून की धारा
भाई ही बन रहा आज, भाई का खुद हत्यारा। (1)

भोग गुलामी लंबी अब स्वाधीन हो गए सारे
पर आदत की लाचारी से, जीती बाजी हारे। (2)

कभी जाति को लेकर झगड़ा, कभी प्रांत सीमाएं
भाषा, मजहब ने भी कितने, दारूण रूप दिखाएं। (3)

जिस धरती पर शिक्षा लेने आती दुनियां सारी
उसी देश की यह हालत होती है पीड़ा भारी। (4)

एक बनें हम नेक बने हम भेदभाव को भूलें
कौन पराया सब ही अपने समता झूले झूलें। (5)

तर्ज-हैदराबाद...

आज देश में हैं दहेज की बहुत करारी मार
चला है यह कैसा व्यापार।
छोटे बड़े सभी पर होता इसका तीव्र प्रहार
चला है यह कैसा व्यवहार।।

बहुत बड़ा अभिशाप सुता का जनम पिता के घर में
जीवित ही मर जाती जननी लड़की अगर उदर में
पग पग पर अपमान सहे, लड़की वाले मन मार। (1)

जिस धरती पर दूध-पूत की बिक्री कभी न होती
उस धरती पर भेड़ बकरियों सम कन्याएं रोती
पैसे वालों की बिक जाती, लड़की मूर्ख गंवार। (2)

मांग मांग कर स्कूटर, कार, रेड़ियो, कूलर लेते
नकद रूपयों की थैली का, अंदर अंदर कहते
जो दहेज में कमी रही लड़की पर अत्याचार। (3)

प्रौढ़ सुता को देख कुमारी, पिता जहर हैं खाते
कितने कर्जदार बन लड़की को, ज्यों त्यों परणाते
कितनी कन्याएं अपनाती आत्मघात का द्वार। (4)

भारत मां की वीर सुताओ! अब युग को ललकारो
नौजवान भारत के अपना कुछ दायित्व विचारों
मानवता के इस कलंक से कर दो अब उद्धार। (5)

तर्ज-इंसान जागेगा...

नारियों के जागरण का समय है अब आ गया
उठो जागो आज बहिनों! रवि उगाना है नया।।

धीरता, श्रमशीलता, बलिदानमय इतिहास है
सहज, समता और ममता का बड़ा अभ्यास है
पतित पुरूषों को उठाया प्रेरणाएं प्रवर
किए सद्संस्कार जागृत बालकों में बोध भर। (1)

कर सदा निर्वाह जिम्मेवारियों का पूर्णतः
शेष जो करणीय है उसको जरा सोचें स्वतः
धर्म और समाज हित क्या-क्या किया हमने यहां
छोड़ अपने स्वार्थ को कुछ देश हित सोचा कहां। (2)

स्वयं का निर्माण कर परिवार का शोधन करें
रूढ़ियों से मुक्त देश समाज को कर यश वरें
छोड़ सुविधावाद बनकर स्वावलम्बी सर्वथा
संकटों का सामना कर गढ़े हम नूतन कथा। (3)

स्वस्थ व्यक्ति समाज में ही धर्म फलता फूलता
कला, शिक्षा, सभ्यता से दूर होती है व्यथा
शीघ्र महिला वर्ष की उपलब्धि है लाना हमें
सादगी शालीनता न स्वच्छता पाना हमें। (4)

तर्ज-वंदना आनंद

जो चाहो इन्सानों, इस जीवन में सुख सम्मान
छोड़ो करना मदिरा पान
तन्मयता से सुनलो अपनी आत्मा का आह्वान।।

पेय बहुत हैं इस दुनिया में, ध्येय बहुत हैं इस दुनिया में
जीवन को खुशहाल बनाने, प्रेय बहुत हैं इस दुनिया में
क्यों कड़वी बोतल पी व्यर्थ गंवाते अपनी शान। (1)

बच्चे रोटी खातिर तरसे, औरत की आंखें नित बरसे
सता सता अपने लोगों को, क्यों पीते हो बोतल चरसें
कपड़े जेवर भवन बेच कर, बनते रंक समान। (2)

पीते समय मुंह बिचकाते, चलते गट्टर में गिर जाते
कुत्ते बदन चाटते फिर भी बाबू साहब कब शर्माते
क्या रहता है खानदान इज्जत का कुछ भी ध्यान। (3)

फैशन में आदत पड़ जाती, आसानी से छूट न पाती
हाय कंपनी तुम्हें मुबारक, कैसे कैसे रंग खिलाती
नकल विदेशों की कर, कैसा डूबा हिंदुस्तान। (4)

थोड़ी सी चुस्ती की खातिर, अनगिन रोग बुलाते खुलकर
मानवता की मर्यादा को, तोड़ जी रहे हो मर मर कर
क्षणिक चैन के लिए उठाते बहुत बड़ा नुकशान। (5)

कला संस्कृति धर्म तुम्हारा दुनियां में हैं सबसे न्यारा
आदर्शों की पुण्य धरा पर जन्म मिला है प्यारा प्यारा
राष्ट्र समाज धर्म परिजन हित हो जाओ कुर्बान। (6)

तर्ज-कितना बदल...

वीर को वंदन करें, महावीर को वंदन करे हम
वीर की ले शरण बनकर चीर भव सागर तरें हम।।

अभय है आदर्श अनुपम, नाशकर अज्ञान का तम
दिव्य जीवन दिव्य प्रवचन, दिव्यता को ही वरें हम। (1)

पाठ समता का पढ़ाया, विषमता का ज्वर मिटाया
क्रांत द्रष्टा युग पुरूष को प्राप्त कर जड़ता हरें हम। (2)

धनी निर्धन शूद्र ब्राह्मण, मूर्ख पंडित और स्त्रीजन
सभी पर करूणा अकारण, भक्त प्रभु के क्यों डरें हम। (3)

चोर हत्यारे उबारे, घोर दुर्व्यसनी सुधारे
आत्म संयम से सदा सुख, सीख यह दिल में धरें हम। (4)

तर्ज-लक्ष्य है ऊंचा...

उतारें आरती सब, आज श्री महावीर की घर-घर
दिया संदेश समता का, विषमता का महार्णवतर।।

जन्मते ही सभी को मुक्ति दी उस महामना प्रभु ने
सभी हैं मुक्ति के कामी किसे बंधन लगे सुखकर। (1)

राजसी ठाठ में पलकर, जिया जीवन परिश्रम का
यही आदर्श जीवन का बताया विश्व को जीकर। (2)

कहां सुख भोग में है? त्याग ही सच्ची दिशा सुख की
शीघ्र ली राह संयम की, अतुल ऐश्वर्य ठुकराकर। (3)

आत्मवत् थे समझते विश्व के प्रत्येक प्राणी को
बहाई धार मैत्री की अकारण स्नेह छलकाकर। (4)

झेलकर कष्ट अगणित, पा लिया उस परम विद्या को,
बांट उस सत्य को जग में किया कल्याण जीवन भर। (5)

धन्य वह वीर जिससे मनुजता विकसित हुई सच्ची
विश्व भी मानता आभार इस पावन जयंती पर। (6)

तर्ज-ख्यालों में किसी

महावीर प्रभुवर का जन्मोत्सव हम आज मनाएं
तीर्थंकर के गुण गाएं।
ज्ञान दीप से करें आरती, श्रद्धा सुमन चढ़ाएं
परमेश्वर के गुण गाएं।।

राष्ट्र समाज विश्व की पीड़ाओं से मन थर्राया
राज सिंहासन को ठुकरा संयम का पथ अपनाया
औरों के कल्याण हेतु थे कितने कष्ट उठाएं। (1)

जातिवाद की जड़ें उखाड़ी, दास प्रथा को तोड़ा
नर बलि पशुबलि से अकृत्य से जन जीवन को मोड़ा
संघर्षो का किया सामना, नए मूल्य पनपाए। (2)

समता सहअस्तित्व समन्वय का संदेश निराला
सबसे मैत्री ऊंच नीच का भेद मिटाने वाला
सब धर्मों का सार अहिंसा अनेकांत मन भाए। (3)

युग नायक युग बोध तुम्हारा, युगों युगों तक पाएं
अपने से अपना उद्धार यही सबको समझाएं
जीओ, जीने दो का सुनकर घोष सभी हर्षाए। (4)

तर्ज-सुनो सुनो ए दुनिया वालों

आए श्री महावीर विश्व को सहलाने
सौ-सौ सूरज एक साथ में दिखलाने।।

जिनकी आंखों से मैत्री-की वर्षा पल-पल होती,
प्रभु की वह पावन करूणा कितनों के कल्मष धोती, उसे हम पहचानें। (1)

वे हर प्राणी को अपना आत्मीय समझ कुछ करते
पीड़ा न किसी को पहुंचे, पग-पग पर डरते रहते, सहे अनगिन तानें। (2)

भाई-भाई पर करता बन क्रूर हुकूमत भारी
सुख सुविधा छीन पराई खुद हो जाता अधिकारी, दासता पनपाने। (3)

जन्मना जीव सब ऊंचे, क्यों नीचा मान रहे हो,
कर्मणा सभी हैं ऊंचे नीचे क्या जान रहे हो, सत्य को पहचानें। (4)

मानव के सुख खातिर क्यों पशुओं की बलि दी जाए
क्यों शूद्र धर्म करने का समुचित अधिकार न पाएं, जले ज्यों परवाने। (5)

छाया, आतप, पानी सम, है व्यापक धर्म हमारा
क्यों धन-निर्धन नर नारी के भेदभाव की धारा, तत्व क्या है जानें। (6)

केवल उपासना से कब, है धर्म मूर्त्त बन पाया
प्रामाणिक नैतिक जीवन ने धर्म मर्म समझाया, न जीवन इठलाने। (7)

जीवन्त धर्म की प्रभु ने दी जीवन से व्याख्याएं
अज्ञान मिटा जन जन का हर ली सबकी बाधाएं, धर्म को बतलाने। (8)

तर्ज-रेशमी सलवार

है महामंत्र नवकार, इसका ध्यान धरो
चवदह पूर्वों का सार, इसका ध्यान धरो
ध्यान धरो बहुमान करो, सब मंत्रों का आधार
तज अहंकार ममकार, इसका ध्यान धरो।।

प्रथम नमन अरिहंत को, प्रभु वीतराग भगवान
चरण दूसरे में किया, है सिद्धों का गुण गान। (1)

नमस्कार आचार्य को, कर उतरो भव से पार
उपाध्याय है ज्ञान के, उज्जवल अक्षय भंडार। (2)

पंचम पद में लोग के सब संतों का सम्मान
परमेष्ठी के जाप से मिलता है पद निर्वाण। (3)

जितने मंगल लोक में, उनमें सर्वोत्तम पांच
नाश करे सब पाप का नहीं आए कोई आंच। (4)

गुण पूजा का मंत्र यह, है व्यक्तिवाद से दूर
यह विराट से जोड़ता नवनिधियों से भरपूर। (5)

तर्ज-ध्याओ माता...
राजस्थानी भजन

सूत्या सूत्या के करो, माथे ऊभो थारै काल
बंधुआं अब तो आंख उघाड़ो हो
स्याणी ए वायां नींद उड़ावो ए।।

पाल्या पोष्या मोटा करया, करता रह्या रिछपाल
वै माइत अब है कठै, थोड़ी तो ल्यो संभाल। (1)

ज्यांस्यूं हंस हंस बोलता, रात्युं करता बात
वह साथी बोलो कठै, कुण कुण निभायो साथ। (2)

सुख दुख में साथी वणै, जो परण्योड़ी नार
मरती बिरियां जीवने, कोई न राखणहार। (3)

ठग ठग लोगां ने भरी, तीजूरयां दिन रात
खाली हाथां जा रह्यां, जलै है मसाणा में गात। (4)

राजा रावण भी गयो, छोड़ लंका रो राज
आपां मूली किण बाग री, धर्म ही साचो साज। (5)

तर्ज-सुपना रे...

मौत रे मुंढागे कींरो, जोर कहो चालै हो, राजा महाराजा सगला हारग्या
माटी री आ काया आखिर माटी में मिल ज्यावै हो
धन्य जमारो जो सुधारग्या।।

धरती आसमान जिण रे, डर स्युं थर थर कांपे हो
जमरे आगे वह भी लाचार है
क्रूर कषाई काल आगै लारै नहि देखे हो
बूढ़े टाबर रो कै विचार है। (1)

रोगांस्यु घिरयोड़ी काया, परिजन रो रो विलखै हो
डाक्टर हकीमांरी कतार है
सबरो स्हारो घर उजियारो चीर कलेजो चाल्हो हो
इन्जेक्शन ऑक्सीजन बेकार है। (2)

एक लो आयो है जीव, एकलो ही जासी हों
कुण कीरों जग में, सब अनाथ है
म्हेल मालिया नौकर चाकर धन परिजन सब रहग्या हो
आछी माड़ी करणी बस साथ है। (3)

पेट पकड़कर माता रोवै, बांह पकड़कर भाई हो
बहना रोवै राखी तींवार ने
विलविल करता टाबरियाने, छोडया साथी संग्याने
आछी छोडी कुरलाती नार ने। (4)

मगरूरी में अकडया अकडया फिरस्यो कठे तांई हो
आखिर मृत्यु रा बणस्यो पाहुणा
सगा संबंधी रहता घेर्यां, करता सेवा तन मन स्युं
बांने ही लागोला अण खावणा। (5)

मिनखां ने कुण झूरै झूरै अपने अपणे स्वारथने
कुण राखै घर में बोलो लाश ने
हाथां स्युं कर क्रियाकपाली घर का चिता जलावै हो
धिग् धिग् रे प्राणी थारी आश ने। (6)

तर्ज-तेजा...

म्हाने चिंतामणि रत्न सा गुरू मिलग्या साक्षात्
अब क्यूं लख चौरासी रा चक्कर काटां।।

नींठा मुंगती रो साचो मारग लाग्यो म्हारे हाथ
अब क्यूं लख चौरासी रा चक्कर काटां। (1)

सब जोण्यां में उत्तम दुर्लभ, पाई मिनखां जोण
काढां साचेलो सार ओ ही जासी म्हारे साथ। (2)

धर्म प्रधान देश आपां रो ऊंचो कुल आचार
पांचू इन्द्रियां परिपूर्ण ओ नीरोग म्हारो गात। (3)

काम कुंभ सो कल्प वृक्ष सो मिलग्यो साचो धर्म
कोई नहीं रही है, अफसोस री अब बात। (4)

तन धन जीवन सारा अस्थिर क्यांरो करां गुमान
बणग्या राजा भिखारी इं दुनियां में रातों रात। (5)

मौत बुढापे बीमारी रो खतरो है दिन रात
साचो शरणो मिल्यो है आपां हो ज्यावां सनाथ। (6)

थारी म्हारी छोड़ करां अब सब स्युं हेत मिलाप,
आही नरस्यु नारायण बणणै री है करामात। (7)

तर्ज-घूमर...

ओ चमत्कार दिन च्यार दुनिया मेलो है
इंमें राचै मूढ गिंवार दुनिया मेलो है।।

सुबह जठै है रंग रली, सिंज्या हुवै हाहाकार
कांच कटोरे ज्यूं खिरै, सांसो रो के इतवार। (1)

आज करोडां रोकडा, कल हो ज्यावै कंगाल
पटराणी बण बैठती, वा मांजै घर घर थाल। (2)

मालिक बण जो झाड़ता सब पर मन मान्यो रोब
खावे पग पग ठोकरां अब ठंडो पड़ग्यो कोप। (3)

रूप जवानी जोश में, भूल्या बूढापो मौत
सुंदर सी इं काय में, भाई रोग छिप्या है बोत। (4)

जीते जीरा ही हुवे सब मात पिता परिवार
मर्‌या पछै इं गात ने, नहि राखै घररी नार। (5)

स्वारथिये संसार में, है कुण बेटो कुण बाप
करया कर्म है भोगणा, भाई करणी आपो आप। (6)

आया मुठ्ठी बांधकर, जाणो है हाथ पसार
जो परलोक सुधारणों ल्यो धर्म ध्यान अब धार। (7)

तर्ज-ध्याओ माता...

सारा घुलमिल ज्यावोजी
दूध शकर ज्यूं आपस में मिल आज दिखाओ जी
भूल दुश्मनी दुश्मन नै भी गले लगावो जी।।

खमत खावणा रो दिन आयो वैर भाव विसराओ
थांरी म्हारी हल्की भारी, जहर लहर मत ल्याओ। (1)

मन में गांठा घुली पड़ी ऊपर स्यूं खूब खमाओ
खाय अजीरण में क्यूं घररा मीठा माल गंवाओ। (2)

छोटी छोटी बातां ने महाभारत मती वणाओ
अकड़ पकड़ ने छोड, प्रेम स्यूं सगलां रा वणज्याओ। (3)

कठिन वचन म्हेणा मोसा पीढ़या दर पीढ़या साले
अपनी नरमाई पेलारे मनने सदा पिघाले। (4)

अपने घर में सगला राजा, कुण छोटो कुण मोटो
अकड़ाई स्युं रहणै वाला रे घर में ही टोटो। (5)

छोटे सेई जीवन में थे आड डोड मत राखो
नदी नाव संयोग समझकर प्रेम सुधारस चाखो। (6)

तर्ज-झड़ाको भजना...

जागो जागो जागो, आयो उजलो प्रभात है
आंख्यां ने उघाड़ो, देखो बीती रात है।।

सोयां सोयां पथरणां में कित्ता जुग बीतग्या
पाणी झरता-झरता देखो, कित्ता घड़ियां रीतग्या
इमरत री अब आई पाछी बरसात है। (1)

लूण मुख स्यूं थूक्यां मिलसी, मिसरी रो मिठास है
जंगल में भटकै हिरणियो, कस्तूरी तो पास है
जाणो खुद स्यूं खुद नै, क्षण भंगुर थांरो गात है। (2)

हाथ में कुल्हाडी ले, जो काटै अपणै पैर नै
जीवन री आशा में, पागल पीवै है वो जहर नै
हुयो अज्ञान रो ओ हिमपात है। (3)

ज्ञान चक्षु खोलकर थे, एक बार झांकल्यो
इं अणमोलै जीवन रो थे, साचो मोल आंकल्यो
वह ज्यासी बार, रहसी लारै बात है। (4)

तर्ज-आज म्हारै सुन

लोकोत्तम शरणा च्यार, ध्यावो जिन धर्म ने।
है स्वारथियों संसार समझो इं मर्म नै।।

भूधन पशुधन रोकड़ा, अै बड़ा बीणज व्यापार
गेहणा, कपड़ा, मालिया, के जांसी थांरे लार। (1)

तन माटी रो पूतलो, नित के इंरो सिणगार
'कोई' भरी जवानी में मरै, कोई खिण में हुवै बिमार। (2)

मात पिता सुत मित्रजन अथवा परण्योड़ी नार
मरती विरियां जीव ने, बोलो कुण राखणहार। (3)

जीते जी रोही हुवै, बस जश कीर्ति सत्कार
मरयां पछै मूसाण में, के राजा रंक गिंवार। (4)

विद्या मंत्र रू तंत्र अै, सब हो ज्यावै बेकार
जमदूतां री जद पड़ै सिर आय करारी मार। (5)

दुनियां रै दरबार में, है मतलब री मनुहार,
अणमोलो जीवन मिल्यो, अब काढो साचो सार। (6)

अरिहंता री शरणल्यो, सिद्धां रो ल्यो आधार
धर्म बिना इं जीव रा कुण करसी बेड़ा पार। (7)

तर्ज-ध्यावो माता शीतला

भलां पधारया इण धरती पर, प्यासी आंख्या देख ठरी
धर्म संघ ओ थाने पाकर, देखो अभिनव क्रांतिकारी।।

कुण जाण्यो हो छोटा सा थे, मोटा काम करोला
रह्या आज तक रीतां वां घड़िया ने आप भरोला
युगां-युगां री सूखी धरती ने, थे कर दी आज हरी। (1)

छोटां-छोटा आं हाथा स्यूं अगणित काम संवारया
डूब रह्या जाणे अणजाणे, वांने आप उबारया,
देख दुखी औरां ने थांरी आंख्या में ममता उभरी। (2)

नारी जग तो थांरे आभारां स्युं भारी रहसी
आज बतावां के आखिर इतिहास स्वयं ही कहसी
थांरों ले आलोक धरा पर, नभ स्यूं अै किरणां उतरी। (3)

आग लग्यां कूवे खोदे, आ जग की रही प्रणाली
थे थांरी गंभीर सूझ स्यूं अनहोनी कर डाली
थांरी ही कर्तृत्व शक्ति स्यूं, नई धारणावां उभरी। (4)

थांरे ही संकेतां पर म्हें, म्हारो जीवन वारां
बख्त पड़्या प्रण पर प्राणां री कुर्बानी कर डारां
युग-युग खेता रहिज्यो भगवन् मझधारा में पड़ी तरी। (5)

तर्ज-भलां धरा परणाई

बंधुओ! हम मिलजुल सारे आज दीवाली मनाएं
जनम-जनम के बंधनों को तोड़कर निर्वाण पाएं।
मिट जाए अज्ञान अंधरा मन मंदिर के दीप जलाएं।।

आज खुले हैं नूतन खाते, पिछले सभी हिसाब मिलाते
लक्ष्मी पूजन के मिष सारे, लक्ष्मी को हैं न्योत बुलाते
नश्वर धन को खूब कमाया, अविनश्वर धन पा दिखाएं। (1)

हर घर की हो रही सफाई, गालियों में रोशनियां छाई
हलवाई की हाट सजी है, बाजारों में बंटे बधाई
बाहर की दुनियां सजी है, भीतर की दुनियां सजाए। (2)

दीवाली त्योहार निराला, गम हर खुशियां देने वाला
गीत नृत्य की मादक धुन में, मानव को पागल कर डाला
आतिशबाजी में न जाएं, भीतरी सुख स्रोत बहाएं। (3)

महावीर निर्वाण गमन में, राम अयोध्या शुभागमन में
फसल पाक की अतुल खुशी में, दीप जले हर एक सदन में
उत्सव की मंगल बेला में, मित्रता के हाथ बढ़ाए। (4)

तर्ज-इन हवाओं में

स्वामी जी आओ एकर देख्यलो थे संघ ने
किती हुंस्यारी वरती जीवन रै जंग में।।

किता तूफान आया भीषण भूचाल हो, धीरज नहीं छोड़ी वीं बेलां हो स्वामी
सांच ने संकट एकर, झूठ ने है अंत में, जाणो पड़े हैं, बन्दी बणकर जेलां।(1)

जल जलती लपटां नांऊ हुवै डरावणी, खीरे रै नीचै दबी चिणगारी
सोरा है जीतणा पराया अै खूंखार जन, घर रे विरोधियाँ रेसंकट है भारी (2)

पौधो लगार छोड़यो चौराहे बीच में, गायां गोधांरी हरकत भारी।
आचारज एक-एक स्यूं बढ़कर हुआ संघ में, खिलती रेवै है पग-पग फूलां री क्यारी(3)

छोटी सी सीमा ने विस्तार दियो घणो, युग प्रधान गुरूवर म्हांरा
चमकायो संघ ने साक्षात इं संसार में, शिक्षा, साहित्य, सेवा साधना रै द्वारा।(4)

धरती पर चमचम करता तारा उगांवाला, नभ में फूलां री खेती दिखलास्यां,
थांरे सा नेता पाकर जीवन रे इं खेल में, मोड़ा या वेगा बाजी जीत दिखास्यां (5)

तर्ज-कर्मा री जंजीरा

दुनियां में कृष्ण कंसो की, पहचाान बड़ी मुश्किल है।।

हंसो को मिलते दाने, कौवों को असली मोती,
है कृष्ण काराघर में, कंसों की पूजा होती। (1)

असली नसल के घोड़े, लज्जित हुए खड़े हैं
खच्चर के पीछे पागल, होते बड़े-बड़े हैं। (2)

इस कोहिनूर हीरे का, मोल कौन आंके
सब कांच के चमकते, टुकड़ो की ओर झांके। (3)

असली हैं शेर वो तो, मुंह ढ़ांक कर हैं रोते
पहने नकाब गीदड़ जंगल के राजा होते। (4)

हैं संत जो भी सच्चे उनके हैं द्वार सूने
पाखंडियों के जम घट दुनियां के ये नमूने। (5)

जो बेचकर हंसी को, आंसू खरीदते हैं
ऐसे अमीर जग में, पग-पगपै सीदते हैं। (6)

तर्ज-तू निशाने... हंसो की पहचान बड़ी मुश्किल है

मरूधर म्हारो देश, म्हांने प्यारो लागै जी
मंगल-जंगल देश म्हांने प्यारो लागै जी।।

धोला-2 धोरां म्हांरा आ है उजली रेत
चमचम चमके चांदनी में ज्यू चांदी रा खेत। (1)

खोखा म्हांने चोखा लागे, खेजड़ला ज्यूं खजूर
नींवोली आम्बोली सरखी, रस देवें भरपूर। (2)

काकड़िया सांगरिया सीट्टा, फोफलिया फलियां
काचर, बोर, मतीरा मीठा, मिसरी री ड़लियां। (3)

फोग, केरिया, बथुवा, पालक, मेथी मोगरियां
चंवलेड़ी, चंदलाई, बैचे मोहनी मालणियां। (4)

उन्होले मे तपै तावड़ो, लुवां रा लपका
रातड़ली इमरत बरसावै, नींदा रा गुटका। (5)

सावण रिमझिम मेवला बरसे, भरे तलाई ढेर
खेतड़ला में भोला भाई, गावे तेजा टेर। (6)

तर्ज-माढ़

दीवाली का दिन आया है
यह सबके ही मन भाया है।।

घर घर में खुशियां छाई है
करते सब लोग सफाई है
रोशनियों ने नहलाया है। (1)

बाजार सजे हैं अति भारी
पक्वानों की सुषमा न्यारी
बिक्री ने भाव बढ़ाया है। (2)

बच्चे आतिश बाजी करते
बम्बार्ड नींद सबकी हरते
हर जन में जोश सवाया है। (3)

दीवाली के इतिहास पढ़े
जिन जिन देवों ने स्पष्ट गढ़े
हमने तो उन्हें भुलाया है। (4)

अंतर की करें सफाई हम
अंधेरा भीतर का हो कम
असली यह पर्व बताया है। (5)

तर्ज-नवकार मंत्र का ध्यान...

जय जय जग वत्सल जग बांधव महावीर भगवान
विश्वसंत! हे दिव्य चक्षु हे, जैन जगत के प्राण
विश्वसंत निर्ग्रंथ चरण में, न्योछावर ये प्राण।।

मना रहे सब आज दिवाली, दूध धुली है रजनी काली
पुलकित चेहरे हुए सभी के, मुख मुख मंगल गान। (1)

अपना कौन पराया उनके, सारा विश्व सगा था जिनके
उनकी ही हम हैं संतानें? करें विश्व कल्याण। (2)

समता का शुभ पाठ पढाया, मैत्री से सबको नहलाया
नैतिक प्रामाणिक जीवन के, लिए किया आहवान। (3)

कला अमरता की सिखलाई, मौत स्वयं ले रही विदाई
मरकर भी जो सदा अमर हैं, वह व्यक्तित्व महान्। (4)

यह निर्वाणोत्सव मन भाया, नई प्रेरणा लेकर आया
युग-युग अंकित रहे धरा पर, इसके पुण्य निशान। (5)

तर्ज-जय जय अमर

यह जैन धर्म दुनिया में सबसे निराला है
अज्ञान अंधकार में, यह एक उजाला है।।

जो राग द्वेष को जीते, उनका जिन धर्म है
सबका हित करने वाला, प्रभु पंथ निराला है। (1)

सबसे मैत्री सिखलाता, मन की गांठे खुलवा
जन्मों के दुश्मन को भी, मित्र बनाने वाला है। (2)

है दर्शन ज्ञान चरण की, आराधना यहां
आडंबर क्रियाकांड का, इसमें दिवाला है। (3)

उत्पाद विनाश ध्रौव्य की, त्रिपदी से जुड़ा हुआ
एकांत क्षणिक शाश्वत का, नहीं बोलबाला है। (4)

आग्रह विग्रह से हटकर, यह मार्ग समन्वय का
इसने ही विश्व धर्म का गुरू पद संभाला है। (5)

आत्मा सुख दुख की कर्ता, हर्ता निज कर्मों की
जो बने सत्य के राही, पग पग मंगल माला है। (6)

जिसके जीवन में सत्य अहिंसा अनासक्ति आई
वह सच्चा वीर उपासक निज पर रखवाला है। (7)

तर्ज-अफसाना...

हमें लग रहा तुम्हारा जीवन प्रयोगशाला
अध्यात्म साधना का, गुर है नया निकाला।।

इस संघ के चमन में आई बहार कैसी
हर फूल हंस रहा है, पी सोमरस निराला।

सारे जहां में ऐसा, देखा नहीं नजारा
जलता चिराग वो तू, जिसका अमिट उजाला।

है आसरा तुम्हारा, परवाह क्या किसी की
किश्ती लगी किनारे, टूटा है द्वन्द ताला।

पारस तुम्हें परसकर, कुंदन बने यह लोहा
हर सांस मांगती है प्रज्ञा पीयूष प्याला।

हमको नहीं जरूरत जो हो खुदा मेहरवां
दरवार यह तुम्हारा सचमुच खुदा से आला। 95

तर्ज-हमें रास आ गया है

शरणागत को तारो, भव से नौका पार उतारो
प्रभु जी! तुम उजले हम मेले देखो कैसे मिले है चेले।।

प्रभु जी! तुम करूणा के सिंधु, हम में है न दया का बिंदु हो। (1)

प्रभु जी! तुम निर्लोभी सच्चे, हम हैं प्रभु के लोभी बच्चे हो। (2)

प्रभु जी! तुम हो क्षमा के सागर, हम है क्रोध द्रोह के चाकर। (3)

प्रभु जी! महावीर तुम सच्चे, हम हैं कायर दिल के कच्चे हो। (4)

प्रभु जी! तुम मुक्ति के वासी, हम तो भटक रहे चौरासी हो। (5)

प्रभुजी! जन्म जयंती आई, सबने नई रोशनी पाई हो। (6)

तर्ज-प्रभु जी तुम-प्रभु जी...

मन मंदिर का दीप जलाने सद्गुरू घर में आए हैं
ज्ञान रोशनी लाए हैं
जनमों की सूखी बगिया सरसाने बादल छाए है
अमृत घट भर लाएं हैं।।

ज्ञान बिना हम भव भव भटके
अब सच्चे गुरू पाए हैं। (1)

सतसंग की पावन गंगा ने
सबके पाप बहाए हैं। (2)

खाली झोली भर लो जी भर
कल्प वृक्ष लहराए हैं। (3)

लोहा अब कंचन बन जाए
पारस ये मन भाए हैं। (4)

तड़प रहें हैं प्रभु दर्शन को
कब से पलक बिछाए हैं। (5)

तर्ज-उड़ उड़ रे म्हारा...

दयानीधि आज जग का इस तरह काया पलट कर दो
मिटाकर वेदना सारी, अमर आनंद से भर दो।।

बुझे हैं दीप सुख के जो सदा घर-घर जला करते
उन्हें दे स्नेह का फिर दान, इस अंधेर को हर दो। (1)

सुप्त है ज्ञान का बल, जो यहां जागृत सदा रहता
जरा झकझोर कर उसको प्रभो! उन्निद्र अब कर दो। (2)

उगलता है हलाहल युग बना ऐसा बुराई का
भलाई की बहे सरिता वहीं पीयूष तुम भर दो। (3)

पड़े बिखरे कभी से, ये सभी धागे सुझावों के
उठाकर गूंथने में ही, जरा सहयोग तुम कर दो। (4)

बढ़ाए आत्मबल हम प्रेरणा पाएं तुम्हारे से
डटे कर्त्तव्य वेदी पर, यहीं तुम विश्व को वर दो। (5)

तर्ज-ख्यालों में

आज मिलजुल कर हमें उत्सव मनाना चाहिए
खुशियों के पावन प्रभात में गीत गाना चाहिए।।

इस दुनियां को खुलकर अपना भाग सराहना चाहिए
इस दुनिया को चार चांद से नभ चमकाना चाहिए। (1)

धन्य वह धरती कि जिसने रत्न धरती को दिया
उस ममतामयी मां का पल-पल मोल बढ़ाना चाहिए। (2)

धन्य है वह देश जिसमें संत तुमसे घूमते
तन मन जीवन इन चरणों में भेंट चढ़ाना चाहिए। (3)

बन स्वयं आलोकमय आलोक जग को बांटते
इन उजली किरणों से अंतर दीप जलाना चाहिए। (4)

मुदित है यह संघ सारा धन्य छाया के तले
युगों-युगों तक हमें यहीं नेतृत्व पाना चाहिए। (5)

तर्ज-कव्वाली

तुम दयालु, दीन हम, तुम देव हम पुजारी
तुम कृपा के सिंधु, हम हैं बूंद बस तुम्हारी।।

ज्ञान के निधान तुम, हम निरे अबोध हैं
वीतराग तुम प्रभु, हम राग द्वेष धारी। (1)

तुम सदा आनंद हो, हैं दुख दग्ध हम सभी
इस विघ्नमय संसार में, बस तुम हो मंगलकारी। (2)

तुम अमर हम मृत्यु के, आवर्त्त में हैं घूमते
तुम शरणदाता हमारे, हम हैं शरणधारी। (3)

नाथ तुम अनाथ के, अनाथ हम भिखारी
हाथ शीष पर धरो, होगी कृपा तुम्हारी। (4)

तर्ज-हो प्रसिद्ध पात की

देव मेरे हैं कहां, मैं ढूंढ ढूंढ हारी
आंख क्या देखे उसे, जो हृदय गगन बिहारी।।

खोजते हैं मंदिरों में, दिव्य रूप को सभी
है समाहित स्वयं में वह मूरत मोहनगारी। (1)

देख ली धरती समूची, और यह आकाश भी
है नहीं अमिताभ का, आभास मंगलकारी। (2)

तीर्थ सारे घूम आए, ग्रंथ पढ-पढ के थके
अर्चना होगी न भगवन्, पाप तारन हारी। (3)

तर्ज-हो प्रसिद्ध पात की

जन्मदिन पर पूज्यवर है संघ की शुभ कामनाएं
हो चिरायु शासना, युग पुरूष हम तुमको बधाएं।।

रूप तेजस्वी तुम्हारा, है गजब वात्सल्य धारा
सरल, शीतल, शांत सौम्य स्वभाव मस्तक हम झुकाएं। (1)

धन्य धरती, धन्य नभ है, आपको पा धन्य सब हैं
आपके अवतरण दिन पर, आज मंगल गीत गाएं। (2)

आज का मौसम सुहाना, प्रकृति का हर कण लुभाना
सभी को लगता कि पल पल फूल बरसाती दिशाएं। (3)

नाम कौशल से कमाया, विश्व में सम्मान पाया
हो अमर कर्तृत्व जग में, यही हम सब की दुआएं। (4)

आप चिंतामणि हमारे, कल्पतरू सम हो सहारे
कामधेनु समान हो तुम और क्या-क्या हम बताएं। (5)

तर्ज-वंदना के इन स्वरों में

गुरूवर नवरचना दिखलाई, सब कुछ नए नजारे
हम 'शुभ' आरती उतारें।
आज महोत्सव है मन भाया सारी सृष्टि संवारे
हम 'शुभ' आरती उतारे।।

मिलें आपसे गुरूवर हमको, अपना भाग्य सराएं,
धर्म दिवाकर! घोर तिमिर में, दिव्य रोशनी पाएं
दुर्लभ ऐसी अद्‌भुत सूरत, ढूंढ ढूंढ कर हारे। (1)

जड़ता की जंजीरें तोड़, नया आकाश दिया है,
सबको एक नजर से देखा, सचमुच धन्य किया है
सत् साहित्य पठन की दे, प्रेरणा आपके नारे। (2)

महावीर का प्रतिनिधित्व करने धरती पर आए
जाति पंथ की घेरा बंदी में न, उलझने पाए
डूब रहे भवसागर में लोगों को, दिए किनारे। (3)

कालजयी बन युगों युगों तक सबको राह दिखाना
सबकी शुभ कामना साथ है, परम लक्ष्य को पाना
दे आतंकवाद से छुटकारा उपदेश तुम्हारे। (4)

तर्ज-कितने कितने जन्म गवांए

ऋषिराज आपके जन्मोत्सव पर खुशी मनाएं हम
बधाई गीत गाए हम।
पंच षष्ठी वें जन्म दिवस पर तिलक लगाएं हम
बधाई गीत गाएं हम।।

शुभ भावों की करें आरती, मुद मंगलमय माला
युगनायक इस घोर अंधेरे में, कर दिया उजाला
पा नेतृत्व आपका अपना भाग्य सरहाएं हम। (1)

बालक सी निश्छलता और सरलता सबको भाएं
देख सहजता कोमलता, सब सच्चे संत बताए
कलियुग में सतयुगी संत को, शीष नवाएं हम। (2)

देश विदेशों में जाकर, अपना कर्तृत्व दिखाया
जैन धर्म का नाम किया रोशन सबने बतलाया
कैसी अद्‌भुत प्रवचन शैली बलि बलि जाएं हम। (3)

मानसरोवर अष्टापद कैलाश गिरी पर जाकर
बना दिया इतिहास नया फिर जैन ध्वज फहराकर
क्या लद्‌दाख लेह यात्रा की छटा दिखाएं हम। (4)

युग युग जीओ महाप्राण! धरती का पाप मिटाने,
कितने लोग तड़पते हैं सान्निधय आपका पाने,
सबका कष्ट हरो गुरूवर बस इतना चाहे हम। (5)

तर्ज-वीर को वंदन

धरती महक उठी, अंबर ने नाद किया
जय जयकार हुआ जब तुमने संन्यास लिया।।

पा करके यह विश्व धन्य हुआ आंगन,
युगनायक तुम को, पाधन्य है यह जीवन।
धन्य है वह जननी जिसने यह रत्न दिया। (1)

बगिया में फूल खिला, सौरभ सबने ली,
गम को पी खुद ने खुशियां जग को दी
शंकर वही बना जिसने जहर पिया। (2)

हिंदुस्तान में जो चांद उगा उज्जवल,
शीतलता बख्शे जग को वह पल पल
वह जीवन ही जीवन जो जग के लिए जिया। (3)

छोटी कुटिया में दीप उजला,
सारे ही जग को नव आलोक मिला,
वह ज्योतिर्मय जिसने जलना सीख लिया। (4)

गाली के बदले जो वत्सलता देते,
पत्थर की खाकर जो फलदायी रहते,
कौन सुखाए उसे फलना सीख लिया। (5)

शत-शत अभिवंदन लो, भगतों का वंदन लो साल हजार जीओ
हरते जग क्रंदन, सब दुख दूर हुए जिसने तेरा नाम लिया।
यह श्रमणी संघ खड़ा जिस पर तुमने नाज किया। (6)

तर्ज-वृज के नन्दलाल

प्रभो आपके शुभागमन से आश्रम है गुलजार
है स्वागत सौ सौ बार
आज दशहरा और दिवाली सारे ही त्यौहार
है खुशियों के अम्बार।।

जब से आप विदेश पधारे आश्रम सूना लगता
सब कुछ था पर बिना आपके जोश न पूरा जगता
वेजानों में जान आ गई हुआ रक्त संचार। (1)

मानवता के अमर मसीहा, धन्य आप का जीवन
महावीर के संदेशों से किया, जगत को पावन
सुन पुकार भक्तों की पहुंचे, सात समुद्रो पार। (2)

सिंचन दो इस बगिया को, जिसमें है पौध लगाई
इन अबोध बच्चों में भगवन् नई रोशनी आई
भूल नहीं सकते ये प्रभु का, जन्म-जन्म उपकार। (3)

युगों युगों तक इस धरती का पाप हरो हे त्राता
स्वस्थ रहे तनु रत्न आपका प्रतिपल हो सुख साता
सब पर करूणा रस बरसाओ करूणा के अवतार। (4)

तर्ज-सुनो-सुनो ए दुनिया वालो

स्वागत गीतिकाएं

महामनीषी आपका स्वागत सौ सौ बार है
पलकें बिछाएं कर रहे, कब से सब इन्तजार है।।

आपका शुभागमन अपने प्यारे देश में
देख पुलकित हैं सभी मौसम भी गुलजार है। (1)

खूब किया विदेशों में नाम रोशन देश का
भूले हुए समाज को बख्शे सत्संकार है। (2)

ऋषिवर! आपके चरण जिस धरती पर जा टिके
बंजर भूपर भी वहां फलित हुए सहकार हैं। (3)

आप पर टिकी नजर, सारे देश जहान की
पथ भूले इन्सान का, संत ही आधार है। (4)

आपके विकास का सिलसिला सदा चलें
पुण्य दर्शन आपके, सबसे बड़ा त्यौहार है। (5)

तर्ज-स्वतन्त्र

पूज्य गुरूदेव आए हैं आज खुशियां मनाएं हम
नया माहौल लाए हैं सभी मिलजुल बधाएं हम।।

आज का दिन सुहाना है, घड़ी पल भी बड़े मंगल
देख दीदार गुरूवर का, नहीं फूले समाएं हम। (1)

सजाएं थाल पूजा का, उतारें आरती मिलजुल
पखारें चरण कमलों को, कि स्वागत गीत गाएं हम। (2)

संभालो पूज्यवर अपना, धर्म परिवार यह सारा
सुदामा की तरह ये चार, चावल कण चढ़ाएं हम। (3)

आज वीरान जंगल में, नई रौनक नया जीवन
कोकिला के स्वरों में आज, पंचम स्वर मिलाएं हम। (4)

युगों युग इस धरा का तुम, करो कल्याण हें ऋषिवर
आपकी छत्र छाया में, नया आलोक पाएं हम। (5)

तर्ज-जमाना है दिखावट का

संघ समंदर की ये लहरें, प्रभु के पांव पखार रहीं
हंस-हंस कर जीवन वार रही
गण मंदिर की दीप शिखाएं तुम को सतत निहार रही
है जगमग ज्योति उभार रही।।

पुलकित हैं धरती का कण-कण नभ में उजियाला छाया,
भरी उमंगे जड़ चेतन में, देख तुम्हारी यह माया,
इस उत्सव पर अमल आरती हम सब आज उतार रही। (1)

मानवता की सेवा हित यह जीवन न्यौछावर सारा
गूंज रहा प्रत्येक दिशा में भगवन् तेरा ही नारा
विश्व बधाए हम क्या गाएं केवल शब्द उचार रहीं। (2)

मिटे विषमता जन-जन की अन्याय और शोषण जग से,
समता का वह पाठ पढ़ाते मानव मंदिर के मग से,
आशा भरी नजर तुम पर बस सारी दुनियां डाल रहीं। (3)

नए-नए आयाम खोलकर, मानवता की सेवा की,
दे समाज को नया मोड़, जड़ जनता की जड़ता हर ली,
समयोचित निर्देशन पा नारी निज रूप निखार रही। (4)

युगों युगो इस धरती का कल्याण, करो हे युग नेता,
महावीर के शासन की, संभाल करो हे दृढ़ चेता,
निष्कारण यह करूणा पतितों को है पार उतार रहीं। (5)

तर्ज-हम भारत की...

घर आए भगवान, अब खुशियाँ मनाओ,
सफल हुए अरमान, मन मंदिर सजाओ।।

घर घर घी के दीप जले हैं
आए बड़े मेहमान। (1)

घर आंगन सब लगे सुहाने
जो लगते वीरान। (2)

सूख गया था जीवन का रस
भर दिए फिर से प्राण। (3)

विश्व मोहिनी सा क्या जादू
सबका इधर ही ध्यान। (4)

अविनय माफ करो गुरूवर जी
हम लघु आप महान्। (5)

छोड़ हमें यों नहीं जाओगे
कर दो यह फरमान। (6)

तर्ज-स्वतन्त्र

आओ पधारो योगीराज हम स्वागत में हाजिर
पल पल हम देख रहे थे, बाट कब आएंगे गुरूवर।।

आश्रमवासी हर्षाएं, गुरूवर के दर्शन पाएं
श्रद्धा के फूल चढ़ाएं, दिल को कैसे दिखाएं। (1)

यद्यपि यात्रा थी छोटी पर इसमें बड़ी कसौटी
पुण्यात्मा के हर कदम निधान, लगी न नजरें खोटी। (2)

कलकत्ता आप पधारे, प्यासे भगतों को तारे
हम सारे थे मन मारे गुरूवर तो सबके प्यारे। (3)

अब तो विश्राम कराओ, सेवा का समय दिराओ
बच्चों की तरफ दिखाओ यात्रा कुछ ठहर कराओ। (4)

तर्ज-टाई लगा के

गुरू चरणों में आए हैं, दर्शन कर हर्षाएं हैं
सूखे सर सरसाए हैं, हंसती सभी दिशाएं है।
बद्धांजलि वंदन करते, वंदन कर हम अध हरते
पूछ रहे हम क्षेम कुशल,उत्तर दो प्रभुवर निश्छल,
मन में आ आतुरताएं हैं।।

गुरूवर से हम दूर थे, करते क्या मजबूर थे
आज मिलें पावन दर्शन, बरस रहे सौ सौ सावन, चलती सुखद हवाएं है। (1)

आकुल व्याकुल प्राण थे, देह बने पाषाण से
आई फिर से जान है, फलें सभी अरमान है, मंजिल दे रही राएं हैं। (2)

मीरा के तुम श्याम हो, भिलनी के तुम राम हो
फले मनोगत कामना, यही हमारी भावना, जीवन धन मन भाए हैं। (3)

रहो धरा पर आर्य अमर, यहीं एक हम सबका स्वर,
जिधर धरो तुम पुण्य कदम, उधर बढ़ेंगे हम हरदम, ये लो प्राण लताएं है। (4)

तर्ज-मां आवाज

जीवन तरी के त्राण हो, जन-जन के प्राण हो,
तुम ही अनैतिक विश्व के राम बाण हो।।

पलकें बिछाए तेरी प्रभो, राहें निहारती
पल-पल में नाम तेरा रटती यह भारती
आए हो कैसे देर से लो समाधान दो। (1)

बरसा है मेघ कब कहो, चातक की चाह पर
पिघलें हैं देव क्या कभी, भक्तों की आह पर,
निर्मोही की रीत यह तुम ही प्रमाण हो। (2)

उज्जवल चरित्र से प्रभो जग को उजालते
पतितों को तुम सदा रहो सत्पथ में ढाल ते
पथ से भटकते मानवों को बोधि दान दो। (3)

करते रहें हम नित प्रभो, तेरी आराधना
करते रहें सदा सुखद जीवन की साधना
युग-युग तुम्हारी शासना पर अभिमान हो। (4)

तर्ज-चवदमी के

पावन पल ये बहुत ही भले हैं प्रभु दर्शन. के सपने फले हैं
आशा के मंदिर में दीपक जले हैं।।

रोशन हुआ है मन का अंधेरा, अमृत बना है हलाहल
जीवन के सूखे सरोवर में, मीठा पानी भरा है छलाछल
दिल की उदासी मिटी दुःख घटे हैं। (1)

दर्शन से पलकें पावन हुई हैं, खुशियों से मानस भरा है
बदला है मौसम, बदली हवाएं, सोने री नभ ओ धरा है
उजड़े से उपवन के पादप फले हैं। (2)

चरणों में भगवन सादर सौ-सौ नतशीष कर- वद्धवंदन
क्षेम कुशल मंगल तो तुम्ही हो, आरोग्य पाओ हृदय धन
मंगल शरण से कल्मष घुले हैं। (3)

कल्याणदायी साया तुम्हारा, युग-युग मिलें कामना यह
जन जन के नेता! विश्व विजेता, बढ़ते रहो भावना यह
भक्तों को प्रिय भगवान मिलें है। (4)

तर्ज-आरी सरवी तोय...

गुरूवर आए खुशियां लाए
आश्रम का कण-कण पुलकित
है दिव्य दिवाली आज उदित,
ये पेड़ लताएं भी हर्षित।।

अपने घर में अपनों द्वारा
अपने गुरू का अभिनंदन
भावों की है भव्य आरती
श्रद्धा का शीतल चंदन
आज आपके शुभागमन से
मानों प्रकृति भी परिचित। (1)

आप विदेश पधारे सारा
आश्रम सूना लगता था
हमको क्या नन्हे मुन्ने बच्चों
को गम से भरता था।
आसमान में आज सुनहरा
सोने का है सूर्य उदित। (2)

दर्शन प्रवचन खातिर भारतवासी
निशि दिन तरस रहे
आप पराई धरती पर जा
अमृत बरसा बरस रहे
आज आपकी सूरत
लख कर सारी जनता आनन्दित। (3)

युग-युग इस धरती का प्रभु
कल्याण करो यह अभिलाषा
महामनीषी देव आपसे
युग को बड़ी-बड़ी आशा
संघ समर्पण करे स्वंय को
चरणों में सब के सिर नत। (4)

तर्ज-सुण सुण रे म्हारा

आज अयोध्या में श्री राम
सौ-सौ स्वागत अपने धाम।।

देश विदेशों में जाकर
कीर्ति पताका फहराकर
अब मातृ भूमि में लो विश्राम। (1)

संघ आपका है साल्हाद
गुरू दर्शन का मिला प्रसाद
दिवस आज का है अभिराम। (2)

भेंट चढ़ाएं क्या गुरूवर
चरणों में सब न्यौछावर
लो अपना यह विभव तमाम। (3)

पुलकित है गुरूकुल परिवार
देख देव का दिव्य दीदार
नतमस्तक सब करें सलाम। (4)

वाणी में अद्भुत जादू
निर्मल निःस्पृह हैं साधु
कर दिखलाए क्या क्या काम। (5)

युगों धर्म का करो प्रचार
मानवता के हे श्रृंगार!
यात्रा हो प्रभु की अविराम। (6)

तर्ज-रघुपति राघव

आओ पधारो गुरूदेव बेहद खुशियां छाई
आश्रम के कण-कण में उल्लास आज दीवाली आई।।

स्वागत में हैं सब हाजिर
बाहर भीतर का परिकर
देते बधाई अपने देव को क्या छटा दिखाई। (1)

कितना हम गौरव गाएं
क्या-क्या महिमा बतलाएं
देश विदेशों में जा भारत की संस्कृति चमकाई। (2)

मुनि का जीवन अपनाकर
भारत को राह दिखाकर
जाओगे सात समुद्रों पार, कैसी नियति बनाई। (3)

युग युग उपकार कराओ,
जीवन का सार बताओ,
कैसी मनमोहक मूरत आपकी सबके मन भाई। (4)

तर्ज-टाई लगा के

सौ-सौ स्वागत, लो अभ्यागत खुशियों के हम दीप जलाएं
मीरा की सुध लेने चलकर द्वार खुद भगवान आए।।

श्रद्धांजलि सब करते वंदन, क्षेम पूछते हैं जीवन धन
अंतर लोचन तृप्त हुए हैं, निरख तुम्हारा रूप चिरन्तन
करते थे इंतजार कब से हम सभी पलकें बिछाएं। (1)

जब से हमको छोड़ पधारे, समय बिताते गिनगिन तारे
कभी नींद में कभी जागते, आते रहते स्वप्न तुम्हारे
मन भाई सूरत के दर्शन पाकर सारे दुःख बिलाए। (2)

सूरज में सौ गुनी चमक है, रही दिशाएं आज पुलक है
पवन दे रहा मीठी सौरभ, जब से प्रभु की मिली झलक है
चहल पहल है घर-घर गलियां हर मुख मंगल गीत गाएं। (3)

महावीर सी समता तुम में, और बुद्ध सी ममता तुम में
ईशू सा बलिदान बताता, महापुरूष की क्षमता तुम में
गुरू गोविंद मुहम्मद गांधी का पावन संदेश लाए। (4)

मानवता की सेवा कर तुम अपने श्रम से बने विजेता
अपने और पराए सब ही मान रहें हैं तुमको नेता
'तुम सा' पावन पुरूषोत्तम पा विश्व ना फूला समाए। (5)

तर्ज-इन हवाओं में

उतारें आरती नवदीप
स्वागत में जलें घर-घर
फूल बरसा रहे सुर नर
खुशी के गीत अधरों पर।

धन्य है आज का दिन
और मंगल मुहूर्त्त शुभ पल हैं
देख गुरूदेव का दीदार
सब में नई हलचल है। (1)

पूछते कुशल मंगल
आपका करबद्ध हम सारे
पधारे देर से इंतजार
कर गुरूदेव हम हारे। (2)

पड़ा बेजान आश्रम और
ये मासूम थे बच्चे
आ गई जान लख प्रभु को
आपके भक्त ये सच्चे। (3)

धर्म यात्रा तुम्हारी
सच नया इतिहास सरजेगी
विश्व की हस्तियों में
आपका शुभ नाम कर देगी। (4)

युगों युग आप जन कल्याण
प्रभु करते रहें भूपर
आपकी छत्र छाया में
फलें फूलें सतत गुरूवर। (5)

तर्ज-ख्यालों में किसी

जब तुमने आकर दस्तक दी
इस दुनियां के दरवाजे पर
युगों युगों से सोया मानव
जाग उठा अंगडाई लेकर।।

जब से जलती यह मशाल
थामी है तुमने इन हाथों में
दुनियां का अंधियारा भागा
राह मिली सबको रातों में। (1)

जब से वीणा का स्वर छेड़ा
गूंगों को आवाज मिली है
अंधों को दी दृष्टि तुम्हीं ने
मूढ़ो की जड़ता पिघली है। (2)

गौरव हो तुम इस धरती के
और गगन के दिव्य सितारे
शांति दूत! हो उम्र हजारी
हमराही हम बने तुम्हारे। (3)

भारत मां के हे सपूत तुम
सात समुद्रों पार गए
धर्म ध्वज फहराने जग में
कदम ले रहे नए नए। (4)

साल गिरह हो तुम्हें मुबारक
क्षेम कुशल मंगल मय जीवन
मिले कामयाबी पग-पग पर
न्यौछावर कुदरत का कण-कण। (5)

कविता

आपका स्वागत है ऋषिराज
अपने घर में आज।।

आज सभी अरमान फले हैं
घर-घर घी के दीप जले हैं
सोने री सूरज की आभा
पुलकित सकल समाज। (1)

देश विदेशों में जा-जा कर
मानवता का पाठ पढ़ाकर
सबके ही श्रद्धेय बने हो
तुम पर हमको नाज। (2)

वाणी में कैसा सम्मोहन
शास्त्रों का कर कर नित दोहन
प्रज्ञा पुरूष बने हो ऋषिवर
अद्‌भुत है अंदाज। (3)

आप पधारे रोनक लाए
आश्रम के बच्चे हर्षाए
देख आपकी दिव्य प्रभा को
लगे दीवाली आज। (4)

जिओं हजारों साल धरा पर,
नभ धरती सागर न्यौछावर,
वरो सफलता प्रभु पग-पग पर,
जन-जन की आवाज। (5)

तर्ज-स्वागत गीत

आज आपके शुभागमन से सारा आश्रम पुलकित है
कण-कण में चेतनता आई हम क्या सब आल्हादित हैं।।

स्वागत तो होता औरों का, आप यहां के मालिक हैं
नहीं ज्ञान हमको तो कुछ भी, हम सब तो नाबालिक है। (1)

दर्शन पाकर सबके मन में बेहद खुशियां छाई हैं
कितने भाग्यवान हैं, हम घर बैठे गंगा आई है। (2)

जहां राम है वहां अयोध्या क्या बोम्बे क्या कलकत्ता
देख आपकी पुण्याई को उमड़ पड़ी सारी जनता। (3)

युग युग इस धरती का गुरूवर, पाप हरो उद्धार करो
जिओ हजारों साल हमारी, आशाओं के कुंभ भरो। (4)

तर्ज-अयि परमात्मन शुद्ध

गुरूवर आशीर्वाद दो, शरण में आए हैं
स्वीकारों श्रद्धा की, भेंट हम लाए हैं।।

प्रभो हिमालय सी ऊंचाई, सागर सी गहराई
गंगा यमुना सी पावनता, सबके ही मन भाई। (1)

गुरू ब्रह्मा, गुरू विष्णु महेश्वर, गुरू की महिमा भारी
मिलें आपसे गुरूवर हमको बार बार बलिहारी। (2)

चिंतामणि सा तेज तुम्हारा, कल्प वृक्ष सी छाया
कामधेनु सम सबके त्राता, कैसी अद्भुत माया। (3)

नूतन तेरापंथ आपकी, जग को देन निराली
मानव मंदिर मिशन सभी के खातिर अमृत प्याली। (4)

युगों-युगों अज्ञान अंधेरा दूर करो हे दिनकर
देश विदेशों जैन धर्म को फैलाओ यायावर। (5)

लेखक वक्ता कवि व्याख्याता, बालक सी निश्छलता
नहीं किसी को दुखी देख सकते कैसी कोमलता। (6)

तर्ज-हर चीज यहां नकली...

मानव मंदिर मिशन सभी का इसका धवलोत्सव प्यारा
हो इससे कल्याण सभीका, है यह जन जन का नारा।।

इसमें पूजा नहीं पंथ की, संत सभी पूजास्पद हैं
देव गुरू और धर्म श्रेष्ठतम, इनका ही ऊंचा कद है। (1)

धर्म और अध्यात्म साधना से होता कल्याण सदा
संप्रदाय के घेरों में बंध कर कट जाते यदा कदा। (2)

सबकी इज्जत करना सीखो, गुरूवर की शिक्षा सबको
मिले यही संस्कार सभी को, लक्ष्य बनाएं हम इसको। (3)

इन नन्हें मुन्ने बच्चों को जीवन का आधार मिला
इसीलिए इन सबका चेहरा रहता हरदम खिला खिला। (4)

चिरंजीवी गुरूदेव हमारे हो मंगल कामना करें
गुरूवर के आशीर्वर से हम अपने खाली कलश भरें। (5)

जय जय घोष करें सब मिलकर, गुरूवर सबके त्राता हैं,
ऐसे गुरू दुर्लभ इस युग में सबके भाग्य विधाता हैं। (6)

तर्ज-अयि परमात्मन शुद्ध चिदात्मन

मनाओ-मनाओ मनाओ खुशियां
सिल्वर जुबली उत्सव आज मनाओ खुशियां
बजाओ बजाओ बजाओ शंखियां
ऐसे गुरू पर नाज सभी बजाओ संखियां।।

युग युग जीओ इस धरती पर मंगल कामना
मिलें सदा आशीर्वर यह जन-जन की भावना
चरणों में सब शीश झुकाओ गाओ रसिया। (1)

कितनों का उपकार किया है करूणा के अवतार
बुद्ध और महावीर मानो हो गए साकार
कोयल कूके उपवन में सजाओ बगिया। (2)

गुरूवर के सिर पर स्वाभाविक धरा हुआ है ताज
क्या हम भेंट चढ़ाएं है यह दुनियावी रिवाज
नभ धरती को गीतों से गुंजाओ सखियां। (3)

मानव मंदिर मिशन सभी का लो इसका आधार
इसकी शरण मिली है जिसको उसका बेड़ा पार
नव्य भव्य यह मिशन इसे परखे सब दुनियां। (4)

तर्ज-बता दे-बता दे किशना

जन्म-उत्सव पर

तेरह बसंत होते होते, जीवन को नव आयाम दिया
घर की सीमा से बाहर, आ मानवता हित संन्यास लिया।।

किसने सोचा था यह बालक, जा सात समुद्रों पार कभी
भारत की पावन संस्कृति को, फैलाएगा लख दंग सभी
अष्टापद मान सरोवर पर जा, जैन ध्वज फहराया था
लद्दाख लेह की यात्राओं का, नव इतिहास बनाया था
जिस ओर बढ़े ये कदम, वहाँ के जन-जन ने सम्मान किया।

हे सरस्वती के वरद पुत्र, तेरा हर अक्षर महाकाव्य
अनुभव से निकली एक एक, पंक्ति है कितनी नव्य भव्य
तुम जन्मजात हो शांति प्रिय, संघर्ष विवाद न किया कभी,
तूफान अनेकों आए हैं, पर सहजभाव से सहे सभी
कितनी उदारता है तुममें देकर अमृत है गरल पिया।

तुम हो निष्पक्ष और निस्पृह, इच्छा आकांक्षा कभी न थी
दुर्लभ है ऐसा संत जगत में, गहराई की कमी न थी,
कर दिया किसी न भला बुरा, कब राग रोष करते देखा
इसका ही नाम साधुता है शब्दों में क्या लेखा जोखा
निर्लिप्त और निर्मल जीवन ही ऐसा तुमने सदा जिया।

यह जन्म जयन्ती सत्तरवीं हम मना रहे सोत्साह प्रभो
इस पावन अवसर पर तुमको, दे रहे बधाई सभी विभो
युग युग नेतृत्व तुम्हारा हमको देते रहना है ऋषिवर
आशीर्वर मिलता रहे सदा सान्निध्य आपका अतिसुखकर
क्या कला तुम्हारे में अद्भुत है फटे दिलों को सदा सिया।